चरक संहिता परिचय

उपदेष्टा: पुनर्वसु आत्रेय

लेखक: अग्निवेश

प्रतिसंस्कर्ता: चरक

सम्पूरक: दृढ़बल

ग्रन्थ संरचना:

वर्तमान काल में उपलब्ध चरक संहिता में कुल 8 स्थान, 120 अध्याय एवं सम्पूर्ण विषय 9295 सूत्रों में वर्णित है। इन 120 अध्यायों में से 41 अध्याय (चिकित्सास्थान के 17 अध्याय, सम्पूर्ण कल्प स्थान एवं सिद्धि स्थान) को दृढ़बल ने सम्पूरित किया।

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	30	1952 सूत्र
2	निदानस्थान	8	247 सूत्र
3	विमानस्थान	8	354 सूत्र

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
4	शारीरस्थान	8	382 सूत्र
5	इन्द्रियस्थान	12	378 सूत्र
6	चिकित्सास्थान	30	4904 सूत्र
7	कल्पस्थान	12	378 सूत्र
8	सिद्धिस्थान	12	700 सूत्र
	8 स्थान	120 अध्याय	9295 सूत्र

सूत्रस्थान के 30 अध्यायों को 7 चतुष्क एवं 2 संग्रहाध्यायों में विभाजित किया गया है। यथा:

सूत्रस्थान के अध्याय	चतुष्क
1 से 4 अध्याय पर्यन्त	भेषज चतुष्क
5 से 8 अध्याय पर्यन्त	स्वस्थ चतुष्क
9 से 12 अध्याय पर्यन्त	निर्देश चतुष्क
13 से 16 अध्याय पर्यन्त	कल्पना चतुष्क
17 से 20 अध्याय पर्यन्त	रोग चतुष्क
21 से 24 अध्याय पर्यन्त	योजना चतुष्क
25 से 28 अध्याय पर्यन्त	अन्नपान चतुष्क
29 एवं 30 अध्याय	संग्रह अध्याय

ग्रन्थ वैशिष्ट्य:

वर्तमान काल में उपलब्ध चरक संहिता की भाषा गद्य-पद्य मिश्रित

है। इस ग्रन्थ का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'कायचिकित्सा' है। पुनर्वसु आत्रेय ने अपने अग्निवेशादि शिष्यों को कायचिकित्सा प्रधान विषयों का उपदेश दिया था।

टीका:

चरक संहिता पर संस्कृत भाषा में रचित टीकायें निम्न हैं:

- चरकन्यास: भट्टारहरिचन्द्र
- चरकपञ्जिका: स्वामिकुमार
- निरन्तरपदव्याख्या: जेज्जट
- आयुर्वेददीपिका: चक्रपाणिदत्त
- तत्त्वचन्द्रिका: शिवदास सेन
- जल्पकल्पतरु: गंगाधर राय
- चरकोपस्कार: योगीन्द्रनाथ सेन
- चरक प्रदीपिका: ज्योतिषचन्द्र सरस्वती

प्रकाशन:

चरक संहिता का अरबी एवं फारसी भाषा में अनुवाद 8 वीं शती के आस पास हुआ था। 19 वीं एवं 20 वीं शती में चरक संहिता के कई महत्त्वपूर्ण संस्करण प्रकाशित हुये। यथा:

- श्रीहरिनाथ विशारद ने 1892 में कलकत्ता से सूत्रस्थान एवं विमानस्थान के कुछ अंशों का प्रकाशन किया।

- कविराज देवेन्द्रनाथ सेन एवं उपेन्द्रनाथ सेन, कलकत्ता से 1897 में
- जीवानन्द विद्यासागर, कलकत्ता से 1896 में
- कविराज गंगाधर राय विरचित जल्पकल्पतरु व्याख्या तथा चक्रपाणिदत्त विरचित आयुर्वेद दीपिका व्याख्या सहित एक संस्करण 1868 में कलकत्ता से तथा एक संस्करण 1877 में बरहमपुर से प्रकाशित हुआ।
- यादवजी त्रिकमजी आचार्य द्वारा सम्पादित एक संस्करण निर्णयसागर प्रेस, बंबई से 1941 में प्रकाशित हुआ।

20 वीं शती में चरक संहिता पर हिन्दी भाषा में कई महत्त्वपूर्ण अनुवादों एवं टीकाओं का प्रकाशन हुआ। इनमें मुख्य हैं:

- श्रीकृष्णलाल विरचित व्याख्या
- रामप्रसाद शर्मा विरचित व्याख्या
- जयदेव विद्यालंकार विरचित व्याख्या
- अत्रिदेव विद्यालंकार विरचित व्याख्या
- विद्योतिनी व्याख्या: काशीनाथ पाण्डेय एवं गोरखनाथ चतुर्वेदी
- वैद्यमनोरमा व्याख्या: डॉ. विद्याधर शुक्ल एवं डॉ. रविदत्त त्रिपाठी
- चरकचन्द्रिका व्याख्या: डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

इसके अतिरिक्त कतिपय विद्वानों ने चरक संहिता का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। इनमें प्रमुख है:

- अविनाशचन्द्र कविरत्न, कलकत्ता से (1891 में)
- आचार्य प्रियव्रत शर्मा
- डॉ. आर.के. शर्मा एवं वैद्य भगवान दाश
- डॉ. के.आर. श्रीकण्ठमूर्ति

चरक संहिता का एक संस्करण अंग्रेजी एवं अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के साथ 1949 में जामनगर से प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त मराठी, गुजराती, तामिल, बंगाली आदि कई क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ।

• • •

सूत्रस्थान

1. दीर्घञ्जीवितीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या – 140

आयुर्वेदावतरण (Descent of Ayurveda)

- ब्रह्मणा हि यथाप्रोक्तमायुर्वेदं प्रजापतिः।
  जग्राह निखिलेनादावश्विनौ तु पुनस्ततः।।
  अश्विभ्यां भगवाञ्छक्रः प्रतिपेदे ह केवलम्।
  ऋषिप्रोक्तो भरद्वाजस्तस्माच्छक्रमुपागमत्।। च.सू. 1.4–5
- अथ मैत्रीपरः पुण्यमायुर्वेदं पुनर्वसुः।
  शिष्येभ्यो दत्तवान् षड्भ्यः सर्वभूतानुकम्पया।।
  अग्निवेशश्च भेलश्च जतूकर्णः पराशरः।
  हारीतः क्षारपाणिश्च जगृहुस्तन्मुनेर्वचः।। च.सू. 1.30–31

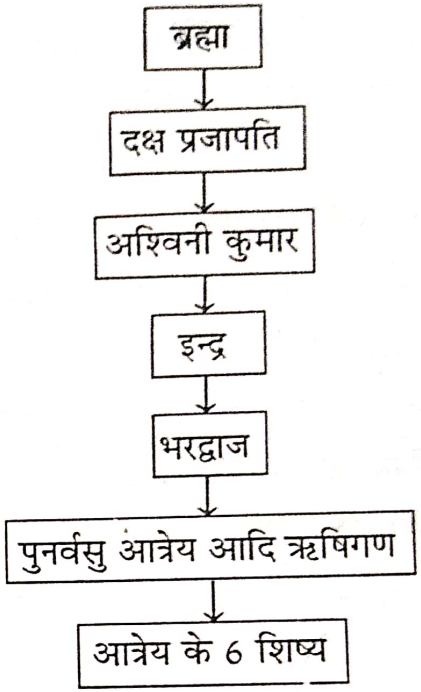

त्रिसूत्र / त्रिस्कन्ध (Three principles)

- हेतुलिंगौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्।
  त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुबुधे यं पितामहः।। च.सू। 1.24

त्रिसूत्र (Three principles)		
हेतु (Cause)	लिंग (Symptoms)	औषध (Treatment)

षड् पदार्थ (Six substances - as per sage Charaka)

- महर्षयस्ते ददृशुर्यथावज्ज्ञानचक्षुषा।
  सामान्यं च विशेषं च गुणान् द्रव्याणि कर्म च।।
  समवायं च तज्ज्ञात्वा तन्त्रोक्तं विधिमास्थिताः। च.सू. 1.28-29

षड् पदार्थ (Six substances)		
सामान्य (Generality)	विशेष (Particularity)	गुण (Quality)
द्रव्य (Substance)	कर्म (Action)	समवाय (Inherence)

अष्टविध ज्ञान देवता (Jnana devata)

- अथाग्निवेशप्रमुखान् विविशुर्ज्ञानदेवताः।
  बुद्धिः सिद्धिः स्मृतिर्मेधा धृतिः कीर्तिः क्षमा दया।। च.सू. 1.39

बुद्धि	सिद्धि	स्मृति	मेधा
धृति	कीर्ति	क्षमा	दया

आयुर्वेद निरुक्ति (Etymology of Ayurveda)

- हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
  मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। च.सू. 1.41

हित आयु, अहित आयु, सुखायु और दुःखायु तथा उस आयु के लिये जो हितकर (पथ्य) अथवा अहितकर (अपथ्य) है; आयु का मान और उसके लक्षणों का वर्णन जिसमें होता है, उसको आयुर्वेद कहते हैं।

आयु लक्षण एवं पर्याय
(Features and synonyms of ayu - life)

- शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्।
  नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते।। च.सू. 1.42

आयु (Life) = शरीर (Body) + इन्द्रिय (Sensory faculty) + सत्त्व (Mind) + आत्मा (Soul)

सामान्य एवं विशेष (Generality & Particularity)

- सर्वदा सर्वभावानां सामान्यं वृद्धिकारणम्।
  ह्रासहेतुर्विशेषश्च, प्रवृत्तिरुभयस्य तु।।
  सामान्यमेकत्वकरं, विशेषस्तु पृथक्त्वकृत्।
  तुल्यार्थता हि सामान्यं, विशेषस्तु विपर्ययः।। च.सू. 1.44-45

सामान्य	विशेष
सर्वदा सभी भावों या विषयों की वृद्धि करने वाला सामान्य (generality/ community) होता है।	विशेष (particularity) यह ह्रास का कारण है।
सामान्य एकत्व अर्थात् अनेक पदार्थों में एकत्व स्थापित करने वाला है।	विशेष का लक्षण पृथक्त्व है।

सामान्य	विशेष
सामान्य तुल्य अर्थ अर्थात् दो विषयों में सदृशता का ज्ञान बतलाने वाला होता है।	विशेष सामान्य के विपरीत लक्षणों से युक्त होता है।

त्रिदण्ड (Tripod)

- सत्त्वमात्मा शरीरं च त्रयमेतत्त्रिदण्डवत्।
  लोकस्तिष्ठति संयोगात्तत्र सर्वं प्रतिष्ठितम्।। च.सू. 1.46

त्रिदण्ड (Tripod)		
सत्त्व (Mind)	आत्मा (Soul)	शरीर (Body)

आयुर्वेद का अधिकरण (Subject matter of Ayurveda)

- स पुमांश्चेतनं तच्च तच्चाधिकरणं स्मृतम्।
  वेदस्यास्य, तदर्थं हि वेदोऽयं संप्रकाशितः।। च.सू. 1.47

द्रव्य संग्रह (List of dravyas - substances)

- खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः। च.सू. 1.48

आकाश महाभूत	वायु महाभूत	अग्नि महाभूत
जल महाभूत	पृथिवी महाभूत	आत्मा (Soul)
मन (Mind)	काल (Time)	दिशा (Direction)

द्रव्य के भेद (Classification of dravya)

- सेन्द्रियं चेतनं द्रव्यं, निरीन्द्रियमचेतनम्।। च.सू. 1.48

द्रव्य	
सेन्द्रिय (चेतन द्रव्य)	निरीन्द्रिय (अचेतन द्रव्य)

आयुर्वेदानुसार गुण संख्या
(Number of gunas as per Ayurveda)

- सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः।
  गुणाः प्रोक्ताः।। च.सू. 1.49
  - सार्था / इन्द्रिय / वैशेषिक गुणः 5
  - गुर्वादि / शारीर / द्रव्य गुणः 20
  - अध्यात्म / आत्म गुणः 6
  - परादि / सामान्य गुणः 10

कर्म (Karma - Action)

- प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते। च.सू. 1.49
  प्रयत्न आदि चेष्टाओं को कर्म कहा जाता है।

समवाय की परिभाषा
(Definition of samavaya - inherence)

- समवायोऽपृथग्भावो भूम्यादीनां गुणैर्मतः।
  स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रानियतो गुणः।। च.सू. 1.50

भूमि आदि आधार द्रव्यों के साथ गुर्वादि आधेय गुणों का जो अपृथग्भाव (अलग न रहने का) सम्बन्ध है उसे ही समवाय कहते हैं। यह नित्य (universal) और जहाँ भी द्रव्य है वहाँ निश्चित रूप से गुण रहता ही है।

द्रव्य की परिभाषा (Definition of dravya - substance)

- **यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत्।**
  तद् द्रव्यम् ।। च.सू. 1.51

जिसमें कर्म और गुण (समवाय सम्बन्ध से) आश्रित हों, जो (कार्य द्रव्य, गुण एवं कर्म) का समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

गुण की परिभाषा (Definition of guna - quality)

- **समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः।।** च.सू. 1.51

जो समवाय सम्बन्ध वाला हो, चेष्टारहित हो और ग्रहण में कारण हो उसे गुण कहते हैं।

कर्म की परिभाषा (Definition of karma - action)

- **संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्।**
  कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यदपेक्षते।। च.सू. 1.52

जो संयोग और विभाग में अनपेक्ष (स्वतन्त्र) कारण हो तथा द्रव्य में आश्रित हो उसे कर्म कहते हैं। कर्त्तव्य की क्रिया को कर्म कहते हैं। पूर्वोक्त

संयोग और विभाग के लिए कर्म किसी अन्य साधन की अपेक्षा नहीं रखता।

आयुर्वेद तन्त्र का प्रयोजन (Aim of Ayurveda)

- **धातुसाम्यक्रिया चोक्ता तन्त्रस्यास्य प्रयाजनम्।।** च.सू. 1.53

व्याधि के त्रिविध हेतु संग्रह (Causes of diseases)

- **कालबुद्धीन्द्रियार्थानां योगो मिथ्या न चाति च।**
  द्वयाश्रयाणां व्याधीनां त्रिविधो हेतुसंग्रहः।। च.सू. 1.54

व्याधि के त्रिविध हेतु संग्रह

काल, बुद्धि और इन्द्रियार्थ का मिथ्यायोग	काल, बुद्धि और इन्द्रियार्थ का अयोग	काल, बुद्धि और इन्द्रियार्थ का अतियोग

व्याधि के आश्रय (Abodes of diseases)

- **शरीरं सत्त्वसंज्ञं च व्याधीनामाश्रयो मतः।** च.सू. 1.55
  1. शरीर
  2. सत्त्व (मन)

आत्मा (Atma - soul)

- **निर्विकारः परस्त्वात्मा सत्त्वभूतगुणेन्द्रियैः।**
  चैतन्ये कारणं नित्यो द्रष्टा पश्यति हि क्रियाः।। च.सू. 1.56

– निर्विकार – पर – मन, भूत गुण और इन्द्रिय के साथ चैतन्य का कारण
– नित्य – द्रष्टा होकर सभी क्रियाओं का दर्शक

दोष भेद (Classification of doshas)

- वायुः पित्तं कफश्चोक्तः शारीरो दोषसंग्रहः।
  मानसः पुनरुद्दिष्टो रजश्च तम एव च।। च.सू. 1.57

दोष	
शारीर दोष	मानस दोष
1. वात	1. रज
2. पित्त	2. तम
3. कफ	

शारीर एवं मानस रोगों का चिकित्सा सूत्र (Treatment for sharira and manasa diseases)

- प्रशाम्यत्यौषधैः पूर्वो दैवयुक्तिव्यपाश्रयैः।
  मानसो ज्ञानविज्ञानधैर्यस्मृतिसमाधिभिः।। च.सू. 1.58

शारीर रोग चिकित्सा सूत्र	मानस रोग चिकित्सा सूत्र
- दैवव्यपाश्रय चिकित्सा	- ज्ञान - विज्ञान - धैर्य -
- युक्तिव्यपाश्रय चिकित्सा	स्मृति - समाधि

वात दोष के गुण (Qualities of vata dosha)

- रूक्षः शीतो लघुः सूक्ष्मश्चलोऽथ विशदः खरः।
  विपरीतगुणैर्द्रव्यैर्मारुतः संप्रशाम्यति।। च.सू. 1.59

(1) रूक्ष (dry) (2) शीत (cold) (3) लघु (light)
(4) सूक्ष्म (subtle) (5) चल (mobile) (6)विशद (clear)
(7) खर (rough)।

पित्त दोष के गुण (Qualities of pitta dosha)

- सस्नेहमुष्णं तीक्ष्णं च द्रवमम्लं सरं कटु।
  विपरीतगुणैः पित्तं द्रव्यैराशु प्रशाम्यति।। च.सू. 1.60

(1) सस्नेह (slight unctuousness)
(2) उष्ण (hot) (3) तीक्ष्ण (sharp) (4) द्रव (fluidity)
(5) अम्ल (sour) (6) सर (free flowing)
(7) कटु (pungent)।

कफ दोष के गुण (Qualities of kapha dosha)

- गुरुशीतमृदुस्निग्धमधुरस्थिरपिच्छिलाः ।
  श्लेष्मणः प्रशमं यान्ति विपरीतगुणैर्गुणाः।। च.सू. 1.61

(1) गुरु (heavy) (2) शीत (cold) (3) मृदु (soft)
(4) स्निग्ध (unctuous) (5) मधुर (sweet)
(6) स्थिर (steable) (7) पिच्छिल (slimy)

रस का लक्षण (Features of rasa - taste)

- रसनार्थो रसस्तस्य द्रव्यमापः क्षितिस्तथा।
  निर्वृत्तौ च विशेषे च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः।। च.सू. 1.64

- रसना द्वारा ग्राह्य विषय
- रस की निवृत्तिः जल और पृथिवी द्वारा
- रस का विशेष ज्ञानः आकाश, वायु एवं अग्नि द्वारा

रस के भेद (Classification of rasas)

- स्वादुरम्लोऽथ लवणः कटुकस्तिक्त एव च।
  कषायश्चेति षट्कोऽयं रसानां संग्रहः स्मृतः।। च.सू. 1.65

रसों के दोषों पर प्रभाव (Effect of rasas on the doshas)

- स्वाद्वम्ललवणा वायुं, कषायस्वादुतिक्तकाः।
  जयन्ति पित्तं, श्लेष्माणं कषायकटुतिक्तकाः।।
  (कट्वम्ललवणाः पित्तं, स्वाद्वम्ललवणाः कफम्।
  कटुतिक्तकषायाश्च कोपयन्ति समीरणम्।।) च.सू. 1.66(1)

रस	वात दोष पर प्रभाव	पित्त दोष पर प्रभाव	कफ दोष पर प्रभाव
मधुर (Sweet)	क्षय	क्षय	वृद्धि
अम्ल (Sour)	क्षय	वृद्धि	वृद्धि
लवण (Salty)	क्षय	वृद्धि	वृद्धि
तिक्त (Bitter)	वृद्धि	क्षय	क्षय
कटु (Pungent)	वृद्धि	वृद्धि	क्षय
कषाय (Astringent)	वृद्धि	क्षय	क्षय

द्रव्यों के त्रिविध भेद (Types of dravyas)

- किंचिद्दोषप्रशमनं किंचिद्धातुप्रदूषणम्।
  स्वस्थवृत्तौ मतं किंचित्त्रिविधं द्रव्यमुच्यते।। च.सू. 1.67

द्रव्य		
दोषप्रशमन (Dosha pacifying)	धातुप्रदूषण (Dhatu vitiating)	स्वस्थवृत्त (Maintaing health)

उत्पत्ति भेद से द्रव्य भेद (Types of dravya - as per origin)

- तत् पुनस्त्रिविधं प्रोक्तं जंगमौद्भिदपार्थिवम्। च.सू. 1.68

द्रव्य		
जंगम (Animal drugs)	औद्भिद् (Plant durgs)	पार्थिव (Mineral drugs)

औद्भिद् द्रव्यों के चतुर्विध भेद (Four types of plant drugs)

- औद्भिदं तु चतुर्विधम्।
  वनस्पतिस्तथा वीरुद्वानस्पत्यस्तथौषधिः।।
  फलैर्वनस्पतिः पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि।
  ओषध्यः फलपाकान्ताः प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः।। च.सू. 1.71-72

1. वनस्पति (फलैर्वनस्पतिः - fruits without flower)
2. वानस्पत्य (पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैः - flower without fruits)
3. औषध (ओषध्यः फलपाकान्ताः - death on maturation of fruits)
4. वीरुध (प्रतानैर्वीरुधः - creepers)

मूलिनी द्रव्य (Plants whose roots are useful)

संख्या - 16

मूलिनी द्रव्य	उपयोग
- शणपुष्पी-बिम्बी-हैमवती	वमन
- श्वेता - ज्योतिष्मती	शिरोविरेचन
अन्य 11 द्रव्य	विरेचन

फलिनी द्रव्य (Plants whose fruits are useful)

संख्या - 19

फलिनी द्रव्य	उपयोग
- धामार्गव-इक्ष्वाकु-जीमूत - कृतवेधन-मदन-कुटज - त्रपुष-हस्तिपर्णिनी	वमन एवं आस्थापन बस्ति
अपामार्ग	शिरोविरेचन
अन्य 10 द्रव्य	विरेचन

चतुर्विध स्नेह

(Four types of sneha - unctuous substances)

- **सर्पिस्तैलं वसा मज्जा स्नेहो दिष्टश्चतुर्विधः।।**
  पानाभ्यञ्जनबस्त्यर्थं नस्यार्थं चैव योगतः।
  स्नेहना जीवना वर्ण्या बलोपचयवर्धनाः।।
  स्नेहा ह्येते च विहिता वातपित्तकफापहाः। च.सू. 1.86-88

स्नेह (Unctuous substance)			
सर्पि (Clarified butter)	तैल (Oil)	वसा (Fat)	मज्जा (Bone marrow)

पञ्च लवण (Five types of lavana - salts)

- **सौवर्चलं सैन्धवं च विडमौद्भिदमेव च।।**
  सामुद्रेण सहैतानि पञ्च स्युर्लवणानि च। च.सू. 1.88-89

लवण				
सौवर्चल	सैन्धव	विड	औद्भिद्	सामुद्र

लवण के सामान्य गुण (General qualities of lavana)

- **स्निग्धान्युष्णानि तीक्ष्णानि दीपनीयतमानि च।।**
  आलेपनार्थे युज्यन्ते स्नेहस्वेदविधौ तथा।
  अधोभागोर्ध्वभागेषु निरूहेष्वनुवासने।।

अभ्यञ्जने भोजनार्थे शिरसश्च विरेचने।
शस्त्रकर्मणि वर्त्यर्थमञ्जनोत्सादनेषु च।।
अजीर्णानाहयोर्वाते गुल्मे शूले तथोदरे। च.सू. 1.89-92

- स्निग्ध - उष्ण - तीक्ष्ण - दीपनीयतम - आलेपन - स्नेहन - स्वेदन - निरूह - अनुवासन - अभ्यञ्जनादि कर्मों में उपयोग - अजीर्ण - आनाह - वातज गुल्म - शूल - उदर रोग में लाभकारी

अष्टविध मूत्र (Eight types of mutra - urine)

- अविमूत्रमजामूत्रं गोमूत्रं माहिषं च यत्।।
  हस्तिमूत्रमथोष्ट्रस्य हयस्य च खरस्य च। च.सू. 1.93-94

अष्टविध मूत्र			
अवि (Sheep)	अजा (Goat)	गो (Cow)	माहिष (Buffalo)
हस्ति (Elephant	उष्ट्र (Camel)	हय (Horse)	खर (Ass)

मूत्र के सामान्य गुण (General qualities of mutra)

- उष्णं तीक्ष्णमथोऽरूक्षं कटुकं लवणान्वितम्।।
  मूत्रमुत्सादने युक्तं युक्तमालेपनेषु च।
  युक्तमास्थापने मूत्रं युक्तं चापि विरेचने।।
  स्वेदेष्वपि च तद्युक्तमानाहेष्वगदेषु च।

उदरेष्वथ चार्शःसु गुल्मिकुष्ठिकिलासिषु।।
तद्युक्तमुपनाहेषु परिषेके तथैव च।
दीपनीयं विषघ्नं च क्रिमिघ्नं चोपदिश्यते।।
पाण्डुरोगोपसृष्टानामुत्तमं शर्म चोच्यते।
श्लेष्माणं शमयेत् पीतं मारुतं चानुलोमयेत्।।
कर्षेत् पित्तमधोभागमित्यस्मिन् गुणसंग्रहः। च.सू. 1.94-99

- उष्ण - तीक्ष्ण - अरूक्ष - कटु - लवण रसात्मक - उत्सादनादि कर्मों में उपयोगी - आनाह - अगद - उदर रोग - अर्श - गुल्म - कुष्ठ - किलास में हितकर - उपनाह एवं परिषेकार्थ उपयोगी - दीपनीय - विषघ्न - क्रिमिघ्न - पाण्डुरोग - कफ शामक - वातानुलोमक - पित्त का अधोमार्ग से कर्षण

अवि मूत्र के गुण (Qualities of urine of sheep)

- अविमूत्रं सतिक्तं स्यात् स्निग्धं पित्ताविरोधि च। च.सू. 1.100
  - तिक्त - स्निग्ध - पित्त अविरोधि

अजा मूत्र के गुण (Qualities of urine of goat)

- आजं कषायमधुरं पथ्यं दोषान्निहन्ति च।। च.सू. 1.100
  - कषाय - मधुर - पथ्य - दोषहर

गोमूत्र के गुण (Qualities of urine of cow)

- गव्यं समधुरं किंचिद्दोषघ्नं क्रिमिकुष्ठनुत्।
  कण्डूं च शमयेत् पीतं सम्यग्दोषोदरे हितम्।। च.सू. 1.101

- मधुर - किञ्चित् दोषघ्न - क्रिमिघ्न एवं कुष्ठघ्न - कण्डूघ्न - दोषोदर में हितकर

माहिष मूत्र के गुण (Qualities of urine of buffalo)

- अर्शः शोफोदरघ्नं तु सक्षारं माहिषं सरम्। च.सू. 1.102

- अर्शो रोग - शोफ - उदर रोगघ्न - क्षार - सर

हस्ति मूत्र के गुण (Qualities of urine of elephant)

- हास्तिकं लवणं मूत्रं हितं तु क्रिमिकुष्ठिनाम्।।
  प्रशस्तं बद्धविण्मूत्रविषश्लेष्मामयार्शसाम्। च.सू. 1.102-103

- लवण - क्रिमिरोग एवं कुष्ठ में हितकर - बद्ध पुरीषता एवं मूत्रता में हितकर - विष - श्लेष्मल विकार - अर्श रोगहर

उष्ट्र मूत्र के गुण (Qualities of urine of camel)

- सतिक्तं श्वासकासघ्नमर्शोघ्नं चौष्ट्रमुच्यते।। च.सू. 1.103

- तिक्त - श्वास - कास - अर्शोघ्न

अश्व मूत्र के गुण (Qualities of urine of horse)

- वाजिनां तिक्तकटुकं कुष्ठव्रणविषापहम्। च.सू. 1.104

- तिक्त - कटुक - कुष्ठघ्न - व्रणघ्न - विषघ्न

गर्दभ मूत्र के गुण (Qualities of urine of ass)

- खरमूत्रमपस्मारोन्मादग्रहविनाशनम्।। च.सू. 1.104

- अपस्मार - उन्माद - ग्रह विनाशक

अष्टविध क्षीर (Eight types of milk)

- अविक्षीरमजाक्षीरं गोक्षीरं माहिषं च यत्।
  उष्ट्रीणामथ नागीनां वडवायाः स्त्रियास्तथा।। च.सू. 1.106

अष्टविध क्षीर			
अवि (Sheep)	अजा (Goat)	गो (Cow)	माहिष (Buffalo)
उष्ट्री (Camel)	नाग (Elephant)	वडव (Mare)	स्त्री (Human)

क्षीर के सामान्य गुण

(General qualities of kshira - milk)

- प्रायशो मधुरं स्निग्धं शीतं स्तन्यं पयो मतम्।
  प्रीणनं बृंहणं वृष्यं मेध्यं बल्यं मनस्करम्।।
  जीवनीयं श्रमहरं श्वासकासनिबर्हणम्।
  हन्ति शोणितपित्तं च सन्धानं विहतस्य च।।
  सर्वप्राणभृतां सात्म्यं शमनं शोधनं तथा।
  तृष्णाघ्नं दीपनीयं च श्रेष्ठं क्षीणक्षतेषु च।।
  पाण्डुरोगेऽम्लपित्ते च शोषे गुल्मे तथोदरे।

अतीसारे ज्वरे दाहे श्वयथौ च विशेषतः।।

योनिशुक्रप्रदोषेषु मूत्रेष्वप्रचुरेषु च।

पुरीषे ग्रथिते पथ्यं वातपित्तविकारिणाम्।।

नस्यालेपावगाहेषु वमनास्थापनेषु च।

विरेचने स्नेहने च पयः सर्वत्र युज्यते।। च.सू. 1.107-112

– मधुर – स्निग्ध – शीत – स्तन्य – प्रीणन – बृंहण – वृष्य – मेध्य – बल्य – मनस्कर – जीवनीय – श्रमहर – श्वासहर – कासहर – शोणितपित्तहर – सन्धानकर – सभी प्राणियों के लिए सात्म्य – दोषशामक – स्रोतोशोधक – तृष्णाहर – दीपनीय आदि।

त्रिविध शोधन वृक्ष (Trees for shodhana - purification)

1. स्नुही	विरेचन	1. पूतीक	विरेचन
2. अर्क	वमन एवं विरेचन	2. कृष्णगन्धा	त्वचा रोगादि में
3. अश्मन्तक	वमन	3. तिल्वक	विरेचन

औषधियों के ज्ञाता (Experts in plant identification)

- **ओषधीर्नामरूपाभ्यां जानते ह्यजपा वने।**

अविपाश्चैव गोपाश्च ये चान्ये वनवासिनः।। च.सू. 1.120

– अजपा (goatherds) – अविपा (shephards) – गोपा (cowherds) – वनवासी (forest dwellers)

उत्तम भिषक् के लक्षण (Features of good physician)

- **योगमासां तु यो विद्याद्देशकालोपपादितम्।**

पुरुषं पुरुषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः।। च.सू. 1.123

जो चिकित्सक प्रत्येक पुरुष की परीक्षा करके देश, काल के अनुसार औषधियों के योग को जानता है, वह उत्तम चिकित्सक है।

अज्ञात और ज्ञात औषधि सेवन का परिणाम

(Effects of unknown and known plants)

- **यथा विषं यथा शस्त्रं यथाऽग्निरशनिर्यथा।**

तथौषधमविज्ञातं विज्ञातममृतं यथा। च.सू. 1.124

अविज्ञात औषध विष, शस्त्र, अग्नि, वज्र के समान घातक है और विज्ञात अमृत के समान सुखद है।

श्रेष्ठ भैषज्य एवं श्रेष्ठ भिषक्

(Best drug and best physician)

- **तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।**

स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत्।। च.सू. 1.134

वही औषध ठीक है जो आरोग्य दान में सक्षम हो और वही चिकित्सकों में श्रेष्ठ है जो विभिन्न रोगों से मुक्ति प्रदान करा दे।

• • •

2. अपामार्गतण्डुलीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या - 36

शिरोविरेचन द्रव्य

(Drugs for shirovirechana - nasal medication)

- अपामार्गस्य बीजानि पिप्पलीर्मरिचानि च।
  विडंगान्यथ शिग्रूणि सर्षपांस्तुम्बुरूणि च।।
  अजाजीं चाजगन्धां च पीलून्येलां हरेणुकाम्।
  पृथ्वीकां सुरसां श्वेतां कुठेरकफणिज्झकौ।।
  शिरीषबीजं लशुनं हरिद्रे लवणद्वयम्।
  ज्योतिष्मतीं नागरं च दद्याच्छीर्षविरेचने।। च.सू. 2.3-5

- अपामार्ग बीज - पिप्पली - मरिच - विडंग - शिग्रु - सर्षप - तुम्बुरू - अजाजी - अजगन्धा - पीलु - एला - हरेणुका - पृथ्वीका - सुरसा - श्वेता - कुठेरक - फणिज्झ - शिरीष बीज - लशुन - हरिद्रा द्वय - लवण द्वय - ज्योतिष्मती - शुण्ठी

वमनकारक द्रव्य (Drugs for vamana - emesis)

- मदनं मधुकं निम्बं जीमूतं कृतवेधनम्।
  पिप्पलीकुटजेक्ष्वाकूण्येलां धामार्गवाणि च।।
  उपस्थिते श्लेष्मपित्ते व्याधावामाशयाश्रये।
  वमनार्थं प्रयुञ्जीत भिषग्देहमदूषयन्।। च.सू. 2.7-8

- मदन - मधुक - निम्ब - जीमूतक - कृतवेधन - पिप्पली - कुटज - इक्ष्वाकु - एला - धामार्गव

विरेचक द्रव्य (Drugs for virechana - purgation)

- त्रिवृतां त्रिफलां दन्तीं नीलिनीं सप्तलां वचाम्।
  कम्पिल्लकं गवाक्षीं च क्षीरिणीमुदकीर्यकाम्।।
  पीलून्यारग्वधं द्राक्षां द्रवन्तीं निचुलानि च।
  पक्वाशयगते दोषे विरेकार्थं प्रयोजयेत्।। च.सू. 2.9-10

- त्रिवृत् - त्रिफला - दन्ती - नीलिनी - सप्तला - वचा - कम्पिल्लक - गवाक्षी - क्षीरिणी - उदकीर्य - पीलु - आरग्वध - द्राक्षा - द्रवन्ती - निचुल

आस्थापन बस्ति के द्रव्य

(Drugs for asthapana - decoction enema)

- पाटलां चाग्निमन्थं च बिल्वं श्योनाकमेव च।
  काश्मर्यं शालपर्णीं च पृश्निपर्णीं निदिग्धिकाम्।।

बलां श्वदंष्ट्रां बृहतीमेरण्डं सपुनर्नवम्।
यवान् कुलत्थान् कोलानि गुडूचीं मदनानि च।।
पलाशं कत्तृणं चैव स्नेहांश्च लवणानि च।
उदावर्ते विबन्धेषु युञ्ज्यादास्थापनेषु च।। च.सू. 2.11-13

- पाटला - अग्निमन्थ - बिल्व - श्योनाक - काश्मर्य - शालपर्णी - पृश्निपर्णी - निदिग्धिका - बला - गोक्षुर - बृहती - एरण्ड - पुनर्नवा - यव - कुलत्थ - कोल - गुडूची - मदन - पलाश - कत्तृण - स्नेह - लवण

पञ्चकर्म की उपयोगिता
(Significance of panchakarma therapy)

- तान्युपस्थितदोषाणां स्नेहस्वेदोपपादनैः।
  पञ्चकर्माणि कुर्वीत मात्राकालो विचारयन्।। च.सू. 2.15

जिन रुग्णों में दोष उपस्थित (प्रकुपित) हों उन्हें स्नेहन एवं स्वेदन कराकर मात्रा और काल का विचार कर पञ्चकर्म कराना चाहिए।

युक्ति की उपयोगिता (Usefulness of yukti - rationality)

- मात्राकालाश्रया युक्तिः, सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता।
  तिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञानवतां सदा।। च.सू. 2.16

औषधियों की युक्ति उनके मात्रा एवं काल पर आश्रित है। चिकित्सा की सिद्धि भी युक्ति द्वारा ही सम्भव है। युक्तिज्ञ चिकित्सक श्रेष्ठ होता है।

अट्ठाईस यवागू (Gruels)

इस अध्याय में 28 यवागुओं का उल्लेख किया गया है।

कतिपय प्रमुख यवागू (Some important gruels)

शूलघ्न यवागू (Gruel pacifying colic)

- पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः।
  यवागूर्दीपनीया स्याच्छूलघ्नी चोपसाधिता।। च.सू. 2.18

रक्तातिसार नाशक पेया (Gruel pacifying raktatisara)

- पयस्यर्धोदके च्छागे ह्रीवेरोत्पलनागरैः।
  पेया रक्तातिसारघ्नी पृश्निपर्ण्या च साधिता।। च.सू. 2.21

कृमिघ्न यवागू (Anti-helmintic gruel)

- विडंगपिप्पलीमूलशिग्रुभिर्मरिचेन च।
  तक्रसिद्धा यवागूः स्यात् क्रिमिघ्नी ससुवर्चिका।। च.सू. 2.23

श्वासकासघ्न यवागू (Gruel pacifying shwasa and kasa)

- दशमूलीशृता कासहिक्काश्वासकफापहा। च.सू. 2.27

घृतव्यापत्तिनाशक यवागू
(Gruel pacifying complications of ghrta)

- तक्रसिद्धा यवागूः स्याद्घृतव्यापत्तिनाशिनी। च.सू. 2.30

तैलव्यापत्तिनाशक यवागू

(Gruels pacifying complications of taila)

- तैलव्यापदि शस्ता स्यात्तक्रपिण्याकसाधिता।। च.सू. 2.30

विषमज्वरघ्नी यवागू (Gruels pacifying vishama jwara)

- गव्यमांसरसैः साम्ला विषमज्वरनाशिनी। च.सू. 2.31

मदविनाशिनी यवागू

(Gruel pacifying mada- intoxication)

- उपोदिकादधिभ्यां तु सिद्धा मदविनाशिनी। च.सू. 2.33

• • •

3. आरग्वधीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या – 30

विषय (Subject)

इस अध्याय में 32 चूर्ण एवं प्रदेहों का उल्लेख किया गया है।

कतिपय प्रमुख चूर्ण-प्रदेह

(Some important powders and unguents)

वातव्याधिहर प्रथम प्रदेह (Unguent - 1 for vata vyadhi)

- कोलं कुलत्थाः सुरदारुरास्नामाषातसीतैलफलानि कुष्ठम्।
  वचा शताह्वा यवचूर्णमम्लमुष्णानि वातामयिनां प्रदेहः।।

च.सू. 3.18

वातव्याधिहर द्वितीय प्रदेह (Unguent - 2 for vata vyadhi)

- आनूपमत्स्यामिषवेसवारैरुष्णैः प्रदेहः पवनापहः स्यात्।

च.सू. 3.19

वातव्याधिहर तृतीय प्रदेह (Unguent - 3 for vata vyadhi)

- स्नेहैश्चतुर्भिर्दशमूलमिश्रैर्गन्धौषधैश्चानिलहः प्रदेहः ।।

च.सू. 3.19

शिर:शूलशामक प्रदेह (Unguent for shirah shula)

- नतोत्पलं चन्दनकुष्ठयुक्तं शिरोरुजायां सघृतं प्रदेहः ।। च.सू. 3.23

पार्श्वशूलहर प्रदेह (Unguent for parshwa shula)

- रास्ना हरिद्रे नलदं शताह्वे द्वे देवदारूणि सितोपला च।
  जीवन्तिमूलं सघृतं सतैलमालेपनं पार्श्वरुजासु कोष्णम् ।।

च.सू. 3.25

विषघ्न प्रदेह (Unguent for visha - poisoning)

- विषं शिरीषस्तु ससिन्धुवारः ।। च.सू. 3.28

शरीरदौर्गन्ध्यहर प्रदेह
(Unguent for relieving foul body odour)

- पत्राम्बुलोध्राभयचन्दनानि शरीरदौर्गन्ध्यहरः प्रदेहः ।। च.सू. 3.29

• • •

4. षड्विरेचनशताश्रितीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या - 29

अध्याय संग्रह (Summary of chapter)

विरेचन - 600	विरेचन आश्रय - 6	कषाय - 500
कषाय योनि - 5	कषाय कल्पना - 5	महाकषाय - 50

600 विरेचन

(600 virechana drugs and their formulations)

वमन द्रव्य	योग संख्या	विरेचन द्रव्य	योग संख्या
मदनफल	133	श्यामा एवं त्रिवृत्	100
देवदाली	39		10
कटुतुम्बी	45	आरग्वध	12
धामार्गव	60	लोध्र	16
कुटज	18	स्नुही	20
कोशातकी	60	सप्तला एवं शंखिनी	39
		दन्ती एवं द्रवन्ती	48
कुल वमनयोग	355	कुल विरेचन योग	245

विरेचन आश्रय (Useful parts of plants for virechana)

- **षड् विरेचनाश्रया इति क्षीरमूलत्वक्पत्रपुष्पफलानीति।।** च.सू. 4.5

– क्षीर – मूल – त्वक् – पत्र – पुष्प – फल

पञ्चविध कषाय योनि (Five varieties of kashaya yonis)

1. मधुरकषाय 2. अम्लकषाय 3. कटुकषाय
4. तिक्तकषाय 5. कषायकषाय

पञ्चविध कषायकल्पना

(Five types of kashaya kalpana - pharmaceutical processes)

- **पञ्चविधं कषायकल्पनमिति तद्यथा- स्वरसः, कल्कः, शृतः, शीतः, फाण्टः, कषाय इति।** च.सू. 4.7

कषाय कल्पना

स्वरस	कल्क	शृत	शीत	फाण्ट
(Juice)	(Paste)	(Decoction)	(Cold infusion)	(Hot infusion

स्वरस (Juice)

- **यन्त्रनिष्पीडिताद्द्रव्याद्रसः स्वरस उच्यते।** च.सू. 4.7

अभीष्ट द्रव्य को यन्त्र विशेष से निचोड़ कर जो रस निकाला जाता है उसको 'स्वरस' कहते हैं।

कल्क (Paste)

- **यः पिण्डो रसपिष्टानां स कल्कः परिकीर्तितः।।** च.सू. 4.7

रस द्वारा पीसकर जो पिण्ड जैसा बनाया जाता है उसे 'कल्क' कहते हैं।

शृत / क्वाथ (Decoction)

- **वह्नौ तु क्वथितं द्रव्यं शृतमाहुश्चिकित्सकाः।** च.सू. 4.7

अग्नि में विधिवत् पकाये हुए द्रव्य को चिकित्सक 'शृत' कहते हैं।

शीत (हिम) (Cold infusion)

- **द्रव्यादापोत्थितात्तोये प्रतप्ते निशि संस्थितात्।।**
  कषायो योऽभिनिर्याति स शीतः समुदाहृतः। च.सू. 4.7

कूटे हुए द्रव्य को अपेक्षित जल में रात भर भिगोकर मसलकर छाने हुए द्रव की 'शीत' संज्ञा है।

फाण्ट (Hot infusion)

- **क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितं तत् फाण्टं परिकीर्तितम्।** च.सू. 4.7

कूटे हुए द्रव्य को गरम जल में डालकर मसलने से उक्त द्रव्य का जो सार भाग जल में आ जाता है उसको 'फाण्ट' कहते हैं।

पञ्चविध कषाय कल्पनाओं की गुणवत्ता

(Comparative qualities of various processes)

- तेषां यथापूर्वं बलाधिक्यम् अतः कषायकल्पना व्याध्यातुर-बलापेक्षिणी; न त्वेवं खलु सर्वाणि सर्वत्रोपयोगीनि भवन्ति।।

च.सू. 4.7

कषाय कल्पना	बल
स्वरस	+++++
कल्क	++++
शृत	+++
शीत	++
फाण्ट	+

पञ्चाशत महाकषाय (Fifty maha-kashayas)

जीवनीय महाकषाय

- जीवकर्षभकौ मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी माषपर्ण्यौ जीवन्ती मधुकमिति दशेमानि जीवनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.9(1)

इस महाकषाय में 6 द्रव्य अष्टवर्ग (ऋद्धि एवं वृद्धि को छोड़कर) के हैं।

बृंहणीय महाकषाय

- क्षीरिणी राजक्षवकाश्वगन्धाकाकोलीक्षीरकाकोलीवाट्यायनी-भद्रौदनीभारद्वाजीपयस्यर्ष्यगन्धा इति दशेमानि बृंहणीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(2)

लेखनीय महाकषाय

- मुस्तकुष्ठहरिद्रादारुहरिद्रावचातिविषाकटुरोहिणीचित्रकचिर-बिल्वहैमवत्य इति दशेमानि लेखनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(3)

भेदनीय महाकषाय

- सुवहार्कोरुबुकाग्निमुखीचित्राचित्रकचिरबिल्वशंखिनीश-कुलादनीस्वर्णक्षीरिण्य इति दशेमानि भेदनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.9(4)

सन्धानीय महाकषाय

- मधुकमधुपर्णीपृश्निपर्ण्यम्बष्ठकीसमंगामोचरसधातकीलोध्र-प्रियंगुकट्फलानीति दशेमानि सन्धानीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.9(5)

दीपनीय महाकषाय

- पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृंगवेराम्लवेतसमरिचाजमोदा-भल्लातकास्थिहिंगुनिर्यासा इति दशेमानि दीपनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.9(6)

इस महाकषाय में षड्पण के सभी द्रव्य सम्मिलित हैं।

बल्य महाकषाय

- ऐन्द्रीषभ्यतिरसर्ष्यप्रोक्तापयस्याश्वगन्धास्थिरारोहिणीबलातिबला इति दशेमानि बल्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(7)

वर्ण्य महाकषाय

- चन्दनतुंगपद्मकोशीरमधुकमञ्जिष्ठासारिवापयस्यासितालता इति दशेमानि वर्ण्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(8)

कण्ठ्य महाकषाय

- सारिवेक्षुमूलमधुकपिप्पलीद्राक्षाविदारीकैटर्यहंसपादीबृहती-कण्टकारिका इति दशेमानि कण्ठ्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(9)

इस महाकषाय में प्रसिद्ध कण्ठ्य द्रव्य 'खदिर' का समावेश नहीं किया गया है।

हृद्य महाकषाय

- आम्राम्रातकलिकुचकरमर्दवृक्षाम्लाम्लवेतसकुवलबदरदाडिम-मातुलुंगानीति दशेमानि हृद्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(10)

इस महाकषाय में प्रसिद्ध हृद्य द्रव्य 'अर्जुन' का समावेश नहीं किया गया है।

तृप्तिघ्न महाकषाय

- नागरचव्यचित्रकविडंगमूर्वागुडूचीवचामुस्तपिप्पलीपटोलानीति दशेमानि तृप्तिघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(11)

अर्शोघ्न महाकषाय

- कुटजबिल्वचित्रकनागरातिविषाभयाधन्वयासकदारुहरिद्रावचा-चव्यानीति दशेमान्यर्शोघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(12)

इस महाकषाय में प्रसिद्ध अर्शोघ्न द्रव्य 'नागकेशर' एवं 'भल्लातक' का समावेश नहीं किया है।

कुष्ठघ्न महाकषाय

- खदिराभयामलकहरिद्रारुष्करसप्तपर्णारग्वधकरवीरविडंग-जातीप्रवाला इति दशेमानि कुष्ठघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(13)

कण्डूघ्न महाकषाय

- चन्दननलदकृतमालनक्तमालनिम्बकुटजसर्षपमधुकदारुहरिद्रा-मुस्तानीति दशेमानि कण्डूघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(14)

क्रिमिघ्न महाकषाय

- अक्षीवमरिचगण्डीरकेबुकविडंगनिर्गुण्डीकिणिहीश्वदंष्ट्रा-वृषपर्णिकाखुपर्णिका इति दशेमानि क्रिमिघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(15)

विषघ्न महाकषाय

- हरिद्रामञ्जिष्ठासुवहासूक्ष्मैलापालिन्दीचन्दनकतकशिरीष-सिन्धुवारश्लेष्मातका इति दशेमानि विषघ्नानि भवन्ति।

च.सू. 4.11(16)

स्तन्यजनन महाकषाय

- वीरणशालिषष्टिकेक्षुवालिकादर्भकुशकाशगुन्द्रेत्कटकत्तृण-मूलानीति दशेमानि स्तन्यजननानि भवन्ति। च.सू. 4.12(17)

इस महाकषाय में प्रसिद्ध स्तन्यजनन द्रव्य 'शतावरी' का समावेश नहीं किया गया है।

स्तन्यशोधन महाकषाय

- पाठामहौषधसुरदारुमुस्तमूर्वागुडूचीवत्सकफलकिराततिक्तकटु-रोहिणीसारिवा इति दशेमानि स्तन्यशोधनानि भवन्ति।

च.सू. 4.12(18)

शुक्रजनन महाकषाय

- जीवकर्षभककाकोलीक्षीरकाकोलीमुद्गपर्णीमाषपर्णीमेदा-वृद्धरुहाजटिलाकुलिंगा इति दशेमानि शुक्रजननानि भवन्ति।

च.सू. 4.12(19)

इस महाकषाय में अष्टवर्ग के 5 द्रव्य सम्मिलित हैं तथा 'अश्वगन्धा' का समावेश नहीं किया गया है।

शुक्रशोधन महाकषाय

- कुष्ठैलवालुककट्फलसमुद्रफेनकदम्बनिर्यासेक्षुकाण्डेक्ष्विक्षुर-कवसुकोशीराणीति दशेमानि शुक्रशोधनानि भवन्ति।

च.सू. 4.12(20)

इस महाकषाय में 'समुद्रफेन' का समावेश किया गया है।

स्नेहोपग महाकषाय

- मृद्वीकामधुकमधुपर्णीमेदाविदारीकाकोलीक्षीरकाकोलीजीवक-जीवन्तीशालपर्ण्य इति दशेमानि स्नेहोपगानि भवन्ति।

च.सू. 4.13(21)

स्वेदोपग महाकषाय

- शोभाञ्जनकैरण्डार्कवृश्चीरपुनर्नवायवतिलकुलत्थमाषबदरा-णीति दशेमानि स्वेदोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(22)

वमनोपग महाकषाय

- मधुमधुककोविदारकर्बुदारनीपविदुलबिम्बीशणपुष्पीसदापुष्पा-प्रत्यक्पुष्पा इति दशेमानि वमनोपगानि भवन्ति।

च.सू. 4.13(23)

इस महाकषाय में 'मधु' का समावेश किया गया है।

विरेचनोपग महाकषाय

- द्राक्षाकाश्मर्यपरूषकाभयामलकविभीतककुवलबदरकर्कन्धु-पीलूनीति दशेमानि विरेचनोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(24)

आस्थापनोपग महाकषाय

- त्रिवृद्बिल्वपिप्पलीकुष्ठसर्षपवचावत्सकफलशतपुष्पामधुक-मदनफलानीति दशेमान्यास्थापनोपगानि भवन्ति।

च.सू. 4.13(25)

इस महाकषाय में 'मदनफल' का समावेश किया गया है।

अनुवासनोपग महाकषाय

- रास्नासुरदारुबिल्वमदनशतपुष्पावृश्चीरपुनर्नवाश्वदंष्ट्राग्नि-मन्थश्योनाका इति दशेमान्यनुवासनोपगानि भवन्ति।

च.सू. 4.13(26)

इस महाकषाय में 'मदनफल' का समावेश किया गया है।

शिरोविरेचनोपग महाकषाय

- ज्योतिष्मतीक्षवकमरिचपिप्पलीविडंगशिग्रुसर्षपापामार्गतण्डुल-श्वेतामहाश्वेता इति दशेमानि शिरोविरेचनोपगानि भवन्ति।

च.सू. 4.13(27)

छर्दिनिग्रहण महाकषाय

- जम्ब्वाम्रपल्लवमातुलुंगाम्लबदरदाडिमयवयष्टिकोशीरमृल्लाजा इति दशेमानि छर्दिनिग्रहणानि भवन्ति। च.सू. 4.14(28)

इस महाकषाय में 'मृत्तिका' का समावेश किया गया है।

तृष्णानिग्रहण महाकषाय

- नागरधन्वयवासकमुस्तपर्पटकचन्दनकिराततिक्तकगुडूचीह्री-वेरधान्यकपटोलानीति दशेमानि तृष्णानिग्रहणानि भवन्ति।

च.सू. 4.14(29)

हिक्कानिग्रहण महाकषाय

- शटीपुष्करमूलबदरबीजकण्टकारिकाबृहतीवृक्षरुहाभया-पिप्पलीदुरालभाकुलीरशृंग्य इति दशेमानि हिक्कानिग्रहणानि भवन्ति। च.सू. 4.14(30)

पुरीषसंग्रहणीय महाकषाय

- प्रियङ्ग्वनन्ताम्रास्थिकट्वंगलोध्रमोचरससमंगाधातकीपुष्प-पद्मापद्मकेशराणीति दशेमानि पुरीषसंग्रहणीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.15(31)

पुरीषविरजनीय महाकषाय

- जम्बुशल्लकीत्वक्कच्छुरामधूकशाल्मलीश्रीवेष्टकभृष्टमृत्पय-स्योत्पलतिलकणा इति दशेमानि पुरीषविरजनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.15(32)

इस महाकषाय में 'भृष्ट मृत्तिका' का समावेश किया गया है।

मूत्रसंग्रहणीय महाकषाय

- जम्ब्वाम्रप्लक्षवटकपीतनोडुम्बराश्वत्थभल्लातकाश्मन्तकसोमवल्का इति दशेमानि मूत्रसंग्रहणीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.15(33)

मूत्रविरजनीय महाकषाय

- पद्मोत्पलनलिनकुमुदसौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रमधुकप्रियंगुधातकीपुष्पाणीति दशेमानि मूत्रविरजनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.15(34)

मूत्रविरेचनीय महाकषाय

- वृक्षादनीश्वदंष्ट्रावसुकवशिरपाषाणभेददर्भकुशकाशगुन्द्रेत्कटमूलानीति दशेमानि मूत्रविरेचनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(35)

कासहर महाकषाय

- द्राक्षाभयामलकपिप्पलीदुरालभाशृंगीकण्टकारिकावृश्चीरपुनर्नवातामलक्य इति दशेमानि कासहराणि भवन्ति।

च.सू. 4.16(36)

इस महाकषाय में त्रिफला के दो द्रव्य 'हरीतकी' एवं 'आमलकी' समाविष्ट हैं। परन्तु 'बिभीतक' का उल्लेख नहीं है।

श्वासहर महाकषाय

- शटीपुष्करमूलाम्लवेतसैलाहिंग्वगुरुसुरसातामलकीजीवन्तीचण्डा इति दशेमानि श्वासहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(37)

शोथहर महाकषाय

- पाटलाग्निमन्थश्योनाकबिल्वकाश्मर्यकण्टकारिकाबृहतीशालपर्णीपृश्निपर्णीगोक्षुरका इति दशेमानि श्वयथुहराणि भवन्ति।

च.सू. 4.16(38)

यह सम्पूर्ण महाकषाय 'दशमूल' के सभी दस द्रव्यों से युक्त है।

ज्वरहर महाकषाय

- सारिवाशर्करापाठामञ्जिष्ठाद्राक्षापीलुपरूषकाभयामलकबिभीतकानीति दशेमानि ज्वरहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(39)

इस महाकषाय में 'त्रिफला' के सभी द्रव्य समाहित हैं। प्रसिद्ध ज्वरघ्न द्रव्य 'मुस्त' एवं 'पर्पट' का उल्लेख नहीं है।

श्रमहर महाकषाय

- द्राक्षाखर्जूरप्रियालबदरदाडिमफल्गुपरुषकेक्षुयवषष्टिका इति दशेमानि श्रमहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(40)

दाहप्रशमन महाकषाय

- लाजाचन्दनकाश्मर्यफलमधूकशर्करानीलोत्पलोशीरसारिवागुडूचीह्रीबेराणीति दशेमानि दाहप्रशमनानि भवन्ति।

च.सू. 4.17(41

शीतप्रशमन महाकषाय

- **तगरागुरुधान्यकशृंगवेरभूतीकवचाकण्टकार्यग्निमन्थश्योनाकपिप्पल्य इति दशेमानि शीतप्रशमनानि भवन्ति।**

च.सू. 4.17(42)

उदर्दप्रशमन महाकषाय

- **तिन्दुकप्रियालबदरखदिरकदरसप्तपर्णाश्वकर्णार्जुनासनारिमेदा इति दशेमान्युदर्दप्रशमनानि भवन्ति।** च.सू. 4.17(43)

आचार्य चरक ने इस महाकषाय में 'अर्जुन' का समावेश किया है।

अङ्गप्रशमन महाकषाय

- **विदारीगन्धापृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकैरण्डकाकोलीचन्दनोशीरैलामधुकानीति दशेमान्यंगमर्दप्रशमनानि भवन्ति।**

च.सू. 4.17(44)

शूलप्रशमन महाकषाय

- **पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृंगवेरमरिचाजमोदाजगन्धाजाजीगण्डीराणीति दशेमानि शूलप्रशमनानि भवन्ति।**

च.सू. 4.17(45)

इस महाकषाय में 'षड्षण' के सभी द्रव्य हैं।

शोणितस्थापन महाकषाय

- **मधुमधुकरुधिरमोचरसमृत्कपाललोध्रगैरिकप्रियंगुशर्करालाजा इति दशेमानि शोणितस्थापनानि भवन्ति।** च.सू. 4.18(46)

इस महाकषाय में 'मधु', 'मृत् कपाल', 'गैरिक' एवं 'शर्करा' का समावेश किया गया है।

वेदनास्थापन महाकषाय

- **शालकट्फलकदम्बपद्मकतुम्बमोचरसशिरीषवञ्जुलैलवालुकाशोका इति दशेमानि वेदनास्थापनानि भवन्ति।**

च.सू. 4.18(47)

संज्ञास्थापन महाकषाय

- **हिंगुकैटर्यारिमेदावचाचोरकवयस्थागोलोमीजटिलापलंकषाशोकरोहिण्य इति दशेमानि संज्ञास्थापनानि भवन्ति।**

च.सू. 4.18(48)

प्रजास्थापन महाकषाय

- **ऐन्द्रीब्राह्मीशतवीर्यासहस्रवीर्याऽमोघाऽव्यथाशिवाऽरिष्टावाट्यपुष्पीविष्वक्सेनकान्ता इति दशेमानि प्रजास्थापनानि भवन्ति।**

च.सू. 4.18(49)

वयः स्थापन महाकषाय

- अमृताऽभयाधात्रीमुक्ताश्वेताजीवन्त्यतिरसामण्डूकपर्णीस्थिरा-पुनर्नवा इति दशेमानि वयःस्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(50)

भिषग्वर (Best physician)

- तेषां कर्मसु बाह्येषु योगमाभ्यन्तरेषु च।
  संयोगं च प्रयोगं च यो वेद स भिषग्वरः।। च.सू. 4.29

जो पुरुष महाकषायों के बाह्य योग तथा आभ्यन्तर योग अथवा औषध आदि की योजना को देश, काल आदि का विचार कर प्रयोग करना जानता है, वह श्रेष्ठ भिषक् है।

• • •

5. मात्राशितीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या - 111

आहार मात्रा (Quantity of food)

- मात्राशी स्यात्। आहारमात्रा पुनरग्निबलापेक्षिणी।। यावद्ध्यस्याशनमशितमनुपहत्य प्रकृतिं यथाकालं जरां गच्छति तावदस्य मात्राप्रमाणं वेदितव्यं भवति।। च.सू. 5.3-4

गुरु आहार एवं लघु आहार मात्रा
(Quantity of guru and laghu food)

- न च नापेक्षते द्रव्यं; द्रव्यापेक्षया च त्रिभागसौहित्यमर्धसौहित्यं वा गुरूणामुपदिश्यते, लघूनामपि च नातिसौहित्यमग्नेर्युक्त्यर्थम्।। च.सू. 5.7

- गुरु आहार - त्रिभाग सौहित्य / अर्धभाग सौहित्य पर्यन्त
- लघु आहार - न अति सौहित्य पर्यन्त

मात्रानुसार आहार के लाभ
(Benefits of food consumed in appropriate quantity)

- मात्रावध्द्यशनमशितमनुपहत्य प्रकृतिं बलवर्णसुखायुषा योजयत्युपयोक्तारमवश्यमिति।। च.सू. 5.8

  - बल - वर्ण - सुख - आयु

निरन्तर सेवन के अयोग्य पदार्थ
(Food articles not fit for daily consumption)

- वल्लूरं शुष्कशाकानि शालूकानि बिसानि च।
  नाभ्यसेद्गौरवान्मांसं कृशं नैवोपयोजयेत्।।
  कूर्चिकांश्च किलाटांश्च शौकरं गव्यमाहिषे।
  मत्स्यान् दधि च माषांश्च यवकांश्च न शीलयेत्।।

  च.सू. 5.10-11

- वल्लूर	- शुष्क शाक	- शालूक	- बिस
- कूर्चिका	- किलाट	- शूकर मांस	- गो मांस
- माहिष मांस	- मत्स्य	- दधि	- माष
- यवक			

निरन्तर सेवन के योग्य पदार्थ
(Food articles fit for daily consumption)

- षष्टिकाञ्छालिमुद्गांश्च सैन्धवामलकै यवान्।
  आन्तरीक्षं पयः सर्पिर्जांगलं मधु चाभ्यसेत्।। च.सू. 5.12

- षष्टिक	- शालि	- मुद्ग	- सैन्धव	- आमलकी
- यव	- आन्तरीक्ष जल	- सर्पि	- जांगल मांस	- मधु

अञ्जन विधि (Methodology of anjana - eye salve)

सौवीराञ्जन एवं रसाञ्जन प्रयोग
(Usage of sauviranjana and rasanjana)

- सौवीरमञ्जनं नित्यं हितमक्ष्णोः प्रयोजयेत्।
  पञ्चरात्रेऽष्टरात्रे वा स्रावणार्थे रसाञ्जनम्।। च.सू. 5.15
  - सौवीराञ्जन - नित्य प्रयोग
  - रसाञ्जन - पाँच या आठ रात्रि के बाद

नेत्र को कफ से विशिष्ट भय
(Specific threat from kapha to the eyes)

- चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषाच्छ्लेष्मतो भयम्।
  ततः श्लेष्महरं कर्म हितं दृष्टेः प्रसादनम्।। च.सू. 5.16

चक्षु तेजोमय होता है अतः इसे कफ से विशिष्ट रूप से भय होता है।

अञ्जन प्रयोग की स्तुति (Praise for anjana therapy)

- **यथा हि कनकादीनां मलिनां विविधात्मनाम्।।**
  धौतानां निर्मला शुद्धिस्तैलचेलकचादिभिः।
  एवं नेत्रेषु मर्त्यानामञ्जनाश्च्योतनादिभिः।।
  दृष्टिर्निराकुला भाति निमले नभसीन्दुवत्। च.सू. 5.18-20

जिस प्रकार सुवर्णादि धातुओं और विविध प्रकार के मणि, रत्नादि तैल, वस्त्र, बाल आदि साफ करने से निर्मल हो जाते हैं तथा उनमें अपनी नैसर्गिक शोभा आ जाती है उसी प्रकार अञ्जन, आश्च्योतन आदि नेत्रशोधन द्रव्यों अथवा संस्कारों द्वारा शुद्ध दृष्टि उस प्रकार निर्मल दिखलाई देती है जिस प्रकार निर्मल आकाश में चन्द्रमा।

धूमपानविधि

(Methodology of dhumapana - medicated smoking)

धूमपान प्रयोग (Method of dhumapana)

- **हरेणुकां प्रियंगुं च पृथ्वीकां केशरं नखम्।।**
  ह्रीवेरं चन्दनं पत्रं त्वगेलोशीरपद्मकम्।
  ध्यामकं मधुकं मांसी गुग्गुल्वगुरुशर्करम्।।
  न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षलोध्रत्वचः शुभाः।

वन्यं सर्जरसं मुस्तं शैलेयं कमलोत्पले।।
श्रीवेष्टकं शल्लकीं च शुकबर्हमथापि च।
पिष्ट्वा लिम्पेच्छरेषीकां तां वर्तिं यवसन्निभाम्।।
अंगुष्ठसंमितां कुर्यादष्टांगुलसमां भिषक्।
शुष्कां निगर्भां तां वर्तिं धूमनेत्रार्पितां नरः।।
स्नेहाक्तामग्निसंप्लुष्टां पिबेत् प्रायोगिकीं सुखाम्। च.सू. 5.20-25

- धूम वर्ति
  - आकार - यवाकार
  - लम्बाई - आठ अंगुल
  - मोटाई - अंगुष्ठ सम

धूमपान की फलश्रुति (Benefits of dhumapana)

- **गौरवं शिरसः शूलं पीनसार्धावभेदकौ।।**
  कर्णाक्षिशूलं कासश्च हिक्काश्वासौ गलग्रहः।
  दन्तदौर्बल्यमास्रावः श्रोत्रघ्राणाक्षिदोषजः।।
  पूतिघ्राणास्यगन्धश्च दन्तशूलमरोचकः।
  हनुमन्याग्रहः कण्डूः क्रिमयः पाण्डुता मुखे।।
  श्लेष्मप्रसेको वैस्वर्यं गलशुण्ड्युपजिह्विका।
  खालित्यं पिञ्जरत्वं च केशानां पतनं तथा।।

क्षवथुश्चातितन्द्रा च बुद्धेर्मोहोऽतिनिद्रता।
धूमपानात् प्रशामयन्ति बलं भवति चाधिकम्।।
शिरोरुहकपालानामिन्द्रियाणां स्वरस्य च।
न च वातकफात्मानो बलिनोऽप्यूर्ध्वजत्रुजाः।।
धूमवक्त्रकपानस्य व्याधयः स्युः शिरोगताः। च.सू. 5.27-33

– गौरव – शिरःशूल – पीनस – अर्धावभेदक – कर्णशूल – अक्षिशूल – कास – हिक्का – श्वास – गलग्रह – दन्त दौर्बल्य – श्रोत्र, घ्राण, अक्षि दोषज स्राव – पूतिघ्राण – आस्यगन्ध – दन्तशूल – अरोचक – हनुग्रह – मन्याग्रह – कण्डू – क्रिमि – पाण्डुरोग – मुख से कफ प्रसेक – वैस्वर्य – गलशुण्डिका – उपजिह्विका – खालित्य – पिञ्जरत्व – केशपात – क्षवथु – अतितन्द्रा – बुद्धि मोह – अतिनिद्रता आदि में हितकर।

प्रायोगिक धूमपान काल
(Schedule for prayogika dhumapana)

- **प्रयोगपाने तस्याष्टौ कालाः संपरिकीर्तिताः।।**
  वातश्लेष्मसमुत्क्लेशः कालेष्वेषु हि लक्ष्यते।
  स्नात्वा भुक्त्वा समुल्लिख्य क्षुत्वा दन्तान्निघृष्य च।।
  नावनाञ्जननिद्रान्ते चात्मवान् धूमपो भवेत्।
  तथा वातकफात्मानो न भवन्त्यूर्ध्वजत्रुजाः।। च.सू. 5.33-35

आठ काल–

1. स्नान के बाद	2. भोजन के बाद
3. वमन के बाद	4. छींक आने के बाद
5. दन्तधावन के बाद	6. नस्य के बाद
7. अञ्जन के बाद	8. निद्रा के बाद

धूमपान काल (Duration of dhumapana)

- **परं द्विकालपायी स्यादह्नः कालेषु बुद्धिमान्।।**
  प्रयोगे, स्नैहिके त्वेकं, वैरेच्यं त्रिचतुः पिबेत्। च.सू. 5.36-37
  - प्रायोगिक धूमपान – दिन में 2 बार
  - स्नैहिक धूमपान – दिन के 1 बार
  - वैरेचनिक धूमपान – दिन में 3 या 4 बार

सम्यक् धूमपान के लक्षण
(Features of appropriate dhumapana)

- **हृत्कण्ठेन्द्रियसंशुद्धिर्लघुत्वं शिरसः शमः।।**
  यथेरितानां दोषाणां सम्यक्पीतस्य लक्षणम्। च.सू. 5.37-38

– हृदय, कण्ठ एवं इन्द्रिय संशुद्धि – शिरो लाघवता – वृद्ध दोषों का शमन

धूमपान के उपद्रव (Complications of dhumapana)

- **बाधिर्यमान्ध्यमूकत्वं रक्तपित्तं शिरोभ्रमम्।।**
  अकाले चातिपीतश्च धूमः कुर्यादुपद्रवान्। च.सू. 5.38-39
  - बाधिर्य - आन्ध्य - मूकत्व - रक्तपित्त - शिरोभ्रम

धूमपानजन्य उपद्रवों की चिकित्सा
(Treatment of complications of dhumapana)

- **तत्रेष्टं सर्पिषः पानं नावनाञ्जनतर्पणम्।।**
  स्नैहिकं धूमजे दोषे वायुः पित्तानुगो यदि।
  शीतं तु रक्तपित्ते स्याच्छ्लेष्मपित्ते विरूक्षणम्।। च.सू. 5.39-40
  - वातपित्त अवस्था में - घृतपान - नस्य - अञ्जन - तर्पण
  - रक्तपित्त अवस्था में - शीत कर्म
  - कफपित्त अवस्था में - विरूक्षण

धूमनेत्र प्रमाण (Length of dhuma-netra)

- **चतुर्विंशतिकं नेत्रं स्वांगुलीभिर्विरेचने।।**
  द्वात्रिंशदंगुलं स्नेहे प्रयोगेऽध्यर्धमिष्यते।
  ऋजु त्रिकोषाफलितं कोलास्थ्यग्रप्रमाणितम्।।
  बस्तिनेत्रसमद्रव्यं धूमनेत्रं प्रशस्यते। च.सू. 5.49-51
  धूमनेत्र की लम्बाई : वैरेचिक धूमपान - 24 अंगुल

स्नैहिक धूमपान - 32 अंगुल
प्रायोगिक धूमपान - 36 अंगुल

नेत्र का स्वरूप :
- ऋजु - तीन कोषों से युक्त - कोलास्थि के समान छिद्र वाला

सम्यक् धूमपान के लक्षण
(Features of appropriate dhumapana)

- **यदा चोरश्च कण्ठश्च शिरश्च लघुतां व्रजेत्।।**
  कफश्च तनुतां प्राप्तः सुपीतं धूममादिशेत्। च.सू. 5.52-53
  - उरः, कण्ठ एवं शिर में लघुता - कफ की तनुता

अपीत धूमपान के लक्षण
(Features of inappropriate dhumapana)

- **अविशुद्धः स्वरो यस्य कण्ठश्च सकफो भवेत्।।**
  स्तिमितो मस्तकश्चैवमपीतं धूममादिशेत्। च.सू. 5.53-54
  - अविशुद्ध स्वर - सकफ कण्ठ - स्तिमित मस्तक

अधिक धूमपान के लक्षण
(Features of excess dhumapana)

- **तालु मूर्धा च कण्ठश्च शुष्यते परितप्यते।।**
  तृष्यते मुह्यते जन्तू रक्तं च स्रवतेऽधिकम्।

शिरश्च भ्रमतेऽत्यर्थं मूर्च्छा चास्योपजायते।।
इन्द्रियाण्युपतप्यन्ते धूमेऽत्यर्थं निषेविते। च.सू. 5.54-56

– तालु, मूर्धा एवं कण्ठ में शोष और ताप – तृष्णा – मोह – रक्तस्राव – शिरो भ्रम – अत्यर्थ मूर्च्छा – इन्द्रिय उपताप

नस्य के लाभ (Benefits of nasya - nasal medication)

- नस्यकर्म यथाकालं यो यथोक्तं निषेवते।।
न तस्य चक्षुर्न घ्राणं न श्रोत्रमुपहन्यते।
न स्युः श्वेता न कपिलाः केशाः श्मश्रूणि वा पुनः।।
न च केशाः प्रमुच्यन्ते वर्धन्ते च विशेषतः।
मन्यास्तम्भः शिरःशूलमर्दितं हनुसंग्रहः।।
पीनसार्धावभेदौ च शिरःकम्पश्च शाम्यति।
सिराः शिरःकपालानां सन्धयः स्नायुकण्डराः।।
नावनप्रीणिताश्चास्य लभन्तेऽभ्यधिकं बलम्।
मुखं प्रसन्नोपचितं स्वरः स्निग्धः स्थिरो महान्।।
सर्वेन्द्रियाणां वैमल्यं बलं भवति चाधिकम्।
न चास्य रोगाः सहसा प्रभवन्त्यूर्ध्वजत्रुजाः।।
जीर्यतश्चोत्तमांगेषु जरा न लभते बलम्। च.सू. 5.57-63

– चक्षु, घ्राण और श्रोत्र की शक्ति नष्ट न होना – केश एवं श्मश्रु का

श्वेत या कपिल वर्णीय न होना – केशशात न होना – केशवृद्धि – मन्यास्तम्भ, शिरःशूल, अर्दित, हनुसंग्रह, पीनस, अर्धावभेदक एवं शिरःकम्प का शमन – शिरःकपाल से सम्बद्ध सिरा, सन्धि, स्नायु एवं कण्डरा का तर्पण एवं बलवर्द्धन – प्रसन्न एवं उपचित मुख – स्निग्ध स्वर आदि।

अणुतैल निर्माण विधि (Preparation of Anu taila)

- चन्दनागुरुणी पत्रं दार्वीत्वङ्मधुकं बलाम्।।
प्रपौण्डरीकं सूक्ष्मैलां विडंगं बिल्वमुत्पलम्।
ह्रीबेरमभयं वन्यं त्वङ्मुस्तं सारिवां स्थिराम्।।
जीवन्तीं पृश्निपर्णीं च सुरदारु शतावरीम्।
हरेणुं बृहतीं व्याघ्रीं सुरभीं पद्मकेशरम्।।
विपाचयेच्छतगुणे माहेन्द्रे विमलेऽम्भसि।
तैलाद्दशगुणं शेषं कषायमवतारयेत्।।
तेन तैलं कषायेण दशकृत्वो विपाचयेत्।
अथास्य दशमे पाके समांशं छागलं पयः।।
दद्यादेषोऽणुतैलस्य भ्रावनीयस्य संविधिः।
अस्य मात्रां प्रयुञ्जीत तैलस्यार्धपलोन्मिताम्।।
स्निग्धस्विन्नोत्तमांगस्य पिचुना नावनैस्त्रिभिः।
त्र्यहात्त्र्यहाच्च सप्ताहमेतत् कर्म समाचरेत्।।
निवातोष्णसमाचारी हिताशी नियतेन्द्रियः।

तैलमेतत्त्रिदोषघ्नमिन्द्रियाणां बलप्रदम्।।

प्रयुञ्जानो यथाकालं यथोक्तानश्नुते गुणान्। च.सू. 5.63-71

घटक द्रव्य संख्या - 28 द्रव्य

माहेन्द्र जल - सौ गुना

अजा दुग्ध - 10वें पाक के दौरान मिलायें

विधि - दश पाक

मात्रा - ½ पल

दन्तधावन विधि (Methodology of dantadhavana)

दन्तपवन (Dantapavana - stick)

- आपोथिताग्रं द्वौ कालौ कषायकटुतिक्तकम्।।

भक्षयेद्दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन्। च.सू. 5.71-72

काल - 2 (प्रात: एवं सायम्)

दन्तधावन के लाभ (Benefits of dantadhavana)

- निहन्ति गन्धं वैरस्यं जिह्वादन्तास्यजं मलम्।।

निष्कृष्य रुचिमाद्यत्ते सद्यो दन्तविशोधनम्। च.सू. 5.72-73

- मुखदौर्गन्ध्यहर - मुखवैरस्यहर - जिह्वा, दन्त एवं मुख मल शोधक - रुचिकर

दन्तधावनार्थ उपयोगी वृक्ष (Useful plants)

- करञ्जकरवीरार्कमालतीककुभासना:।।

शस्यन्ते दन्तपवने चे चाप्येवंविधा द्रुमा:। च.सू. 5.73-74

करञ्ज	करवीर	अर्क	मालती	ककुभ	असन

जिह्वानिर्लेखन (Jihwa nirlekhana - tongue scraping)

- सुवर्णरूप्यताम्राणि त्रपुरीतिमयानि च।।

जिह्वानिर्लेखनानि स्युरतीक्ष्णान्यनृजूनि च।

जिह्वामूलगतं यच्च मलमुच्छ्वासरोधि च।।

दौर्गन्ध्यं भजते तेन तस्माज्जिह्वां विनिर्लेखेत्। च.सू. 5.74-76

द्रव्य - सुवर्ण / रौप्य / ताम्र / त्रपु / रीति / अय:

गुण - अतीक्ष्ण एवं अऋजु

अभ्यंग के लाभ (Benefits of abhyanga - massage)

- न चाभिघाताभिहतं गात्रमभ्यंगसेविन:।

विकारं भजतेऽत्यर्थं बलकर्मणि वा क्वचित्।।

सुस्पर्शोपचितांगश्च बलवान् प्रियदर्शन:।

भवत्यभ्यंगनित्यवान्नरोऽल्पजर एव च।। च.सू. 5.88-89

- अभिघात से अभिहत न होना - बलकर्म करने से विकार न होना - सुस्पर्श - उपचित अंग - बलवान् - प्रियदर्शन - अल्प जरा

शरीर परिमार्जन के लाभ

(Benefits of sharira marjana - sponging)

- दौर्गन्ध्यं गौरवं तन्द्रां कण्डूं मलमरोचकम्।
  स्वेदबीभत्सतां हन्ति शरीरपरिमार्जनम्।। च.सू. 5.93

– दौर्गन्ध्यहर – गौरवहर – तन्द्राहर – कण्डूहर – मलहर – अरोचकहर – स्वेद बीभत्सताहर

स्नान के लाभ (Benefits of snana - bathing)

- पवित्रं वृष्यमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम्।
  शरीरबलसन्धानं स्नानमोजस्करं परम्।। च.सू. 5.94

– पवित्र – वृष्य – आयुष्य – श्रम, स्वेद एवं मलहर – शरीर बल सन्धानकर – ओजस्कर

निर्मल वस्त्र धारण के लाभ (Benefits of clean clothing)

- काम्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीघ्नं प्रहर्षणम्।
  श्रीमत् पारिषदं शस्तं निर्मलाम्बरधारणम्।। च.सू. 5.95

– काम्य – यशस्य – आयुष्य – अलक्ष्मीघ्न – प्रहर्ष – श्रीमत् पारिषद

रत्न एवं आभूषण धारण के लाभ

(Benefits of jewelleries)

- धन्यं मंगल्यमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम्।
  हर्षणं काम्यमोजस्यं रत्नाभरणधारणम्।। च.सू. 5.97

– धन्य – मंगल्य – आयुष्य – श्रीमद् – व्यसनसूदन – हर्षण – काम्य – ओजस्य

पाद एवं मलमार्ग शुद्धि के लाभ

(Benefits of personal hygiene)

- मेध्यं पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकलिनाशनम्।
  पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः।। च.सू. 5.98

– मेध्य – पवित्र – आयुष्य – अलक्ष्मीनाशन – कलिनाशन

क्षौरकर्म के लाभ (Benefits of cutting hairs etc.)

- पौष्टिकं वृष्यमायुष्यं शुचि रूपविराजनम्।
  केशश्मश्रुनखादीनां कल्पनं संप्रसाधनम्।। च.सू. 5.99

– पौष्टिक – वृष्य – आयुष्य – शुचि – रूपविराजन

पादत्र धारण के लाभ (Benefits of footwears)

- चक्षुष्यं स्पर्शनहितं पादयोर्व्यसनापहम्।
  बल्यं पराक्रमसुखं वृष्यं पादत्रधारणम्।। च.सू. 5.100

– चक्षुष्य – स्पर्शनहित – पाद के कष्ट का नाशक – बल्य – पराक्रम में सुख – वृष्य

शरीर रक्षा का निर्देश

(Instructions for preversing the body)

- नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी यथा।
  स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवेत्।। च.सू. 5.103

जिस प्रकार नगर का स्वामी नगर की रक्षा में और रथ का स्वामी रथ की देख रेख में सदा तत्पर रहता है। उसी प्रकार बुद्धिमान् पुरुष को चाहिए कि वह अपने शरीर के उपर्युक्त दैनिक कृत्यों को पूर्ण करने में सावधान रहे।

• • •

6. तस्याशितीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या – 51

ऋतु विभाजन (Classification of rtus - seasons)

- इह खलु संवत्सरं षडंगमृतुविभागेन विद्यात्। तत्रादित्य-स्योदगयनमादानं च त्रीनृतूञ्छिशिरादीन् ग्रीष्मान्तान् व्यवस्येत्, वर्षादीन् पुनर्हेमन्तान्तान् दक्षिणायनं विसर्गं च।। च.सू. 6.4

ऋतु	
आदान काल / उत्तरायण	विसर्ग काल / दक्षिणायन
1. शिशिर (Extreme winter)	1. वर्षा (Rainy season)
2. वसन्त (Spring)	2. शरद् (Autumn)
3. ग्रीष्म (Summer)	3. हेमन्त (Early winter)

विसर्ग काल (Visarga kala)

- विसर्गे पुनर्वायवो नातिरूक्षाः प्रवान्ति, इतरे पुनरादाने;

सोमश्चाव्याहतबलः शिशिराभिर्भाभिरापूरयञ्जगदाप्याययति शश्वत्, अतो विसर्गः सौम्यः। च.सू. 6.5

- वर्षाशरद्धेमन्तेषु तु दक्षिणाभिमुखेऽर्के कालमार्गमेघवात-वर्षाभिहतप्रतापे, शशिनि चाव्याहतबले, माहेन्द्रसलिल-प्रशान्तसन्तापे जगति, अरूक्षा रसाः प्रवर्धन्तेऽम्ललवणमधुरा यथाक्रमं तत्र बलमुपचीयते नृणामिति।। च.सू. 6.7

आदान काल (Adana kala)

- आदानं पुनराग्नेयं; तावेतावर्कवायू सोमश्च कालस्वभावमार्ग-परिगृहीताः कालर्तुरसदोषदेहबलनिर्वृत्तिप्रत्ययभूताः समुपदिश्यन्ते। च.सू. 6.5
- तत्र रविर्भाभिराददानो जगतः स्नेहं वायवस्तीव्ररूक्षा-श्चोपशोषयन्तः शिशिरवसन्तग्रीष्मेषु यथाक्रमं रौक्ष्यमुत्पादयन्तो रूक्षान् रसांस्तिक्तकषायकटुकांश्चाभिवर्धयन्तो नृणां दौर्बल्यमावहन्ति।। च.सू. 6.6

कालानुसार बल (Bodily strength as per the seasons)

- आदावन्ते च दौर्बल्यं विसर्गादानयोर्नृणाम्।
  मध्ये मध्यबलं, त्वन्ते श्रेष्ठमग्रे च निर्दिशेत्।। च.सू. 6.8

ऋतु	बल	रसोत्पत्ति
शिशिर (Extreme winter)	उत्तम	तिक्त
वसन्त (Spring)	मध्यम	कषाय
ग्रीष्म (Summer)	अल्प	कटु
वर्षा (Rainy season)	अल्प	अम्ल
शरद् (Autumn)	मध्यम	लवण
हेमन्त (Early winter)	उत्तम	मधुर

हेमन्त ऋतुचर्या (Regimen for hemanta - early winter)

आहार – स्निग्ध, अम्ल, लवण रसात्मक आहार
– औदक और आनूप, मेद्य मांस सेवन
– बिलेशय और प्रसह मांस का सेवन
– मदिरा, शीधु, मधु का अनुपान

विहार – अभ्यंग, उत्सादन, मूर्ध्नि तैल, जेन्ताक स्वेद, आतप सेवन, उष्ण भूमिगृह एवं गर्भगृह में आवास गुरु एवं उष्ण वस्त्र धारण आदि।

शिशिर ऋतुचर्या (Regimen for shishira - late winter)

आहार – हेमन्त ऋतुवत्

विहार – हेमन्त ऋतुवत्

वसन्त ऋतुचर्या (Regimen for vasanta - spring)

आहार – कफ शोधनार्थ वमनादि पञ्चकर्म, पुराण यव, गोधूम, शरभादि मांस, निर्गद, शीधु या माध्वीक का सेवन

विहार – व्यायाम, उद्वर्तन, धूमपान, कवल, अञ्जन, सुखाम्बु से शौचविधि आदि।

ग्रीष्म ऋतुचर्या (Regimen for grihma - summer)

आहार – मधुर, शीत, द्रव, स्निग्ध पदार्थ का सेवन
– शीतल एवं शर्करा युक्त मन्थ
– जांगल, मृग पक्षी आदि का मांसरस, घृत, क्षीर, शालि अन्न

विहार – शीतल गृह, रात्रि में चांदनी एवं प्रवात युक्त स्थान में शयन आदि।

वर्षा ऋतुचर्या (Regimen for varsha - rainy season)

आहार – सभी साधारण विधियाँ
– मधु का उपयोग
– अम्ल, लवण, स्नेह युक्त भोजन
– पुराण यव, गोधूम आदि, जांगल मांस, यूष आदि
– माध्वीक, अरिष्ट, अम्बु, माहेन्द्र जल आदि

विहार – प्रघर्ष, उद्वर्तन, स्नान, गन्ध माल्यादि का धारण
क्लेद विरहित स्थान पर आवास

शरद् ऋतुचर्या (Regimen for sharat - autumn)

आहार – मधुर, लघु, शीतल, तिक्त, पित्तप्रशमन आहार
– लाव, कपिञ्जल, एण आदि मांस, शाली, यव, गोधूम आदि
– तिक्त द्रव्यों से सिद्ध घृत
– हंसोदक का सेवन

विहार – पुष्पों की माला, निर्मल वस्त्रादि
– विरेचन, रक्तमोक्षण आदि।

षड् ऋतु सारांश

ऋतु	मास (Months)	अयन (Solstice)	English Months
शिशिर (Extreme winter)	माघ – फाल्गुन	उत्तरायण	January - February, February - March
वसन्त (Spring	चैत्र – वैशाख	उत्तरायण	March - April April - May
ग्रीष्म (Summer)	ज्येष्ठ – आषाढ़	उत्तरायण	May - June June - July

ऋतु	मास (Months)	अयन (Solstice)	English Months
वर्षा (Rainy-Season)	श्रावण - भाद्रपद	दक्षिणायन	July - August August - Sep.
शरद् (Autumn)	अश्विन - कार्तिक	दक्षिणायन	Sep. - Oct. Oct. - Nov.
हेमन्त (Early winter)	मार्गशीर्ष - पौष	दक्षिणायन	Nov. - Dec. Dec. - Jan.

हंसोदक (Hamsodaka)

- दिवा सूर्यांशुसंतप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम्।
  कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम्।।
  हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं शुचि।
  स्नानपानावगाहेषु हितमम्बु यथाऽमृतम्।। च.सू. 6.46-47

दिन में सूर्य की किरणों से तपा हुआ, रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से शीतल, समय के परिपाक से सुपक्व अतएव निर्दोष जल और अगस्त्य के उदय होने के कारण जो विषरहित हो गया हो उसे हंसोदक कहते हैं। शरद् ऋतु में यह जल निर्मल एवं पवित्र होता है तथा इसका प्रयोग स्नान, पान एवं अवगाहन के लिए अमृत के समान है।

ओक सात्म्य (Oka satmya - Homologation)

- इत्युक्तमृतुसात्म्यं यच्चेष्टाहारव्यपाश्रयम्।
  उपशेते यदौचित्यादोकःसात्म्यं तदुच्यते।। च.सू. 6.49

आहार एवं विहार का सतत सेवन करने से उपशय अर्थात् सुख की प्राप्ति होती है। यह ओकसात्म्य है।

सात्म्य की परिभाषा
(Definition of satmya - habituation)

- देशानामामयानां च विपरीतगुणं गुणैः।
  सात्म्यमिच्छन्ति सात्म्यज्ञाश्चेष्टितं चाद्यमेव च।। च.सू. 6.50

• • •

7. नवेगान्धारणीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या - 66

अधारणीय वेग (Urges not to be suppressed)

- न वेगान् धारयेद्धीमाञ्जातान् मूत्रपुरीषयोः।
  न रेतसो न वातस्य न छर्द्याः क्षवथोर्न च।।
  नोद्गारस्य न जृम्भाया न वेगान् क्षुत्पिपासयोः।
  न बाष्पस्य न निद्राया निःश्वासस्य श्रमेण च।। च.सू. 7.3-4

1. मूत्र (urine)
2. पुरीष (faces)
3. रेतस् (ejaculation)
4. वात (flatus)
5. छर्दि (vomiting)
6. क्षवथु (sneeze)

7. उद्गार (belching)
8. जृम्भा (yawning)
9. क्षुत् (hunger)
10. पिपासा (thirst)
11. बाष्प (lacrimation)
12. निद्रा (sleep)
13. श्रमज निःश्वास (exertional dyspnea)

मूत्र वेग (Urge for micturition)

वेग धारणजन्य विकार (Diseases)

- बस्तिमेहनयोः शूलं मूत्रकृच्छ्रं शिरोरुजा।
  विनामो वंक्षणानाहः स्याल्लिंगं मूत्रनिग्रहे।। च.सू. 7.6

चिकित्सा (Treatment)

- स्वेदावगाहनाभ्यंगान् सर्पिषश्चावपीडकम्।
  मूत्रे प्रतिहते कुर्यात्त्रिविधं बस्तिकर्म च।। च.सू. 7.7

पुरीष वेग (Urge for defecation)

वेग धारणजन्य विकार (Diseases)

- पक्वाशयशिरःशूलं वातवर्चोऽप्रवर्तनम्।
  पिण्डिकोद्वेष्टनाध्मानं पुरीषे स्याद्विधारिते।। च.सू. 7.8

चिकित्सा (Treatment)

- स्वेदाभ्यंगावगाहाश्च वर्तयो बस्तिकर्म च।
  हितं प्रतिहते वर्चस्यन्नपानं प्रमाथि च।। च.सू. 7.9

शुक्र वेग (Urge for semen)

वेग धारणजन्य विकार (Diseases)

- मेढ्रे वृषणयोः शूलमंगमर्दो हृदि व्यथा।
  भवेत् प्रतिहते शुक्रे विबद्धं मूत्रमेव च।। च.सू. 7.10

चिकित्सा (Treatment)

- तत्राभ्यंगोऽवगाहश्च मदिरा चरणायुधाः।
  शालिः पयो निरूहश्च शस्तं मैथुनमेव च।। च.सू. 7.11

अधोवायु वेग (Urge for flatus)

वेग धारणजन्य विकार (Diseases)

- संगो विण्मूत्रवातानामाध्मानं वेदना क्लमः।
  जठरे वातजाश्चान्ये रोगाः स्युर्वातनिग्रहात्।। च.सू. 7.12

चिकित्सा (Treatment)

- स्नेहस्वेदविधिस्तत्र वर्तयो भोजनानि च।
  पानानि बस्तयश्चैव शस्तं वातानुलोमनम्।। च.सू. 7.13

छर्दि वेग (Urge for vomiting)

वेग धारणजन्य विकार (Diseases)

- कण्डूकोठारुचिव्यंगशोथपाण्ड्वामयज्वराः।
  कुष्ठहृल्लासवीसर्पाश्छर्दिनिग्रहजा गदाः।। च.सू. 7.14

चिकित्सा (Treatment)

- भुक्त्वा प्रच्छर्दनं धूमो लंघनं रक्तमोक्षणम्।
  रूक्षान्नपानं व्यायामो विरेकश्चात्र शस्यते।। च.सू. 7.15

क्षवथु वेग (Urge for sneezing)

वेग धारणजन्य विकार (Diseases)

- मन्यास्तम्भः शिरःशूलमर्दितार्धावभेदकौ।
  इन्द्रियाणां च दौर्बल्यं क्षवथोः स्याद्विधारणात्।। च.सू. 7.16

चिकित्सा (Treatment)

- तत्रोर्ध्वजत्रुकेऽभ्यंगः स्वेदो धूमः सनावनः।
  हितं वातघ्नमाद्यं च घृतं चौत्तरभक्तिकम्।। च.सू. 7.17

उद्गार वेग (Urge for belching)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and its treatment)

- हिक्का श्वासोऽरुचिः कम्पो विबन्धो हृदयोरसोः।
  उद्गारनिग्रहात्तत्र हिक्कायास्तुल्यमौषधम्।। च.सू. 7.18

जृम्भा वेग (Urge for yawning)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and treatment)

- विनामाक्षेपसंकोचाः सुप्तिः कम्पः प्रवेपनम्।
  जृम्भाया निग्रहात्तत्र सर्वं वातघ्नमौषधम्।। च.सू. 7.19

क्षुधा वेग (Urge for hunger)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and treatment)

- कार्श्यदौर्बल्यवैवर्ण्यमंगमर्दोऽरुचिर्भ्रमः।
  क्षुद्वेगनिग्रहात्तत्र स्निग्धोष्णं लघु भोजनम्।। च.सू. 7.20

पिपासा वेग (Urge for thirst)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and treatment)

- कण्ठास्यशोषो बाधिर्यं श्रमः सादो हृदि व्यथा।
  पिपासानिग्रहात्तत्र शीतं तर्पणमिष्यते।। च.सू. 7.21

बाष्प वेग (Urge for tears)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and treatment)

- प्रतिश्यायोऽक्षिरोगश्च हृद्रोगश्चारुचिर्भ्रमः।
  बाष्पनिग्रहणात्तत्र स्वप्नो मद्यं प्रियाः कथाः।। च.सू. 7.22

निद्रा वेग (Urge for sleep)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and treatment)

- जृम्भाऽंगमर्दस्तन्द्रा च शिरोरोगोऽक्षिगौरवम्।
  निद्राविधारणात्तत्र स्वप्नः संवाहनानि च।। च.सू. 7.23

श्रमज निःश्वास वेग (Urge for dyspnea on exertion)

वेग धारणजन्य विकार एवं चिकित्सा
(Diseases and treatment)

- गुल्महृद्रोगसंमोहाः श्रमनिःश्वासधारणात्।
  जायन्ते तत्र विश्रामो वातघ्न्यश्च क्रिया हिताः।। च.सू. 7.24

वेग	वेग धारणजन्य विकार	चिकित्सा
मूत्र	-बस्ति एवं मेहन शूल-मूत्रकृच्छ्र -शिरोरुक्-विनाम-वंक्षण में आनाह	-स्वेदन-अवगाहन-अभ्यंग-अवपीड-सर्पिष्पान-त्रिविध बस्तिकर्म
पुरीष	-पक्वाशय एवं शिरःशूल-वायु एवं पुरीष का अप्रवर्तन-पिण्डिकोद्वेष्टन-आध्मान	-स्वेद-अभ्यंग-अवगाह-वर्ति प्रयोग-बस्तिकर्म-प्रमाथि अन्नपान
शुक्र	- मेढ्र एवं वृषण में शूल-अंग-मर्द-हृद्व्यथा-मूत्र में विबद्धता	- अभ्यंग-अवगाह-मदिरा पान-चरणायुध, शालि एवं दुग्ध का सेवन-मैथुन

वेग	वेग धारणजन्य विकार	चिकित्सा
अपान-वायु	- पुरीष, मूत्र एवं वात का विबन्ध-आध्मान-जठर वेदना-क्लम- वातज रोग	-स्नेहन-स्वेदन-वर्ति प्रयोग-वातानुलोमक अन्न पान-बस्ति प्रयोग
छर्दि	-कण्डू-कोठ-अरुचि-व्यंग-शोथ-पाण्डु-ज्वर-कुष्ठ-हृल्लास-विसर्प	- भोजन कराकर वमन-धूमपान-लंघन-रक्तमोक्षण-रूक्ष अन्नपान-व्यायाम-विरेचन
क्षवथु	-मन्यास्तम्भ-शिर:शूल-अर्दित-अर्धावभेदक-इन्द्रिय दौर्बल्य	-जत्रु ऊर्ध्व क्षेत्र में अभ्यंग एवं स्वेदन-धूमपान-नस्य-वातघ्न विधि-उत्तरभक्तिक घृत पान
उद्गार	-हिक्का-श्वास-अरुचि-कम्प-हृदय एवं उरस् में विबन्ध	- हिक्का वत् चिकित्सा
जृम्भा	-विनाम-आक्षेप-संकोच-सुप्ति-कम्प-प्रवेपन	- सर्व वातघ्न औषधि
क्षुधा	-कार्श्य-दौर्बल्य-वैवर्ण्य-अंगमर्द-अरुचि-भ्रम	-स्निग्ध, उष्ण एवं लघु भोजन
पिपासा	- कण्ठ एवं मुख में शोष-बाधिर्य-श्रम-साद-हृद्व्यथा	- शीत एवं तर्पण चिकित्सा
बाष्प	-प्रतिश्याय-अक्षिरोग-हृद्रोग-अरुचि-भ्रम	- स्वप्न-मद्य-प्रिय कथा श्रवण

वेग	वेग धारणजन्य विकार	चिकित्सा
निद्रा	- जृम्भा-अंगमर्द-तन्द्रा-शिरो रोग-अक्षि गौरव	- स्वप्न-संवाहन
श्रमज नि:श्वास	- गुल्म-हृद्रोग-सम्मोह	- विश्राम-वातघ्न क्रिया

धारणीय वेग (Urges that should be suppressed)

- **इमांस्तु धारयेद्वेगान् हितार्थी प्रेत्य चेह च।**
  साहसानामशस्तानां मनोवाक्कायकर्मणाम्।। च.सू. 7.26

धारणीय मानसिक वेग

(Suppressible urges pertaining to mind)

- **लोभशोकभयक्रोधमानवेगान् विधारयेत्।**
  नैर्लज्ज्येर्ष्यातिरागाणामभिध्यायाश्च बुद्धिमान्।। च.सू. 7.27

धारणीय वाचिक वेग

(Suppressible urges pertaining to speech)

- **परुषस्यातिमात्रस्य सूचकस्यानृतस्य च।**
  वाक्यस्याकालयुक्तस्य धारयेद्वेगमुत्थितम्।। च.सू. 7.28

धारणीय शारीरिक वेग

(Suppressible urges pertaining to body)

- **देहप्रवृत्तिर्या काचिद्विद्यते परपीडया।**
  स्त्रीभोगस्तेयहिंसाद्या तस्यावेगान्विधारयेत्।। च.सू. 7.29

धारणीय मानसिक वेग	– लोभ – शोक – भय – क्रोध – मान – नैर्लज्य – ईर्ष्या – अतिराग – अभिध्या
धारणीय वाचिक वेग	– परुष – अत्यधिक – सूचक – अनृत – अकाल वचन
धारणीय शारीरिक वेग	– परपीडा – परस्त्रीभोग – स्तेय – हिंसा

व्यायाम (Vyayama - exercise)

परिभाषा (Definition)

- **शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धिनी।**
  देहव्यायामसंख्याता मात्रया तां समाचरेत्।। च.सू. 7.31

शरीर की जो चेष्टा मन को प्रिय होते हुए स्थिरता एवं बल का वर्धन करती है वह व्यायाम है।

लाभ (Benefits)

- **लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं दुःखसहिष्णुता।**
  दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।। च.सू. 7.32

– लाघव – कर्म सामर्थ्य – स्थैर्य – दुःख सहिष्णुता
– दोषक्षय – अग्नि वृद्धि

अधिक व्यायाम से हानि (Ill - effects of excessive exercise)

- **श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा रक्तपित्तं प्रतामकः।**
  अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते।। च.सू. 7.33

– श्रम – क्लम – क्षय – तृष्णा – रक्तपित्त
– प्रतामक – कास – ज्वर – छर्दि

लक्षण (Features)

- **स्वेदागमः श्वासवृद्धिर्गात्राणां लाघवं तथा।**
  हृदयाद्युपरोधश्च इति व्यायामलक्षणम्।। च.सू. 7.33(1)

– स्वेदागम – श्वास वृद्धि – गात्र लाघव – हृदयाद्युपरोध

हिताऽहित का सेवन एवं उसकी त्याग विधि (Methodology for customization of apt and inapt diet)

- **उचितादहिताद्धीमान् क्रमशो विरमेन्नरः।**
  हितं क्रमेण सेवेत क्रमश्चात्रोपदिश्यते।।
  प्रक्षेपापचये ताभ्यां क्रमः पादांशिको भवेत्।
  एकान्तरं ततश्चोर्ध्वं द्व्यन्तरं त्र्यन्तरं तथा।। च.सू. 7.36-37

विवेकशील पुरुष को चाहिये कि वह उचित किन्तु अहित आहार-विहारों से क्रमसः अपने को पृथक् करे और सर्वथा हितकर आहार-विहारों का सेवन प्रारम्भ करे। प्रक्षेप और अपचय के लिए पादांशिक क्रम का आश्रय लेना चाहिए। तदनन्तर एक दिन, दो दिन तथा तीन दिन का अन्तर देकर अहित पदार्थों के त्याग तथा हितकर पदार्थों की वृद्धि का क्रम रखें।

देह प्रकृति (Deha prakrti - personality)

- समपित्तानिलकफाः केचिद्गर्भादि मानवाः।
  दृश्यन्ते वातलाः केचित्पित्तलाः श्लेष्मलास्तथा।।
  तेषामनातुराः पूर्वे वातलाद्याः सदातुराः।
  दोषानुशयिता ह्येषां देहप्रकृतिरुच्यते।। च.सू. 7.39-40

सम प्रकृति	अनातुर
वातज प्रकृति	सदातुर
पित्तज प्रकृति	सदातुर
कफज प्रकृति	सदातुर

मलायन (Malayana - routes of waste evacuation)

- द्वे अधः सप्त शिरसि खानि स्वेदमुखानि च।
  मलायनानि बाध्यन्ते दुष्टैर्मात्राधिकैर्मलैः।। च.सू. 7.42

कुल संख्या – 9

- अधोभाग में – 2
- शिरः प्रदेश में – 7

दोष निर्हरण काल (Schedule for ridding of doshas)

- माधवप्रथमे मासि नभस्यप्रथमे पुनः।
  सहस्यप्रथमे चैव हारयेद्दोषसंचयम्।। च.सू. 7.46

1. माधव के प्रथम मास (चैत्र) में
2. नभस्य के प्रथम मास (श्रावण) में
3. सहस्य के प्रथम मास (मार्गशीर्ष) में

रसायन एवं वाजीकरण चिकित्सा के पूर्वकर्म (Pre-operative measures for rasayana etc.)

- स्निग्धस्विन्नशरीराणामूर्ध्वं चाधश्च नित्यशः।
  बस्तिकर्म ततः कुर्यान्नस्यकर्म च बुद्धिमान्।।
  यथाक्रमं यथायोग्यमत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत्।
  रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगांश्च कालवित्।। च.सू. 7.47-48

– स्नेहन – स्वेदन – वमन – विरेचन
– बस्तिकर्म – नस्य

आगन्तुज रोग के कारण (Causes for agantu rogas)

- ये भूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसंभवाः।
  नृणामागन्तवो रोगाः प्रज्ञा तेष्वपराध्याति।। च.सू. 7.51

– भूत – विष – वायु – अग्नि – संप्रहार – प्रज्ञापराध

मानस रोग के कारण (Causes for mental diseases)

- ईर्ष्याशोकभयक्रोधमानद्वेषादयश्च ये।
  मनोविकारास्तेऽप्युक्ताः सर्व प्रज्ञापराधजाः।। च.सू. 7.52

– ईर्ष्या – शोक – भय – क्रोध – मान – द्वेष आदि – प्रज्ञापराध

आगन्तुज रोगों के अनुत्पत्ति के उपाय

(Preventive measures for agantu diseases)

- त्यागः प्रज्ञापराधानामिन्द्रियोपशमः स्मृतिः।
  देशकालात्मविज्ञानं सद्वृत्तस्यानुवर्तनम्।।
  आगन्तूनामनुत्पत्तावेष मार्गो निदर्शितः।
  प्राज्ञः प्रागेव तत् कुर्याद्धितं विद्याद्यदात्मनः।। च.सू. 7.53–54

– प्रज्ञापराध का त्याग – इन्द्रिय उपशम – स्मृति – देश, काल और आत्म का विज्ञान – सद्वृत्त का अनुवर्तन

दधि सेवन के नियम (Rules for consuming curd)

- न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम्।
  नामुद्गयूषं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकैर्विना।। च.सू. 7.61

– रात्रि में – घृत एवं शर्करा मिलाये बिना – मुद्गयूष मिलाये बिना – मधु के बिना – उष्ण करके – आमलकी मिलाये बिना दधि सेवन नहीं करना चाहिए।

• • •

8. इन्द्रियोपक्रमणीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या–34

इन्द्रिय पञ्च पञ्चक (Pancha-panchaka of indriyas)

इन्द्रिय	इन्द्रिय द्रव्य	इन्द्रिय अधिष्ठान	इन्द्रिय अर्थ	इन्द्रिय बुद्धि
श्रोत्र	आकाश	कर्ण	शब्द	शब्द ज्ञान
स्पर्शन	वायु	त्वक्	स्पर्श	स्पर्श ज्ञान
चक्षु	अग्नि	नेत्र	रूप	रूप ज्ञान
रसना	जल	जिह्वा	रस	रस ज्ञान
घ्राण	पृथिवी	नासिका	गन्ध	गन्ध ज्ञान

मन (Manas - mind)

- अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्त्वसंज्ञकं, 'चेतः' इत्याहुरेके, तदर्थात्मसंपदायत्तचेष्टं चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्।। च.सू. 8.4

अध्यात्म द्रव्य (Adhyatma dravyas)

- मनो मनोर्थो बुद्धिरात्मा चेत्यध्यात्मद्रव्यगुणसंग्रहः शुभाशुभ-प्रवृत्तिनिवृत्तिहेतुश्च, द्रव्याश्रितं च कर्म; यदुच्यते क्रियेति।।

च.सू. 8.13

मन	मन के अर्थ	बुद्धि	आत्मा

इन्द्रिय का ज्ञान (Knowledge of indriyas)

- तत्रानुमानगम्यानां पञ्चमहाभूतविकारसमुदायात्मकानामपि सतामिन्द्रियाणां तेजश्चक्षुषि, खं श्रोत्रे, घ्राणे क्षितिः, आपो रसने, स्पर्शनेऽनिलो विशेषेणोपपद्यते। च.सू. 8.14

अनुमान द्वारा जानने योग्य सभी ज्ञानेन्द्रियां यद्यपि पञ्चमहाभूतों के विकार के ही समुदाय रूप हैं। फिर भी विशेष रूप से नेत्र में तेज, कर्ण में आकाश, नासिका में पृथिवी, रसना में जल और स्पर्शन में वायु रहता है।

सद्वृत्त के 2 लाभ (Two benefits of sadvrtta)

- तद्द्वयनुतिष्ठन् युगपत् संपादयत्यर्थद्वयमारोग्यमिन्द्रियविजयं चेति; तत् सद्वृत्तमखिलेनोपदेक्ष्यामोऽग्निवेश! च.सू. 8.18

1. आरोग्य
2. इन्द्रिय विजय

कतिपय प्रमुख सद्वृत्त (Some important sadvrttas)

1. दोनों समय स्नान एवं सन्ध्या करें।

2. मलायनों एवं पैरों को स्वच्छ रखें।
3. प्रत्येक पक्ष में तीन बार केश, श्मश्रु, लोम और नखों को काटें।
4. स्वयं पहले बोलने का अभ्यास रखें।
5. हेतु की ईर्ष्या करें, न कि फल की।
6. सामने चार हाथ की दूरी तक देखकर चलें।
7. झूठ न बोलें।
8. गर्भ को मारनेवाले, क्षुद्र स्वभाव वाले और दुष्ट पुरुषों के साथ न बैठें।
9. शब्दयुक्त अपानवायु का त्याग न करें।
10. महान् पुरुषों से विरोध न करें और नीच पुरुषों की सेवा करें।
11. दधि, मधु, लवण, सक्तु और घृत को छोड़कर अन्य भोज्य पदार्थ को कुछ न कुछ मात्रा में भोजन की थाली में छोड़ देना चाहिए।
12. रात्रि में दधि सेवन न करें।
13. स्त्रियों का अपमान न करें और न उनका अधिक विश्वास करें; स्त्रियों को गुप्त बातें न सुनायें और न उनको पूरा अधिकार दें।
14. अधिक समय का त्याग न करें।
15. सन्ध्या काल में अभ्यवहार, अध्ययन, स्त्री और स्वप्न का सेवन न करें।
16. कार्य के लिए निश्चित् समय का अतिक्रमण न करें।
17. ब्रह्मचर्य, ज्ञान, दान, मैत्री, कारुण्य, हर्ष, उपेक्षा और प्रशम (शान्ति) में सब तत्पर रहें।

• • •

9. खुड्डाकचतुष्पादाध्याय

कुल श्लोक संख्या–28

चतुष्पाद (Chatushpada - four limbs of treatment)

- भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्।
  गुणवत् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये।। च.सू. 9.3

चतुष्पाद			
भिषक्	द्रव्य	उपस्थाता	रोगी

विकार एवं प्रकृति (Vikara & Prakrti)

- विकारो धातुवैषम्यं, साम्यं प्रकृतिरुच्यते।
  सुखसंज्ञकमारोग्यं, विकारो दुःखमेव च।। च.सू. 9.4
  - विकार → धातुवैषम्य
  - प्रकृति → धातुसाम्य
  - आरोग्य → सुखसंज्ञक
  - विकार → दुःख संज्ञक

चिकित्सा की परिभाषा

(Definition of Chikitsa - treatment)

- चतुर्णां भिषगादीनां शस्तानां धातुवैकृते।
  प्रवृत्तिर्धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते।। च.सू. 9.5

धातुओं के विकृत हो जाने पर प्रशस्त वैद्य आदि चार पादों की धातुओं को समान करने के लिए जो क्रिया की जाती है, उसे चिकित्सा कहते हैं।

चिकित्सक के गुण

(Qualities of Chikitsaka - physician)

- श्रुते पर्यवदातत्वं बहुशो दृष्टकर्मता।
  दाक्ष्यं शौचमिति ज्ञेयं वैद्ये गुणचतुष्टयम्।। च.सू. 9.6

द्रव्य के गुण (Qualities of Dravya - drugs)

- बहुता तत्रयोग्यत्वमनेकविधकल्पना।
  संपच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते।। च.सू. 9.7

परिचारक के गुण

(Qualities of Paricharaka - attendant)

- उपचारज्ञता दाक्ष्यमनुरागश्च भर्तरि।
  शौचं चेति चतुष्कोऽयं गुणः परिचरे जने।। च.सू. 9.8

रोगी के गुण (Qualities of Rogi - patient)

- स्मृतिर्निर्देशकारित्वमभीरुत्वमथापि च।
  ज्ञापकत्वं च रोगाणामातुरस्य गुणाः स्मृताः।। च.सू. 9.9

तालिका-चतुष्पाद के गुण
(Qualities of four limbs of Treatment)

चिकित्सक	द्रव्य	परिचारक	रोगी
शास्त्र का परिज्ञान	बहुता	उपचारज्ञता	स्मृतिवान्
बहुदृष्टकर्मता	योग्यता	दक्षता	निर्देशकारिता
दक्षता	अनेकविध कल्पना	भर्तृ अनुराग	अभीरुता
शौच	सम्पत्	शौच	ज्ञापकता

प्राणाभिसर वैद्य (Pranabhisara Vaidya)

- तस्माच्छास्त्रेऽर्थविज्ञाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने।
  भिषक् चतुष्टये युक्तः प्राणाभिसर उच्यते।। च.सू. 9.18
  - अर्थविज्ञान युक्त -कर्मदर्शन युक्त -भिषक् चतुष्टय युक्त

राजार्ह भिषक् (Court physician)

- हेतौ लिंगे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे।
  ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजार्हो भिषक्तमः।। च.सू. 9.19

हेतु में, लिंग में, रोगों को शान्त करने में और पुनः उत्पन्न न होने देने में जो पूर्ण ज्ञान रखता है, वह सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक ही राजार्ह होता है।

उत्तम चिकित्सक के गुण (Qualities of good physician)

- विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिस्तत्परता क्रिया।
  यस्यैते षड्गुणास्तस्य न साध्यमतिवर्तते।।
  विद्या मतिः कर्मदृष्टिरभ्यासः सिद्धिराश्रयः।
  वैद्यशब्दाभिनिष्पत्तावलमेकैकमप्यतः।। च.सू. 9.21-22
  - विद्या -वितर्क -विज्ञान -स्मृति
  - तत्परता -क्रिया

वैद्य की 4 वृत्तियां (Four disciplines of a physician)

- मैत्री कारुण्यमार्तेषु शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम्।
  प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधेति।। च.सू. 9.26
  - मैत्री -कारुण्य -आर्तेषु प्रीति -शक्येरुपेक्षणम्

• • •

10. महाचतुष्पादाध्याय

कुल श्लोक संख्या–24

महत्त्वपूर्ण श्लोक (Important shlokas)

- परीक्ष्यकारिणो हि कुशला भवन्ति। च.सू. 10.5

रोगों के भेद (Classification of diseases)

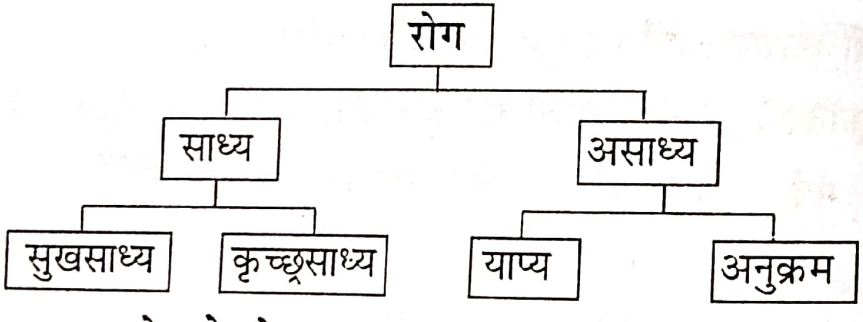

साध्य रोग के भेद (Types of curable diseases)

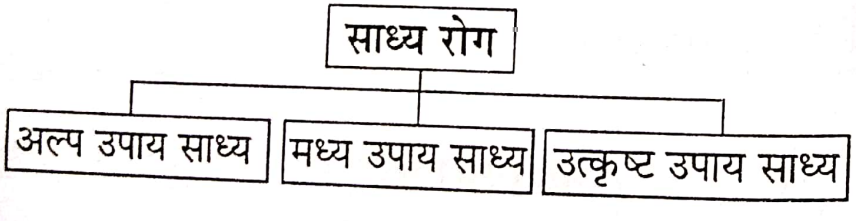

सुखसाध्य रोग के लक्षण (Features of sukhasadhya roga)

- हेतवः पूर्वरूपाणि रूपाण्यल्पानि यस्य च।
  न च तुल्यगुणो दूष्यो न दोषः प्रकृतिर्भवेत्।।
  न च कालगुणस्तुल्यो न देशो दुरुपक्रमः।
  गतिरेका नवत्वं च रोगस्योपद्रवो न च।।
  दोषश्चैकः समुत्पत्तौ देहः सर्वौषधक्षमः।
  चतुष्पादोपपत्तिश्च सुखसाध्यस्य लक्षणम्।। च.सू. 10.11–13
  - अल्प हेतु, पूर्वरूप एवं रूप वाला
  - दोष एवं दूष्य तुल्य गुण वाले न हों
  - रोग तथा विकृत दोष के गुण–काल के गुणों के अनुसार न हों
  - दुरुपक्रम देश में स्थित न हो
  - एक मार्ग में स्थित रोग
  - नवीन रोग
  - उपद्रव विरहित रोग
  - एक दोषज रोग
  - सर्वौषधक्षम देह
  - चतुष्पाद सुलभ हों।

कृच्छ्रसाध्य रोग के लक्षण
(Features of krcchra sadhya roga)

- निमित्तपूर्वरूपाणां रूपाणां मध्यमे बले।
  कालप्रकृतिदूष्याणां सामान्येऽन्यतमस्य च।।
  गर्भिणीवृद्धबालानां नात्युपद्रवपीडितम्।
  शस्त्रक्षाराग्निकृत्यानामनवं कृच्छ्रदेशजम्।।
  विद्यादेकपथं रोगं नातिपूर्णचतुष्पदम्।
  द्विपथं नातिकालं वा कृच्छ्रसाध्यं द्विदोषजम्।। च.सू. 10.14-16
  - निमित्त, पूर्वरूप और रूप का मध्यम बल होना
  - काल, प्रकृति और दूष्य में किसी एक का दोष के समान होना
  - गर्भिणी, वृद्ध, बाल रोगी
  - उपद्रव से पीड़ित न होना
  - शस्त्र, क्षार, अग्नि द्वारा सिद्ध रोग
  - अनव रोग
  - कृच्छ्रदेश में स्थित रोग
  - एक पथ में आश्रित रोग
  - चिकित्सा चतुष्पाद पूर्ण न होना
  - द्विपथ में स्थित रोग
  - नातिकाल रोग
  - द्विदोषज रोग

याप्य रोग के लक्षण (Features of yapya roga)

- शेषत्वादायुषो याप्यमसाध्यं पथ्यसेवया।
  लब्धाल्पसुखमल्पेन हेतुनाऽऽशुप्रवर्तकम्।।
  गम्भीरं बहुधातुस्थं मर्मसन्धिसमाश्रितम्।
  नित्यानुशायिनं रोगं दीर्घकालमवस्थितम्।।
  विद्याद्द्विदोषजम्। च.सू. 10.17-19
  - आयु शेष होना
  - पथ्य सेवन से सुख पाकर पुनः अपथ्य सेवन से रोग का बढ़ जाना
  - गम्भीर धातुओं में स्थित रोग
  - बहुत सारे धातुओं में स्थित रोग
  - मर्म एवं सन्धि में आश्रित रोग
  - नित्य अनुशायी रोग
  - दीर्घकाल तक स्थित रोग
  - द्विदोषज रोग

प्रत्याख्येय रोग के लक्षण
(Features of pratyakhyeya roga)

- तद्वत् प्रत्याख्येयं त्रिदोषजम्।
  क्रियापथमतिक्रान्तं सर्वमार्गानुसारिणम्।।

औत्सुक्यारतिसंमोहकरमिन्द्रियनाशनम्।
दुर्बलस्य सुसंवृद्धं व्याधिं सारिष्टमेव च।। च.सू. 10.19-20

- त्रिदोषज रोग
- चिकित्सा पथ का अतिक्रान्त होना
- सभी रोगमार्गों में आश्रित रोग
- औत्सुक्य, अरति, संमोहकर रोग
- इन्द्रिय नाश
- दुर्बल रोगी
- संवृद्ध एवं अरिष्ट से युक्त रोग।

• • •

11. तिस्त्रैषणीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-65

त्रिविध एषणा (Three basic desires of life)

- इह खलु पुरुषेणानुपहतसत्त्वबुद्धिपौरुषपराक्रमेण हितमिह चामुष्मिंश्च लोके समनुपश्यता तिस्र एषणाः पर्येष्टव्या भवन्ति। तद्यथा-प्राणैषणा, धनैषणा, परलोकैषणेति।। च.सू. 11.3

एषणा		
प्राणैषणा	धनैषणा	परलोकैषणा

प्रत्यक्ष भावों की अल्पता (Limited objects of perception)

- प्रत्यक्षं ह्यल्पम्; अनल्पमप्रत्यक्षमस्ति, यदागमानुमानयुक्तिभिरुपलभ्यते; यैरेव तावदिन्द्रियैः प्रत्यक्षमुपलभ्यते, तान्येव सन्ति चाप्रत्यक्षाणि।। च.सू. 11.7

प्रत्यक्ष ज्ञान बहुत अल्प होता है और अप्रत्यक्ष ज्ञान अनल्प अर्थात् अत्यधिक होते हैं।

प्रत्यक्ष बाधक 8 भाव

(Eight factors obstructing perception)

- सतां च रूपाणामतिसन्निकर्षादतिविप्रकर्षादावरणात् करण-दौर्बल्यान्मनोनवस्थानात् समानाभिहारादभिभवादति-सौक्ष्म्याच्च प्रत्यक्षानुपलब्धिः; तस्मादपरीक्षितमेतदुच्यते-प्रत्यक्षमेवास्ति, नान्यदस्तीति।। च.सू. 11.8

1. अतिसन्निकर्षात् 2. अतिविप्रकर्षात्
3. आवरणात् 4. करणदौर्बल्यात्
5. मनोऽनवस्थानात् 6. समानाभिहारात्
7. अभिभवात् 8. अतिसौक्ष्म्यात्

चतुर्विध परीक्षा

(Four types of pariksha - examination tools)

- द्विविधमेव खलु सर्वं सच्चासच्च; तस्य चतुर्विधा परीक्षा-आप्तोपदेशः, प्रत्यक्षम्, अनुमानं, युक्तिश्चेति।। च.सू. 11.17

चतुर्विधा परीक्षा			
आप्तोपदेश	प्रत्यक्ष	अनुमान	युक्ति

आप्त का लक्षण (Features of apta - authority)

- आप्तास्तावत् -

रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तास्तपोज्ञानबलेन ये।
येषां त्रिकालममलं ज्ञानमव्याहतं सदा।।
आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्।
सत्यं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः।। च.सू. 11.18-19

जो अपनी तपस्या और ज्ञान के बल से रज एवं तम दोषों से निःशेषरूप से निर्मुक्त हैं, जिनको भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल का ज्ञान है; जिनका ज्ञान सदा अव्याहत (आकुण्ठित) है, वे ही आप्त, शिष्ट तथा विबुद्ध हैं। उनके वचन निःसन्देह सत्य हैं। कारण यह है, कि वे रजोगुण तथा तमोगुण इन दोनों दोषों से निर्मुक्त होने के कारण असत्य भाषण क्यों करेंगे।

प्रत्यक्ष का लक्षण (Features of pratyaksha - perception)

- आत्मेन्द्रियमनोर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते।
  व्यक्ता तदात्वे या बुद्धिः प्रत्यक्षं सा निरुच्यते।। च.सू. 11.20

आत्मा, इन्द्रिय (ज्ञानेन्द्रिय), मन तथा इन्द्रियार्थों (शब्दादि) के सन्निकर्ष से जो बुद्धि (ज्ञान) व्यक्त होती है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं।

अनुमान का लक्षण (Features of anumana - inference)

- प्रत्यक्षपूर्वं त्रिविधं त्रिकालं चानुमीयते।
  वह्निर्निगूढो धूमेन मैथुनं गर्भदर्शनात्।।

एवं व्यवस्यन्त्यतीतं बीजात् फलमनागतम्।
दृष्ट्वा बीजात् फलं जातमिहैव स-शं बुधाः।। च.सू. 11.21-22

अनुमान प्रत्यक्षपूर्वक होता है। जिसका प्रत्यक्ष हुआ रहता है, उसी का अनुमान होता है। यह तीन प्रकार का तथा त्रैकालिक होता है। उदाहरण: धूम से गूढ़ वह्नि का अनुमान वर्तमानकालिक, गर्भ दर्शन से मैथुन का अनुमान भूतकालिक तथा बीज से उत्पन्न होने वाले फल का अनुमान भविष्यत् कालीन है।

युक्ति (Yukti - reasoning)

उदाहरण (Examples)

- **जलकर्षणबीजर्तुसंयोगात् सस्यसंभवः।**
  युक्तिः षड्धातुसंयोगाद्गर्भाणां संभवस्तथा।।
  मथ्यमन्थन(क)मन्थानसंयोगादग्निसंभवः।
  युक्तियुक्ता चतुष्पादसंपद्व्याधिनिबर्हणी।। च.सू. 11.23-24
- जल, भूमि, कर्षण (कर्षणसंकृतभूमिः), बीज और ऋतु के संयोग से सस्योत्पत्ति होना
- षड्धातु, पञ्चमहाभूत और आत्मा के संयोग से गर्भ की उत्पत्ति होना
- मथ्य, मन्थक तथा मन्थान संयोग से अग्नि की उत्पत्ति होना
- युक्ति से युक्त वैद्य, उपस्थाता, रोग और भेषज प्रशस्त गुणता अर्थात् सादगुण्य से व्याधि का नाश होना

व्याख्या (Definition)

- **बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्।**
  युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।। च.सू. 11.25

जो बुद्धि अनेक कारणों के योग से उत्पन्न हुए भावों को देखती है, वह युक्ति है। यह युक्ति त्रैकालिक होती है और इसके द्वारा त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ तथा काम इन तीनों की सिद्धि होती है।

सात त्रिविध भेद वाले विषय
(Seven subjects having three types)

- **अथ खलु त्रय उपस्तम्भाः, त्रिविधं बलं, त्रीण्यातनानि, त्रयो रोगाः, त्रयो रोगमार्गाः, त्रिविधा भिषजः, त्रिविधमौषधमिति।।**

च.सू. 11.34

विषय	त्रिविध भेद		
उपस्तम्भ	आहार	स्वप्न	ब्रह्मचर्य
बल	सहज	कालज	युक्तिकृत
आयतन	इन्द्रियार्थ, कर्म एवं काल का अतियोग	इन्द्रियार्थ, कर्म एवं काल का अयोग	इन्द्रियार्थ, कर्म एवं काल का मिथ्या-योग
रोग	निज	आगन्तु	मानस
रोगमार्ग	शाखा	मर्मास्थिसन्धि	कोष्ठ

विषय	त्रिविध भेद		
भिषक्	छद्मचर	सिद्धसाधित	वैद्यगुणयुक्त
औषध	दैवव्यपाश्रय	युक्तिव्यपाश्रय	सत्त्वावजय

त्रय उपस्तम्भ (Three upastambhas - sub-pillars)

- त्रय उपस्तम्भा इति-आहारः, स्वप्नो, ब्रह्मचर्यमिति।

च.सू. 11.35

त्रिविध उपस्तम्भ		
आहार	स्वप्न	ब्रह्मचर्य

त्रिविध बल (Three types of bala - strength)

- त्रिविधं बलमिति-सहजं, कालजं, युक्तिकृतं च। सहजं यच्छरीरसत्त्वयोः प्राकृतं, कालकृतमृतुविभागजं वयःकृतं च, युक्तिकृतं पुनस्तद्यदाहारचेष्टायोगजम्।। च.सू. 11.36

त्रिविध बल		
सहज बल	कालज बल	युक्तिकृत बल

त्रिविध आयतन (Three ayatanas - etiological factors)

- त्रीण्यायतनानीति-अर्थानां कर्मणः कालस्य चातियोगा-योगमिथ्यायोगाः।

च.सू. 11.37

त्रिविध आयतन		
अर्थ, कर्म और काल का अतियोग	अर्थ, कर्म और काल का अयोग	अर्थ, कर्म और काल का मिथ्यायोग

त्रिविध रोग (Three types of rogas - diseases)

- त्रयो रोगा इति-निजागन्तुमानसाः। तत्र निजः शारीरदोष-समुत्थः, आगन्तुर्भूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसमुत्थः, मानसः पुनरिष्टस्य लाभाल्लाभाच्चानिष्टस्योपजायते।। च.सू. 11.45

त्रिविध रोग		
निज	आगन्तु	मानस

त्रिविध रोगमार्ग

(Three roga - margas - disease pathways)

- त्रयो रोगमार्गा इति-शाखा, मर्मास्थिसन्धयः, कोष्ठश्च।

च.सू. 11.48

त्रिविध रोगमार्ग		
शाखा	मर्मास्थिसन्धि	कोष्ठ
बाह्य रोगमार्ग	मध्यम रोगमार्ग	आभ्यन्तर रोगमार्ग

शाखा (Extremities)

- तत्र शाखा रक्तादयो धातवस्त्वक् च, स बाह्यो रोगमार्गः।

च.सू. 11.48

- तत्र, गण्डपिडकालज्यपचीचर्मकीलाधिमांसमषककुष्ठव्यंगादयो विकारा बहिर्मार्गजाश्च विसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रध्यादयः शाखानुसारिणो भवन्ति रोगाः। च.सू. 11.49

मर्मास्थिसन्धि (Vital parts, bones & joints)

- मर्माणि पुनर्बस्तिहृदयमूर्धादीनि, अस्थिसन्ध्योऽस्थिसंयोगास्तत्रोपनिबद्धाश्च स्नायुकण्डराः, स मध्यमो रोगमार्गः। च.सू. 11.48
- पक्षवधग्रहापतानकार्दितशोषराजयक्ष्मास्थिसन्धिशूलगुदभ्रंशादयः शिरोहृद्बस्तिरोगादयश्च मध्यममार्गानुसारिणो भवन्ति रोगाः। च.सू. 11.49

कोष्ठ (Abdominal cavity)

- कोष्ठः पुनरुच्यते महास्रोतः शरीरमध्यं महानिम्नमामपक्वाशयश्चेति पर्यायशब्दैस्तन्त्रे, स रोगमार्ग आभ्यन्तरः। च.सू. 11.48
- ज्वरातीसारच्छर्द्यलसकविसूचिकाकासश्वासहिक्कानाहोदरप्लीहादयोऽन्तर्मार्गजाश्च विसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रध्यादयः कोष्ठानुसारिणो भवन्ति रोगाः। च.सू. 11.49

रोगमार्ग	समाविष्ट अवयव	रोग
शाखा	रक्तादि धातु और त्वचा	- गण्ड - पिडका - अलजी- अपची - चर्मकील- अधि- मांस-मषक-कुष्ठ-व्यंग -विसर्प-श्वयथु- गुल्म- अर्श-विद्रधि आदि।
मर्मास्थि-सन्धि	बस्ति, हृदय, मूर्धा आदि मर्मस्थान, अस्थिसन्धि, अस्थि संयोग और इनसे सम्बद्ध स्नायु और कण्डरा	-पक्षवध-पक्षग्रह-अपतान- क-अर्दित-शोष -राज- यक्ष्मा-अस्थिशूल- सन्धिशूल-गुदभ्रंश आदि।
कोष्ठ	महास्रोत, शरीरमध्य, महानिम्न, आमाशय, पक्वाशय-पर्याय	- ज्वर-अतिसार-छर्दि- अलसक-विसूचिका- कास-श्वास-हिक्का- आनाह-उदर-प्लीहा- विसर्प-श्वयथु-गुल्म- अर्शोरोग-विद्रधि

त्रिविध भिषक् (Three types of bhishak - physicians)

1. छद्मचर भिषक 2. सिद्धसाधित भिषक् 3. वैद्यगुणयुक्त भिषक्

त्रिविध औषध (Three types of aushadha - medicines)

- त्रिविधमौषधमिति-दैवव्यपाश्रयं, युक्तिव्यपाश्रयं, सत्त्वावजयश्च। च.सू. 11.54

त्रिविध औषध		
दैवव्यपाश्रय	युक्तिव्यपाश्रय	सत्त्वावजय

दैवव्यपाश्रय चिकित्सा (Spiritual therapy)

- तत्र दैवव्यपाश्रयं-मन्त्रौषधिमणिमंगलबल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि। च.सू. 11.54

युक्तिव्यपाश्रय चिकित्सा (Reasoning based therapy)

- युक्तिव्यपाश्रयं-पुनराहारौषधद्रव्याणां योजना। च.सू. 11.54

सत्त्वावजय चिकित्सा (Psychic therapy)

- सत्त्वावजयः-पुनरहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः।। च.सू. 11.54

कर्म (Karma - action)

- कर्म वाङ्मनःशरीरप्रवृत्तिः। च.सू. 11.39

वाणी, मन और शरीर की चेष्टाओं को कर्म कहते हैं।

काल (Kala - schedule)

- शीतोष्णवर्षलक्षणाः पुनर्हेमन्तग्रीष्मवर्षाः संवत्सरः; स कालः। कालः पुनः परिणाम उच्यते।। च.सू. 11.42

काल का अर्थ परिमाण है।

त्रिविध औषध (Three types of aushadha - treatment)

- शरीरदोषप्रकोपे खलु शरीरमेवाश्रित्य प्रायशस्त्रिविधमौषधमिच्छन्ति-अन्तः परिमार्जनं, बहिः परिमार्जनं, शस्त्रप्रणिधानं चेति। च.सू. 11.55

त्रिविध औषध		
अन्तः परिमार्जन	बहिः परिमार्जन	शस्त्रप्रणिधान

अन्तःपरिमार्जन औषध (Internal cleansing therapy)

- तत्रान्तः परिमार्जनं यदन्तः शरीरमनुप्रविश्यौषधमाहारजातव्याधीन् प्रमार्ष्टि। च.सू. 11.55

बहिःपरिमार्जन औषध (External cleansing therapy)

- यत्पुनर्बहिःस्पर्शमाश्रित्याभ्यंगस्वेदप्रदेहपरिषेकोन्मर्दनाद्यैरामयान् प्रमार्ष्टि तद्बहिःपरिमार्जनम्। च.सू. 11.55

शस्त्रप्रणिधान औषध (Surgical therapy)

- शस्त्रप्रणिधानं पुनश्छेदनभेदनव्यधनदारणलेखनोत्पाटनप्रच्छनसीवनैषणक्षारजलौकसश्चेति।। च.सू. 11.55

• • •

12. वातकलाकलीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-17

वातदोष विषयक सम्भाषा परिषद्
(Conference for vata dosha)

इस परिषद् में 8 आचार्य उपस्थित थे। यथा –

1. सांकृत्यायन कुश
2. कुमारशिरा भरद्वाज
3. कांकायन
4. बडिश धामार्गव
5. राजर्षि वार्योविद्
6. मरीचि
7. काप्य
8. आत्रेय।

सांकृत्यायन कुश मतेन वात के 6 गुण
(Qualities of vata dosha)

- रूक्षलघुशीतदारुणखरविशदाः षडिमे वातगुणा भवन्ति।।

च.सू. 12.4

1. रूक्ष (dry)
2. लघु (light)
3. शीत (cold)
4. दारुण (unstability)
5. खर (rough)
6. विशद (clear)

राजर्षि वार्योविद् मतेन वात के कर्म
(Functions of vata dosha)

- वायुस्तन्त्रयन्त्रधरः, प्राणोदानसमानव्यानापानात्मा, प्रवर्तकश्चेष्टानामुच्चावचानां, नियन्ता प्रणेता च मनसः, सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः, सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा, सर्वशरीरधातुव्यूहकरः, सन्धानकरः शरीरस्य, प्रवर्तको वाचः, प्रकृतिः स्पर्शशब्दयोः, श्रोत्रस्पर्शनयोर्मूलं, हर्षोत्साहयोर्योनिः, समीरणोऽग्नेः, दोषसंशोषणः, क्षेप्ता बहिर्मलानां, स्थूलाणुस्रोतसां भेत्ता, कर्ता गर्भाकृतीनाम्, आयुषोऽनुवृत्तिप्रत्ययभूतो भवत्यकुपितः।

च.सू. 12.8

वायु के पर्याय (Synonyms of vata)

- स हि भगवान् प्रभवश्चाव्ययश्च, भूतानां भावाभावकरः, सुखासुखयोर्विधाता, मृत्युः, यमः, नियन्ता, प्रजापतिः, अदितिः, विश्वकर्मा, विश्वरूपः, सर्वगः, सर्वतन्त्राणां विधाता, भावानामणुः, विभुः, विष्णुः, क्रान्ता लोकानां वायुरेव भगवानिति।।

च.सू. 12.8

प्रभव	अव्यय	भावाभावकर	सुखासुख का विधाता	मृत्यु	यम
नियन्ता	प्रजापति	अदिति	विश्वकर्मा	विश्वरूप	सर्वग
सर्वतन्त्रों का विधाता	सभी भावों में अणु	विभु	विष्णु	लोकक्रान्ता	भगवान्

• • •

13. स्नेहाध्याय

कुल श्लोक संख्या–100

स्नेह योनि (Origin of sneha - unctuous substance)

- **स्नेहानां द्विविधा सौम्य योनिः स्थावरजंगमा।।** च.सू. 13.9

स्नेह योनि	
स्थावर योनि	जंगम योनि

तिल तैल एवं एरण्ड तैल की प्रशंसा

(Qualities of tila oil & castor oil)

- **सर्वेषां तैलजातानां तिलतैलं विशिष्यते।**
  बलार्थे स्नेहने चाग्र्यमैरण्डं तु विरेचने।।
  (कटूष्णं तैलमैरण्डं वातश्लेष्महरं गुरु।
  कषायस्वादुतिक्तैश्च योजितं पित्तहन्त्रपि।।) च.सू. 13.12(1)

तिल तैल	सर्व तैलों में श्रेष्ठ
एरण्ड तैल	बल एवं स्नेहनार्थ श्रेष्ठ

सर्पि की श्रेष्ठता (Superiority of sarpi - clarified butter)

- सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मताः।
  एषु चैवोत्तमं सर्पिः संस्कारस्यानुवर्तनात्।। च.सू. 13.13

चतुर्विध स्नेहों में सर्पि सर्वोत्तम स्नेह है। इसका कारण है सर्पि का-संस्कारानुवर्तन

सर्पि के गुण (Qualities of sarpi - clarified butter)

- घृतं पित्तानिलहरं रसशुक्रौजसां हितम्।
  निर्वापणं मृदुकरं स्वरवर्णप्रसादनम्।। च.सू. 13.14

तैल के गुण (Qualities of taila - oil)

- मारुतघ्नं न च श्लेष्मवर्धनं बलवर्धनम्।
  त्वच्यमुष्णं स्थिरकरं तैलं योनिविशोधनम्।। च.सू. 13.15

वसा के गुण (Qualities of vasa - fat)

- विद्धभग्नाहतभ्रष्टयोनिकर्णशिरोरुजि।
  पौरुषोपचये स्नेहे व्यायामे चेष्यते वसा।। च.सू. 13.16

मज्जा के गुण (Qualities of majja - bone marrow)

- बलशुक्ररसश्लेष्ममेदोमज्जविवर्धनः।
  मज्जा विशेषतोऽस्थ्नां च बलकृत् स्नेहने हितः।। च.सू. 13.17

स्नेह	गुण
घृत	-पित्तानिलहर-रस, शुक्र एवं ओज के लिए हितकर-निर्वापण-मृदुकर-स्वर एवं वर्णप्रसादन
तैल	-वातघ्न-कफघ्न-बलवर्धन-त्वच्य-उष्ण-स्थिरकर-योनिविशोधन
वसा	- विद्ध, भग्न, आहत के लिए हितकर-योनिभ्रंशहर-कर्ण एवं शिरो वेदनाहर-पौरुष एवं उपचयकारक
मज्जा	- बलवर्धक-शुक्र, रस, कफ, मेद, मज्जा विवर्धन-अस्थि के लिए बलकर-स्नेहन

ऋतु के अनुसार स्नेह प्रयोग (Use of sneha as per seasons)

- सर्पिः शरदि पातव्यं वसा मज्जा च माधवे।
  तैलं प्रावृषि नात्युष्णशीते स्नेहं पिबेन्नरः।। च.सू. 13.18

ऋतु	स्नेह प्रयोग
शरद् ऋतु	घृत
प्रावृट् ऋतु	तैल
वसन्त ऋतु	वसा
वसन्त ऋतु	मज्जा

स्नेह की विचारणायें-24 (Twenty four recipes for sneha)

- ओदनश्च विलेपी च रसो मांसं पयो दधि।
  यवागूः सूपशाकौ च यूषः काम्बलिकः खडः।।
  सक्तवस्तिलपिष्टं च मद्यं लेहास्तथैव च।
  भक्ष्यमभ्यञ्जनं बस्तिस्तथा चोत्तरबस्तयः।।
  गण्डूषः कर्णतैलं च नस्तःकर्णाक्षितर्पणम्।
  चतुर्विंशतिरित्येताः स्नेहस्य प्रविचारणाः।। च.सू. 13.23-25

ओदन	विलेपी	मांसरस	पयः	दधि	यवागु
सूप	शाक	यूष	काम्बलिक	खड	सक्तु
तिलपिष्ट	मद्य	लेह	भक्ष्य	अभ्यञ्जन	बस्ति
उत्तरबस्ति	गण्डूष	कर्णतैल	नस्यकर्म	कर्णतर्पण	अक्षि तर्पण

स्नेह की मात्रा (Dosage of sneha)

- अहोरात्रमहः कृत्स्नमर्धाहं च प्रतीक्षते।
  प्रधाना मध्यमा ह्रस्वा स्नेहमात्रा जरां प्रति।। च.सू. 13.29

प्रधान मात्रा	अहोरात्र में पचनेवाली (24 घण्टे)
मध्यम मात्र	एक दिन में पचनेवाली (12 घण्टे)
ह्रस्व मात्रा	आधे दिन में पचनेवाली (6 घण्टे)

स्नेहन के योग्य

(Conditions fit for snehana - unction therapy)

- स्वेद्याः शोधयितव्याश्च रूक्षा वातविकारिणः।
  व्यायाममद्यस्त्रीनित्याः स्नेह्याः स्युर्ये च चिन्तकाः।। च.सू. 13.52

– स्वेदन के योग्य–संशोधन के योग्य–रूक्ष–वातविकार से त्रस्त–व्यायाम, मद्य एवं स्त्री का नित्य सेवन करनेवाले–चिन्तक

स्नेहन के अयोग्य

(Conditions unfit for snehana - unction therapy)

- संशोधनादृते येषां रूक्षणं संप्रवक्ष्यते।
  न तेषां स्नेहनं शस्तमुत्सन्नकफमेदसाम्।।
  अभिष्यण्णाननगुदा नित्यमन्दाग्नयश्च ये।
  तृष्णामूर्च्छापरीताश्च गर्भिण्यस्तालुशोषिणः।।
  अन्नद्विषश्छर्दयन्तो जठरामगरार्दिताः।
  दुर्बलाश्च प्रतान्ताश्च स्नेहग्लाना मदातुराः।।
  न स्नेह्या वर्तमानेषु न नस्तोबस्तिकर्मसु।
  स्नेहपानात् प्रजायन्ते तेषां रोगाः सुदारुणाः।। च.सू. 13.53-56

– संशोधन के बिना रूक्षण के योग्य – मुख एवं गुद से स्राव – नित्य मन्दाग्नि से त्रस्त – तृष्णा – मूर्च्छा – गर्भिणी – तालुशोष – अन्नद्वेष – छर्दि – उदर रोग – गर विष से पीड़ित – दुर्बल – ग्लानियुक्त – स्नेहग्लान – मद के आतुर

सम्यक् स्नेहन के लक्षण

(Features of appropriate snehana)

- वातानुलोम्यं दीप्तोऽग्निर्वर्चः स्निग्धमसंहतम्।
  मार्दवं स्निग्धता चांगे स्निग्धानामुपजायते।। च.सू. 13.58

– वातानुलोमन – अग्निदीप्ति – स्निग्ध एवं असंहत पुरीषता – अंगों की मृदुता एवं स्निग्धता

अस्निग्ध के लक्षण

(Features of inappropriate snehana)

- पुरीषं ग्रथितं रूक्षं वायुरप्रगुणो मृदुः।
  पक्ता खरत्वं रौक्ष्यं च गात्रस्यास्निग्धलक्षणम्।। च.सू. 13.57

– ग्रथित एवं रूक्ष पुरीष–वायु का विलोम – जठराग्नि की मृदुता – खरत्व – रौक्ष्य

अतिस्निग्ध के लक्षण (Features of excessive snehana)

- पाण्डुता गौरवं जाड्यं पुरीषस्याविपक्वता।
  तन्द्रीररुचिरुत्क्लेशः स्यादतिस्निग्धलक्षणम्।। च.सू. 13.59

– पाण्डुता – गौरव – जाड्य – पुरीष की अविपक्वता– तन्द्रा – अरुचि – उत्क्लेश

संशमन एवं संशोधन स्नेह का काल

(Schedule for samshamana and samshodhana snehas)

- पिबेत् संशमनं स्नेहमन्नकाले प्रकांक्षितः।
  शुद्ध्यर्थं पुनराहारे नैशे जीर्णे पिबेन्नरः।। च.सू. 13.61

संशमन स्नेह का काल	अन्न के समय भूख लगने पर
संशोधन स्नेह का काल	रात्रि में भुक्त भोजन के पचन के बाद

कोष्ठ परीक्षा (Examination of koshtha)

- मृदुकोष्ठस्त्रिरात्रेण स्निह्यत्यच्छोपसेवया।
  स्निह्यति क्रूरकोष्ठस्तु सप्तरात्रेण मानवः।। च.सू. 13.65
  - मृदु कोष्ठः जिसका स्नेहन 3 दिन में होता है।
  - क्रूर कोष्ठः जिसका स्नेहन 7 दिन में होता है।

स्नेहव्यापत् चिकित्सा (Treatment of snehavyapat)

- तत्राप्युल्लेखनं शस्तं स्वेदः कालप्रतीक्षणम्।
  प्रति प्रति व्याधिबलं बुद्ध्वा स्रंसनमेव च।।
  तक्रारिष्टप्रयोगश्च रूक्षपानान्नसेवनम्।
  मूत्राणां त्रिफलायाश्च स्नेहव्यापत्तिभेषजम्।। च.सू. 13.77–78

– उल्लेखन – स्वेदन – काल प्रतीक्षा – विरेचन – तक्रारिष्ट प्रयोग – रूक्ष अन्नपान – गोमूत्र सेवन – त्रिफला सेवन

पाञ्चप्रासृतिकी पेया (Pancha-prasrtiki peya)

- सर्पिस्तैलवसामज्जातण्डुलप्रसृतैः शृ(कृ)ता।
  पाञ्चप्रासृतिकी पेया पेया स्नेहनमिच्छता।। च.सू. 13.90

घृत + तैल + वसा + मज्जा + तण्डुल

• • •

14. स्वेदाध्याय

कुल श्लोक संख्या-71

स्वेदन की दोषघ्नता
(Dosha pacifying action of swedana)

- स्वेदसाध्याः प्रशाम्यन्ति गदा वातकफात्मकाः।। च.सू. 14.3

स्नेहनपूर्वक स्वेदन के लाभ
(Benefits of swedana preceded by snehana)

- स्नेहपूर्वं प्रयुक्तेन स्वेदेनावजितेऽनिले।
  पुरीषमूत्ररेतांसि न सज्जन्ति कथंचन।। च.सू. 14.4
  - वातशमन
  - पुरीष, मूत्र एवं शुक्र का सम्यक् सञ्चार।

स्वेदनकर्म की प्रशंसा (Praise for swedana karma)

- शुष्काण्यपि हि काष्ठानि स्नेहस्वेदोपपादनैः।
  नमयन्ति यथान्यायं किं पुनर्जीवतो नरान्।। च.सू. 14.5

विधिवत् स्नेहन एवं स्वेदन करने से जब सूखी लकड़ियां भी इच्छानुसार झुकाई जा सकती हैं तो जीवित पुरुष के अंगावयवों की तो बात ही क्या है।

स्वेदन के भेद (Classification of swedana)

- **प्रथम भेद**

  1. महान् स्वेद 2. दुर्बल स्वेद 3. मध्यम स्वेद

- **द्वितीय भेद**

  1. स्निग्ध-रुक्ष स्वेद (वातकफज रोग में)
  2. स्निग्ध स्वेद (वातज रोग में)
  3. रुक्ष स्वेद (कफज रोग में)

- **तृतीय भेद**

  1. रूक्षपूर्वक स्वेदन (आमाशयगत वात में)
  2. स्नेहपूर्वक स्वेदन (पक्वाशयगत कफ में)

स्थान भेद से स्वेदन (Swedana - as per the body parts)

- **वृषणौ हृदयं दृष्टी स्वेदयेन्मृदु नैव वा।**
  मध्यमं वंक्षणौ शेषमंगावयवमिष्टतः।। च.सू. 14.10

मृदु स्वेदन / न स्वेदन	- वृषण - हृदय - दृष्टि
मध्यम स्वेदन	वंक्षण

सम्यक् स्वेदन के लक्षण
(Features of appropriate swedana)

- **शीतशूलव्युपरमे स्तम्भगौरवनिग्रहे।**
  संजाते मार्दवे स्वेदे स्वेदनाद्विरतिर्मता।। च.सू. 14.13

  - शीत एवं शूल का नाश - स्तम्भ एवं गौरव का नाश - अंगों की मृदुता-स्वेदप्रवृत्ति

अतिस्वेदन के लक्षण (Features of excessive swedana)

- **पित्तप्रकोपो मूर्च्छा च शरीरसदनं तृषा।**
  दाहः स्वरांगदौर्बल्यमतिस्विन्नस्य लक्षणम्।। च.सू. 14.14

  - पित्तप्रकोप - मूर्च्छा - शरीरसदन - तृष्णा - दाह - स्वर दौर्बल्य - अंग दौर्बल्य

स्वेदन के अयोग्य (Contra-indications for swedana)

- **कषायमद्यनित्यानां गर्भिण्या रक्तपित्तिनाम्।**
  पित्तिनां सातिसाराणां रूक्षाणां मधुमेहिनाम्।।
  विदग्धभ्रष्टब्रध्नानां विषमद्यविकारिणाम्।
  श्रान्तानां नष्टसंज्ञानां स्थूलानां पित्तमेहिनाम्।।
  तृष्यतां क्षुधितानां च क्रुद्धानां शोचतामपि।
  कामल्युदरिणां चैव क्षतानामाढ्यरोगिणाम्।।

दुर्बलातिविशुष्काणामुपक्षीणौजसां तथा।
भिषक् तैमिरिकाणां च न स्वेदमवतारयेत्।। च.सू. 14.16-19

– कषाय एवं मद्य का नित्य सेवन करनेवाले – गर्भिणी – रक्तपित्त, पित्त, अतिसार, रूक्ष, मधुमेह से पीड़ित – विदग्ध और भ्रष्ट गुदवाले – विष एवं मद्य से पीड़ित – श्रान्त – नष्टसंज्ञा – स्थूल – पित्तज प्रमेह – तृष्णा – क्षुधित – क्रुद्ध – शोकग्रस्त – कामला – उदररोग – क्षत – आढ्यरोग से ग्रस्त – दुर्बल – अतिविशुष्क – ओज:क्षय – तिमिर रोगी

स्वेदन के योग्य (Indications for swedana)

- प्रतिश्याये च कासे च हिक्काश्वासेष्वलाघवे।
कर्णमन्याशिर:शूले स्वरभेदे गलग्रहे।।
अर्दितैकांगसर्वांगपक्षाघाते विनामके।
कोष्ठानाहविबन्धेषु मूत्राघाते विजृम्भके।।
पार्श्वपृष्ठकटीकुक्षिसंग्रहे गृध्रसीषु च।
मूत्रकृच्छ्रे महत्त्वे च मुष्कयोरंगमर्दके।।
पादजानूरुजंघार्तिसंग्रहे श्वयथावपि।
खल्लीष्वामेषु शीते च वेपथौ वातकण्टके।।
संकोचायामशूलेषु स्तम्भगौरवसुप्तिषु।
सर्वांगेषु विकारेषु स्वेदनं हितमुच्यते।। च.सू. 14.20-24

– प्रतिश्याय – कास – हिक्का – श्वास – अलाघवता – कर्णशूल – मन्याशूल – शिर:शूल – स्वरभेद – गलग्रह – अर्दित – एकांग पक्षाघात – सर्वांग पक्षाघात – विनामक – कोष्ठ – आनाह – विबन्ध – मूत्राघात – विजृम्भिका – पार्श्वग्रह – पृष्ठग्रह – कटीग्रह – कुक्षिग्रह – गृध्रसी – मूत्रकृच्छ्र – अण्डवृद्धि – अंगमर्द – पाद, जानु, ऊरु एवं जंघा में वेदना – श्वयथु – खल्ली – आमदोष – शीत – वेपथु – वातकण्टक – संकोच – आयाम – शूल – स्तम्भ – गौरव – सुप्ति

स्वेदन के त्रयोदश भेद (Thirteen types of swedana)

- संकर: प्रस्तरो नाडी परिषेकोऽवगाहनम्।
जेन्ताकोऽश्मघन: कर्षू: कुटी भू: कुम्भिकैव च।।
कूपो होलाक इत्येते स्वेदयन्ति त्रयोदश।
तान् यथावत् प्रवक्ष्यामि सर्वानेवानुपूर्वश:।। च.सू. 13.39-40

1. संकर स्वेद	2. प्रस्तर स्वेद	3. नाडी स्वेद
4. परिषेक स्वेद	5. अवगाह स्वेद	6. जेन्ताक स्वेद
7. अश्मघन स्वेद	8. कर्षू स्वेद	9. कुटी स्वेद
10. भू स्वेद	11. कुम्भि स्वेद	12. कूप स्वेद
13. होलाक स्वेद		

दशविध निरग्नि स्वेद (Ten types of niragni sweda)

- व्यायाम उष्णसदनं गुरुप्रावरणं क्षुधा।

बहुपानं भयक्रोधावुपनाहाहवातपाः।।
स्वेदयन्ति दशैतानि नरमग्निगुणादृते। च.सू. 14.64-65

स्वेदन के द्विविध भेद

(Two-fold classification of swedana)

साग्नि स्वेद	निरग्नि स्वेद
1. संकर स्वेद	1. व्यायाम
2. प्रस्तर स्वेद	2. उष्णसदन
3. नाडी स्वेद	3. गुरुप्रावरण
4. परिषेक स्वेद	4. क्षुधा
5. अवगाह स्वेद	5. बहुपान
6. जेन्ताक स्वेद	6. भय
7. अश्मघन स्वेद	7. क्रोध
8. कर्षू स्वेद	8. उपनाह
9. कुटी स्वेद	9. आहव
10. भू स्वेद	10. आतप
11. कुम्भि स्वेद	
12. कूप स्वेद	
13. होलाक स्वेद	

स्वेदन के अन्य द्विविध भेद

(Other two-fold classification of swedana)

1. एकांग स्वेदन 2. सर्वांग स्वेदन

1. स्निग्ध स्वेदन 2. रुक्ष स्वेदन

• • •

15. उपकल्पनीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या–25

वमनकर्म (Methodology of vamana karma)

- स्नेहन एवं स्वेदन आदि पूर्वकर्म
- मधु + मधुक + सैन्धव + फाणित से युक्त मदनफल कषाय पान
- एक मुहूर्त पर्यन्त प्रतिक्षा करना
- लक्षण द्वारा दोष की स्थिति का ज्ञान
  - स्वेदप्रादुर्भाव: दोष प्रविलयन
  - लोमहर्ष: दोषों का स्थान से प्रचलन
  - कुक्षि आध्मान: दोषों का कुक्षि प्रदेश में आगमन
  - – हृल्लास – आस्य स्रवण: दोषों का ऊर्ध्व मार्ग में गमन
- रोगी के ललाट एवं पार्श्व को पकड़ कर नाभि का प्रपीडन, पृष्ठ का उन्मर्दन करें

- ओष्ठ, तालु एवं कण्ठ को खोलकर वेग का त्याग करें
- तर्जनी एवं मध्यमा अंगुली / उत्पल / कुमुद / सौगन्धिक द्वारा कण्ठ स्पर्श कर वेग प्रवृत्त करें।

वमन अयोग के लक्षण

(Features of inappropriate vamana)

- **अप्रवृत्तिः कुतश्चित् केवलस्य वाऽप्यौषधस्य विभ्रंशो विबन्धो वेगानामयोगलक्षणानि भवन्ति।** च.सू. 15.13

  – वमन की अप्रवृत्ति – केवल औषधि का वमन – विभ्रंश–विबन्ध

वमन सम्यक् योग के लक्षण

(Features of appropriate vamana)

- **काले प्रवृत्तिरनतिमहती व्यथा यथाक्रमं दोषहरणं स्वयं चावस्थानमिति योगलक्षणानि भवन्ति, योगेन तु दोषप्रमाणविशेषेण तीक्ष्णमृदुमध्यविभागो ज्ञेयः।** च.सू. 15.13

  – वेगों का उचित समय पर प्रवृत्त होना – न अतिमहती व्यथा – यथाक्रम दोषहरण – त्याग के उपरान्त वेगों का स्वयं रुक जाना

वमन अतियोग के लक्षण (Features of excessive vamana)

- **योगाधिक्येन तु फेनिलरक्तचन्द्रिकोपगमनमित्यतियोगलक्षणानि भवन्ति।** च.सू. 15.13

  – फेनिल, रक्त एवं चन्द्रिकायुक्त वमन

वमन के उपद्रव (Complications of vamana)

- तत्रातियोगायोगनिमित्तानिमानुपद्रवान् विद्यात्-आध्मानं परिकर्तिका परिस्रावो हृदयोपसरणमंगग्रहो जीवादानं विभ्रंशः स्तम्भः क्लमश्चेत्युपद्रवाः।। च.सू. 15.13

आध्मान	परिकर्तिका	परिस्राव	हृदयोपसरण	अंगग्रह
जीवादान	विभ्रंश	स्तम्भ	क्लम	

संशोधन का लाभ (Benefits of samshodhana)

- मलापहं रोगहरं बलवर्णप्रसादनम्।
  पीत्वा संशोधनं सम्यगायुषा युज्यते चिरम्।। च.सू. 15.22

– मलापह – रोगहर – बल एवं वर्ण का प्रसादन – सम्यक् आयु-चिरायु

• • •

16. चिकित्साप्राभृतीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-41

सम्यक् विरिक्त के लक्षण
(Features of appropriate virechana)

- दौर्बल्यं लाघवं ग्लानिर्व्याधीनामणुता रुचिः।
  हृद्वर्णशुद्धिः क्षुत्तृष्णा काले वेगप्रवर्तनम्।।
  बुद्धीन्द्रियमनःशुद्धिर्मारुतस्यानुलोमता।
  सम्यग्विरिक्तलिंगानि कायाग्नेश्चानुवर्तनम्।। च.सू. 16.5-6

– दौर्बल्य – लाघव – ग्लानि – व्याधि की अणुता – रुचि – हृदय एवं वर्ण की शुद्धि – क्षुधा – तृष्णा – सम्यक् काल में वेगों का प्रवर्तन – बुद्धि, इन्द्रिय एवं मन की शुद्धि – वायु का अनुलोमन-काय का अनुवर्तन

अविरिक्त के लक्षण
(Features of inappropriate virechana)

- ष्ठीवनं हृदयाशुद्धिरुत्क्लेशः श्लेष्मपित्तयोः।

आध्मानमरुचिश्छर्दिरदौर्बल्यमलाघवम्।।
जंघोरुसदनं तन्द्रा स्तैमित्यं पीनसागमः।
लक्षणान्यविरिक्तानां मारुतस्य च निग्रहः।। च.सू. 16.7-8

- ष्ठीवन - हृदय अशुद्धि - कफपित्त का उत्क्लेश - आध्मान - अरुचि - छर्दि - अदौर्बल्य - अलाघव - जंघा एवं उरु सदन - तन्द्रा - स्तैमित्य - पीनस - वायु का निग्रह

विरेचन अतियोग के लक्षण
(Features of excessive virechana)

- विट्पित्तकफवातानामागतानां यथाक्रमम्।
परं स्रवति यद्रक्तं मेदोमांसोदकोपमम्।
निःश्लेष्मपित्तमुदकं शोणितं कृष्णमेव वा।
तृष्यतो मारुतार्तस्य सोऽतियोगः प्रमुह्यतः।। च.सू. 16.9-10

- क्रमशः पुरीष, पित्त, कफ और वायु के निर्गमन के पश्चात् मेद एवं मांसोदक सदृश रक्त प्रवृत्ति - निःश्लेष्मपित्त उदक का स्राव - कृष्ण वर्णीय रक्तस्राव - तृष्णा - वातरोग - मूर्च्छा

वमन अतियोग के लक्षण (Features of excessive vamana)

- वमनेऽतिकृते लिंगान्येतान्येव भवन्ति हि।
ऊर्ध्वगा वातरोगाश्च वाग्ग्रहश्चाधिको भवेत्।। च.सू. 16.11

- विरेचन के अतियोग के लक्षण - ऊर्ध्वग वातरोग - वाग्ग्रह

संशोधन के योग्य (Indications for samshodhana)

- अविपाकोऽरुचिः स्थौल्यं पाण्डुता गौरवं क्लमः।
पिडकाकोठकण्डूनां संभवोऽरतिरेव च।।
आलस्यश्रमदौर्बल्यं दौर्गन्ध्यमवसादकः।
श्लेष्मपित्तसमुत्क्लेशो निद्रानाशोऽतिनिद्रता।।
तन्द्रा क्लैब्यमबुद्धित्वमशस्तस्वप्नदर्शनम्।
बलवर्णप्रणाशश्च तृप्यतो बृंहणैरपि।।
बहुदोषस्य लिंगानि तस्मै संशोधनं हितम्।
ऊर्ध्वं चैवानुलोमं च यथादोषं यथाबलम्।। च.सू. 16.13-16

- अविपाक - अरुचि - स्थौल्य - पाण्डुता - गौरव - क्लम - पिडका - कोठ - कण्डु - आलस्य - श्रम - दौर्बल्य - दौर्गन्ध्य - अवसाद - कफ एवं पित्त का उत्क्लेश - निद्रानाश - अतिनिद्रा - तन्द्रा - क्लैब्य - अबुद्धित्व - अशस्त स्वप्न दर्शन - बल एवं वर्ण का प्रणाश आदि।

संशोधन के लाभ (Benefits of samshodhana)

- एवं विशुद्धकोष्ठस्य कायाग्निरभिवर्धते।
व्याधयश्चोपशाम्यन्ति प्रकृतिश्चानुवर्तते।।
इन्द्रियाणि मनोबुद्धिर्वर्णश्चास्य प्रसीदति।
बलं पुष्टिरपत्यं च वृषता चास्य जायते।।

जरां कृच्छ्रेण लभते चिरं जीवत्यनामयः।
तस्मात् संशोधनं काले युक्तियुक्तं पिबेन्नरः।।
दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति जिता लंघनपाचनैः।
जिताः संशोधनैर्ये तु न तेषां पुनरुद्भवः।। च.सू. 16.17-20

- कायाग्नि का वर्धन - व्याधि का उपशमन - प्रकृति का अनुवर्तन - इन्द्रिय, मन, बुद्धि, वर्ण का प्रसादन - बल - पुष्टि - अपत्य - वृषता - जरावस्था देर से आना

- लंघन एवं पाचन द्वारा प्रशान्त दोष पुनः प्रकुपित हो सकते हैं किन्तु संशोधन द्वारा चिकित्सित दोष का पुनरुद्भव नहीं होता है।

भेषजक्षपित की चिकित्सा

(Treatment of those emaciated by medication)

- भेषजक्षपिते पथ्यमाहारैरेव बृंहणम्।
  घृतमांसरसक्षीरहृद्ययूषोपसंहितैः।।
  अभ्यंगोत्सादनैः स्नानैर्निरूहैः सानुवासनैः।
  तथा स लभते शर्म युज्यते चायुषा चिरम्।। च.सू. 16.22-23
  - पथ्य आहार
  - - घृत - मांसरस - क्षीर - हृद्य यूष आदि से बृंहण
  - - अभ्यंग - उत्सादन - स्नान - निरूहण - अनुवासन बस्ति

स्वभावोपरमवाद

(Swabhavoparamavada - Theory of self destruction)

- जायन्ते हेतुवैषम्याद्विषमा देहधातवः।
  हेतुसाम्यात् समास्तेषां स्वभावोपरमः सदा।। च.सू. 16.27

हेतु की विषमता के कारण देहस्थ समस्त धातुयें विषम हो जाती हैं और ये हेतु की समता के कारण सम हो जाती हैं। उक्त धातुओं का उपरम स्वभाव से ही होता है।

चिकित्सा एवं भिषक् (Chikitsa and Bhishak)

- याभिः क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातवः समाः।
  सा चिकित्सा विकाराणां कर्म तद्भिषजां स्मृतम्।। च.सू. 16.34

जिन-जिन क्रियाओं द्वारा विषम हुए दोष शरीर में पुनः समानता को प्राप्त हों, वही रोगों की चिकित्सा है और वही वैद्यों का उत्तम कर्म है।

चिकित्सा का उद्देश्य (Aim of Chikitsa - treatment)

- कथं शरीरे धातूनां वैषम्यं न भवेदिति।
  समानां चानुबन्धः स्यादित्यर्थं क्रियते क्रिया।। च.सू. 16.35

चिकित्सा इसलिये की जाती है कि जिस प्रकार शरीर में धातुओं की विषमता न हो और समधातुओं का अनुबन्ध बना रहे।

• • •

17. कियन्त:शिरसीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-121

रोगादि भेद (Classification)

विषय	संख्या	भेद
शिरोरोग	5	- वातज-पित्तज-कफज-सन्निपातज-कृमिज
हृद्रोग	5	- वातज-पित्तज-कफज-सन्निपातज-कृमिज
दोषमान विकल्प से रोग-भेद	62	
क्षय	18	
मधुमेह पिडका	7	-शराविका-कच्छपिका-जालिनी-सर्षपी-अलजी-विनता-विद्रधि

विषय	संख्या	भेद
दोष गति	3	- क्षय-स्थान-वृद्धि
	3	- ऊर्ध्व-अध:-तिर्यक्
	3	- कोष्ठ-शाखा-मर्मास्थिसन्धि
	3	- चय-प्रकोप-प्रशम
	2	- प्राकृती-वैकृती

शिर: प्राधान्य (Superiority of shirah - head region)

- **प्राणा: प्राणभृतां यत्र श्रिता: सर्वेन्द्रियाणि च।**
  यदुत्तमांगमंगानां शिरस्तदभिधीयते।। च.सू. 17.12

जिसमें प्राणियों या प्राणधारियों के प्राण आश्रित रहते हैं, जहां सभी ज्ञानेन्द्रियां रहती हैं और जो शरीर के सभी अंगों में उत्तम अंग है-वह शिर कहा जाता है।

वृद्ध-क्षीण-सम दोषों के लक्षण
(Features of vrddha - kshina - sama doshas)

- **दोषा: प्रवृद्धा: स्वं लिंगं दर्शयन्ति यथाबलम्।**
  क्षीणा जहति लिंग स्वं, समा: स्वं कर्म कुर्वते।। च.सू. 17.62
  - प्रवृद्ध दोष: स्वयं के लक्षणों का दर्शाते हैं।
  - क्षीण दोष: स्वयं के लक्षणों का त्याग करते हैं।
  - सम दोष: स्वयं के कर्मों का सम्पादन करते हैं।

रसक्षय के लक्षण (Symptoms of rasa kshaya)

- घट्टते सहते शब्दं नोच्चैर्द्रवति शूल्यते।
  हृदयं ताम्यति स्वल्पचेष्टस्यापि रसक्षये।। च.सू. 17.64

रक्तक्षय के लक्षण (Symptoms of rakta kshaya)

- परुषा स्फुटिता म्लाना त्वग्रूक्षा रक्तसंक्षये। च.सू. 17.65

मांसक्षय के लक्षण (Symptoms of mamsa kshaya)

- मांसक्षये विशेषेण स्फिग्ग्रीवोदरशुष्कता।। च.सू. 17.65

मेदक्षय के लक्षण (Symptoms of meda kshaya)

- सन्धीनां स्फुटनं ग्लानिरक्ष्णोरायास एव च।
  लक्षणं मेदसि क्षीणे तनुत्वं चोदरस्य च।। च.सू. 17.66

अस्थिक्षय के लक्षण (Symptoms of asthi kshaya)

- केशलोमनखश्मश्रुद्विजप्रपतनं श्रमः।
  ज्ञेयमस्थिक्षये लिंगं सन्धिशैथिल्यमेव च।। च.सू. 17.67

मज्जाक्षय के लक्षण (Symptoms of majja kshaya)

- शीर्यन्त इव चास्थीनि दुर्बलानि लघूनि च।
  प्रततं वातरोगीणि क्षीणे मज्जनि देहिनाम्।। च.सू. 17.68

शुक्रक्षय के लक्षण (Symptoms of shukra kshaya)

- दौर्बल्यं मुखशोषश्च पाण्डुत्वं सदनं श्रमः।
  क्लैब्यं शुक्राविसर्गश्च क्षीणशुक्रस्य लक्षणम्।। च.सू. 17.69

पुरीषक्षय के लक्षण (Symptoms of purisha kshaya)

- क्षीणे शकृति चान्त्राणि पीडयन्निव मारुतः।
  रूक्षस्योन्नमयन् कुक्षिं तिर्यगूर्ध्वं च गच्छति।। च.सू. 17.70

मूत्रक्षय के लक्षण (Symptoms of mutra kshaya)

- मूत्रक्षये मूत्रकृच्छ्रं मूत्रवैवर्ण्यमेव च।
  पिपासा बाधते चास्य मुखं च परिशुष्यति।। च.सू. 17.71

मलायनों के मलक्षय के लक्षण

(Symptoms of kshaya of malayana malas)

- मलायनानि चान्यानि शून्यानि च लघूनि च।
  विशुष्काणि च लक्ष्यन्ते यथास्वं मलसंक्षये।। च.सू. 17.72

धात्वादि	क्षय के लक्षण
रस धातु	– अल्प श्रम से हृदय में दबाने या हिलाने जैसी पीड़ा – उच्च शब्द के प्रति असहिष्णुता – हृदय शूल
रक्त धातु	त्वचा में:–परुषता–स्फुटता–म्लानता–रूक्षता

धात्वादि	क्षय के लक्षण
मांस धातु	- स्फिक् - ग्रीवा एवं उदर में: शुष्कता
मेद धातु	- सन्धि स्फुटन - अक्षि ग्लानि - आयास - उदर का तनुत्व
अस्थि धातु	- केश - लोम - नख - श्मश्रु - दन्त का: प्रपतन - श्रम-सन्धिशैथिल्य
मज्जा धातु	- अस्थि में शीर्णता, दुर्बलता एवं लघुता-सतत वातरोग से पीड़ित
शुक्र धातु	- दौर्बल्य - मुखशोष - पाण्डुत्व - सदन - श्रम - क्लैब्य - शुक्र का अविसर्ग
पुरीष	- आन्त्र पीड़न - कुक्षि: उन्नमयन, तिर्यक् एवं ऊर्ध्व गमन
मूत्र	- मूत्रकृच्छ्र - मूत्रवैवर्ण्य - पिपासा - मुखशोष
मलायन के मल	- शून्यता - लघुता

ओज (Ojas)

ओज: क्षय के लक्षण (Symptoms of ojas - kshaya)

- बिभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितेन्द्रिय:।
  दुश्छायो दुर्मना रूक्ष: क्षामश्चैवौजस: क्षये।। च.सू. 17.73

ओज स्वरूप (Features of Ojas)

- हृदि तिष्ठति यच्छुद्धं रक्तमीषत्सपीतकम्।
  ओज: शरीरे संख्यातं तन्नाशान्ना विनश्यति।। च.सू. 17.74
  - हृदय में आश्रित
  - रक्त या ईषत् पीत वर्णीय
  - इसके नाश से शरीर का नाश

ओजोत्पत्ति (Origin of Ojas)

- प्रथमं जायते ह्योज: शरीरेऽस्मिञ्छरीरिणाम्।
  सर्पिर्वर्णं मधुरसं लाजगन्धि प्रजायते।।
  (भ्रमरै: फलपुष्पेभ्यो यथा संभ्रियते मधु।
  तद्वदोज: स्वकर्मभ्यो गुणै: संभ्रियते नृणाम्।)
  च.सू. 17.75(1)

शरीर में सर्वप्रथम ओज की ही उत्पत्ति होती है।

- वर्ण: सर्पिवत्
- रस: मधुवत्
- गन्ध: लाजवत्

मधुमेह पिडिका (Madhumeha pidika) -7

पिडिका नाम	लक्षण
शराविका (Sharavika)	अन्तोन्नता मध्यनिम्ना श्यावा क्लेदरुगन्विता। शराविका स्यात् पिडका शरावाकृतिसंस्थिता।। च.सू. 17.84
कच्छपिका (Kaccha-pika)	अवगाढार्तिनिस्तोदा महावास्तुपरिग्रहा। श्लक्ष्णा कच्छपपृष्ठाभा पिडका कच्छपी मता।। च.सू. 17.85
जालिनी (Jalini)	स्तब्धा सिराजालवती स्निग्धास्रावा महाशया। रुजानिस्तोदबहुला सूक्ष्मच्छिद्रा च जालिनी।। च.सू. 17.86
सर्षपी (Sarshapi)	पिडका नातिमहती क्षिप्रपाका महारुजा। सर्षपी सर्षपाभाभिः पिडकाभिश्चिता भवेत्।। च.सू. 17.87
अलजी (Alaji)	दहति त्वचमुत्थाने तृष्णामोहज्वरप्रदा। विसर्पत्यनिशं दुःखाद्दहत्यग्निरिवालजी।। च.सू. 17.88
विनता (Vinata)	अवगाढरुजाक्लेदा पृष्ठे वाऽप्युदरेऽपि वा। महती विनता नीला पिडका विनता मता।। च.सू. 17.89
विद्रधि (Vidradhi)	विद्रधिं द्विविधामाहुर्बाह्यामाभ्यन्तरीं तथा। बाह्या त्वक्स्नायुमांसोत्था कण्डराभा महारुजा।। च.सू. 17.90

विद्रधि की व्याख्या (Definition of Vidradhi)

- दुष्टरक्तातिमात्रत्वात् स वै शीघ्रं विदह्यते।।
  ततः शीघ्रविदाहित्वाद्विद्रधीत्यभिधीयते।। च.सू. 17.95

दूषित रक्त की अधिकता से इस विद्रधि में शीघ्र ही दाह उत्पन्न होता है। शीघ्र विदाह होने के कारण इसे 'विद्रधि' कहते हैं।

पच्यमान विद्रधि के लक्षण (Features of pachyamana vidradhi)

- शस्त्रास्त्रैर्भिद्यत इव चोल्मुकैरिव दह्यते।
  विद्रधी व्यम्लतां याता वृश्चिकैरिव दश्यते।। च.सू. 17.98
  - शस्त्र एवं अस्त्र से भेदनवत् पीड़ा
  - उल्मुक से दहनवत् पीड़ा
  - वृश्चिक दंशवत् पीड़ा (विशेष दाह को प्राप्त होने पर)

स्थानानुसार अन्तर्विद्रधि के लक्षण (Symptoms of antar-vidradhi according to the site)

अन्तर्विद्रधि का स्थान	लक्षण
प्रधान मर्म अर्थात् हृदय	– हृद्धट्टन – तमक श्वास – प्रमोह – कास – श्वास
क्लोम	– पिपासा – मुखशोष – गलग्रह
यकृत्	श्वास

अन्तर्विद्रधि का स्थान	लक्षण
प्लीहा	उच्छ्वासोपरोध
कुक्षि	कुक्षि और पार्श्व के अन्तर अंस में शूल
वृक्क	-पृष्ठग्रह-कटिग्रह
नाभि	हिक्का
वंक्षण	सक्थिसाद
बस्ति	मूत्र एवं वर्च प्रवृत्ति में कष्ट एवं पूतिगन्धता

असह्य पिडिकायें (Distressing pidikas)

- **शराविका कच्छपिका जालिनी चेति दुःसहाः।**
  जायन्ते ता ह्यतिबलाः प्रभूतश्लेष्ममेदसः।। च.सू. 17.105

शराविका	कच्छपिका	जालिनी

साध्य पिडिकायें (Curable pidikas)

- **सर्षपी चालजी चैव विनता विद्रधी च याः।**
  साध्याः पित्तोल्बणास्तास्तु संभवन्त्यल्पमेदसः।। च.सू. 17.106

सर्षपी	अलजी	विनता	विद्रधि

असाध्य पिडिकाओं के स्थान (Sites of incurable pidikas)

- **मर्मस्वंसे गुदे पाण्योः स्तने सन्धिषु पादयोः।**
  जायन्ते यस्य पिडकाः स प्रमेही न जीवति।। च.सू. 17.107

मर्म	अंस	गुद	पाणि
स्तन	सन्धि	पाद	

पिडकाओं के उपद्रव (Complications of pidikas)

- **तृट्श्वासमांससंकोथमोहहिक्कामदज्वराः।**
  वीसर्पमर्मसंरोधाः पिडकानामुपद्रवाः।। च.सू. 17.111

तृष्णा	श्वास	मांससंकोथ	मोह	हिक्का
मद	ज्वर	विसर्प	मर्मसंरोध	

पित्त की ऊष्मा (Ushma of pitta)

- **पित्तादेवोष्मणः पक्तिर्नराणामुपजायते।**
  तच्च पित्तं प्रकुपितं विकारान् कुरुते बहून्।। च.सू. 17.116

प्रकृतिस्थ पित्त की ऊष्मा से ही मनुष्यों के आहार का पाचन होता है।

कफ ही बल है (Kapha is the bala)

- **प्राकृतस्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते।**
  स चैवौजः स्मृतः काये स च पाप्मोपदिश्यते।। च.सू. 17.117

प्रकृतिस्थ कफ दोष बल (strength) कहलाता है।

• • •

18. त्रिशोथीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-56

त्रिविध एवं द्विविध शोथ

(Three and two types of shotha)

- त्रयः शोथा भवन्ति वातपित्तश्लेष्मनिमित्ताः, ते पुनर्द्विविधा निजागन्तुभेदेन।। च.सू. 18.3

त्रिविध शोथ	द्विविध शोथ
1. वातज	1. निज
2. पित्तज	2. आगन्तु
3. कफज	

शोथ के विविध भेद (Various types of shotha)

- प्रकृतिभिस्ताभिस्ताभिर्भिद्यमानो द्विविधस्त्रिविधश्चतुर्विधः सप्तविधोऽष्टविधश्च शोथ उपलभ्यते, पुनश्चैक एवोत्सेधसामान्यात्।। च.सू. 18.8

चरकोक्त विविध शोथ भेद

(Various types of shotha - as per sage Charaka)

एकविध शोथ	सभी में शोथ की समानता होने से।
द्विविध शोथ	1. निज 2. आगन्तुज
त्रिविध शोथ	1. वातज 2. पित्तज 3. कफज
चतुर्विध शोथ	1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. आगन्तुज
सप्तविध शोथ	1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. वातपित्तज 5. वातकफज 6. पित्तकफज 7. सन्निपातज

अष्टविध शोथ	1. वातज 2. पित्तज 3. कफज 4. वातपित्तज 5. वातकफज 6. पित्तकफज 7. सन्निपातज 8. आगन्तुज

शोथ के उपद्रव (Complications of shotha)

- **छर्दिः श्वासोऽरुचिस्तृष्णा ज्वरोऽतीसार एव च।**
  सप्तकोऽयं सदौर्बल्यः शोफोपद्रवसंग्रहः।। च.सू. 18.18

छर्दि	श्वास	अरुचि	तृष्णा
ज्वर	अतिसार	दौर्बल्य	

उपजिह्विका (Upajihvika)

- **यस्य श्लेष्मा प्रकुपितो जिह्वामूलेऽवतिष्ठते।**
  आशु संजनयेच्छोथं जायतेऽस्योपजिह्विका।। च.सू. 18.19

प्रकुपित कफ जिह्वा मूल में स्थित होकर शीघ्र शोथ उत्पन्न करता है। यह 'उपजिह्विका' है।

गलशुण्डिका (Galashundika)

- **यस्य श्लेष्मा प्रकुपितः काकले व्यवतिष्ठते।**
  आशु संजनयेच्छोफं करोति गलशुण्डिकाम्।। च.सू. 18.20

प्रकुपित कफ काकल में स्थित होकर उस स्थान में शोथ पैदा करता है। यह 'गलशुण्डिका' है।

गलगण्ड (Galaganda)

- **यस्य श्लेष्मा प्रकुपितो गलबाह्येऽवतिष्ठते।**
  शनैः संजनयेच्छोफं गलगण्डोऽस्य जायते।। च.सू. 18.21

प्रकुपित कफ गल के बाहरी तरफ स्थित होकर धीरे-धीरे शोफ को उत्पन्न करता है। यह 'गलगण्ड' कहलाता है।

गलग्रह (Galagraha)

- **यस्य श्लेष्मा प्रकुपितस्तिष्ठत्यन्तर्गले स्थिरः।**
  आशु संजनयेच्छोफं जायतेऽस्य गलग्रहः।। च.सू. 18.22

प्रकुपित कफ गल प्रदेश के भीतर स्थित होकर शीघ्र ही शोथ को उत्पन्न करता है। यह 'गलग्रह' है।

विसर्प (Visarpa)

- **यस्य पित्तं प्रकुपितं सरक्तं त्वचि सर्पति।**
  शोफं सरागं जनयेद्विसर्पस्तस्य जायते।। च.सू. 18.23

पित्त एवं रक्त प्रकुपित होकर त्वचा में फैलता है और रक्तवर्णीय शोथ को उत्पन्न करता है। इसे 'विसर्प' कहते हैं।

शंखक (Shankhaka)

- **यस्य पित्तं प्रकुपितं शंखयोरवतिष्ठते।**
  श्वयथुः शंखको नाम दारुणस्तस्य जायते।। च.सू. 18.26

प्रकुपित पित्त शंख प्रदेश में स्थित होकर दारुण शोथ को उत्पन्न करता है। इसे 'शंखक' रोग कहते हैं।

कर्णमूल शोथ (Karna mula shotha)

- **यस्य पित्तं प्रकुपितं कर्णमूलेऽवतिष्ठते।**
  ज्वरान्ते दुर्जयोऽन्ताय शोथस्तस्योपजायते।। च.सू. 18.27

ज्वर के अन्त में प्रकुपित पित्त कर्णमूल में स्थित होकर दुर्जय शोथ को उत्पन्न करता है।

गुल्म (Gulma)

- **यस्य वायुः प्रकुपितो गुल्मस्थानेऽवतिष्ठते।**
  शोफं सशूलं जनयन् गुल्मस्तस्योपजायते।। च.सू. 18.29

प्रकुपित वायु गुल्म स्थान में आकर शोफ और शूल उत्पन्न करता है। इसे 'गुल्म' रोग कहते हैं।

वृद्धिरोग (Vrddhi roga)

- **यस्य वायुः प्रकुपितः शोफशूलकरश्चरन्।**
  वंक्षणाद्वृषणौ याति वृद्धिस्तस्योपजायते।। च.सू. 18.30

प्रकुपित वायु शोफ एवं शूल को उत्पन्न कर वंक्षण एवं वृषण प्रदेश में स्थित होकर 'वृद्धिरोग' को उत्पन्न करता है।

उदररोग (Udara roga)

- **यस्य वातः प्रकुपितस्त्वङ्मांसान्तरमाश्रितः।**
  शोथं संजनयेत् कुक्षावुदरं तस्य जायते।। च.सू. 18.31

प्रकुपित वायु त्वचा एवं मांस के बीच में स्थित होकर कुक्षिप्रदेश में शोथ को उत्पन्न करता है। यह 'उदररोग' कहलाता है।

आनाह (Anaha)

- **यस्य वातः प्रकुपितः कुक्षिमाश्रित्य तिष्ठति।**
  नाधो व्रजति नाप्यूर्ध्वमानाहस्तस्य जायते।। च.सू. 18.32

प्रकुपित वायु कुक्षि में आश्रित होकर न ऊर्ध्व मार्ग से और न अधः मार्ग से निकल पाता है। इसे 'आनाह' कहते हैं।

रोहिणी (Rohini)

- **वातपित्तकफा यस्य युगपत् कुपितास्त्रयः।**
  जिह्वामूलेऽवतिष्ठन्ते विदहन्तः समुच्छ्रिताः।।

जनयन्ति भृशं शोथं वेदनाश्च पृथग्विधाः।
तं शीघ्रकारिणं रोगं रोहिणीति विनिर्दिशेत्।।
त्रिरात्रं परमं तस्य जन्तोर्भवति जीवितम् ।
कुशलेन त्वनुक्रान्तः क्षिप्रं संपद्यते सुखी।। च.सू. 18.34-36

त्रिदोष प्रकुपित होकर जिह्वा मूल में स्थित होकर विदाह उत्पन्न कर अत्यन्त शोथ एवं विविध वेदनाओं को उत्पन्न करता है। इसे 'रोहिणी' रोग कहते हैं। इससे ग्रस्त रोगी केवल 3 रात्रि पर्यन्त जीवित रहता है।

रोगों के नामकरण के लिए नियम (Naming of a disease)

- विकारानामाकुशलो न जिह्रीयात् कदाचन।
  न हि सर्वविकाराणां नामतोऽस्ति ध्रुवा स्थितिः।। च.सू. 18.44

कुशल चिकित्सक यदि किसी रोग विशेष का नाम निर्धारण न कर सके तो उसको अपनी इस अज्ञानता से लज्जित नहीं होना चाहिए क्योंकि जितने रोग होते हैं उन सबका नाम निर्धारण करना सम्भव नहीं है।

प्राकृत वात दोष के कर्म
(Normal functions of vata dosha)

- उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टा धातुगतिः समा।
  समो मोक्षो गतिमतां वायोः कर्माविकारजम्।। च.सू. 18.49

– उत्साह – उच्छ्वास – निःश्वास – चेष्टा–धातुओं की सम्यक् गति – मलमूत्रादि का सम्यक् रूप से मोक्षण

प्राकृत पित्त दोष के कर्म
(Normal functions of pitta dosha)

- दर्शनं पक्तिरूष्मा च क्षुत्तृष्णा देहमार्दवम्।
  प्रभा प्रसादो मेधा च पित्तकर्माविकारजम्।। च.सू. 18.50

– दर्शन – पक्ति – ऊष्मा – क्षुधा – तृष्णा – देह की मार्दवता – प्रभा – प्रसाद – मेधा

प्राकृत कफ दोष के कर्म
(Normal functions of kapha dosha)

- स्नेहो बन्धः स्थिरत्वं च गौरवं वृषता बलम्।
  क्षमा धृतिरलोभश्च कफकर्माविकारजम्।। च.सू. 18.51

– स्नेह – बन्ध – स्थिरत्व – गौरव – वृषता – बल – क्षमा – धृति – अलोभ

• • •

19. अष्टोदरीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-9

सामान्यज व्याधियां (Samanyaja diseases) - 48

उदररोग-8	मूत्राघात-8	क्षीरदोष-8	रेतोदोष-8
कुष्ठ-7	पिडका-7	विसर्प-7	अतिसार-6
उदावर्त-6	गुल्म-5	प्लीहा दोष-5	कास-5
श्वास-5	हिक्का-5	तृष्णा-5	छर्दि-5
भक्तस्थान-शनस्थान-5	शिरोरोग-5	हृद्रोग-5	पाण्डुरोग-5
उन्माद-5	अपस्मार-4	अक्षिरोग-4	कर्णरोग-4
प्रतिश्याय-4	मुखरोग-4	ग्रहणीदोष-4	मद-4
मूर्च्छा-4	शोष-4	क्लैब्य-4	शोफ-3
किलास-3	रक्तपित्त-3	ज्वर-2	व्रण-2

आयाम-2	गृध्रसी-2	कामला-2	आम-2
वातरक्त-2	अर्श-2	ऊरुस्तम्भ-1	संन्यास-1
महागद-1	क्रिमि-20	प्रमेह-20	योनिव्यापद्-20

सामान्यज व्याधियों के भेद

(Classification of samanyaja diseases)

व्याधि नाम	भेद	भेदों के नाम (च.सू. 19.4)
उदररोग	8	वातपित्तकफसन्निपातप्लीहबद्धच्छिद्रदकोदराणि।
मूत्राघात	8	वातपित्तकफसन्निपाताश्मरीशर्कराशुक्रशोणितजाः।
क्षीरदोष	8	वैवर्ण्यं वैगन्ध्यं वैरस्यं पैच्छिल्यं फेनसंघातो रौक्ष्यं गौरवमतिस्नेहश्च।
रेतोदोष	8	तनु शुष्कं फेनिलमश्वेतं पूत्यतिपिच्छलमन्यधातूपहितमवसादि च।
कुष्ठ	7	कपालोदुम्बरमण्डलर्ष्यजिह्वपुण्डरीकसिध्मकाकणानि।
पिडका	7	शराविका कच्छपिका जालिनी सर्षप्यलजी विनता विद्रधी च।
विसर्प	7	वातपित्तकफाग्निकर्दमकग्रन्थिसन्निपाताख्याः।
अतिसार	6	वातपित्तकफसन्निपातभयशोकजाः।
उदावर्त	6	वातमूत्रपुरीषशुक्रच्छर्दिक्षवथुजाः।

व्याधि नाम	भेद	भेदों के नाम (च.सू. 19.4)
गुल्म	5	वातपित्तकफसन्निपातशोणितजाः।
प्लीहादोष	5	इति गुल्मैर्व्याख्याताः।
कास	5	वातपित्तकफक्षतक्षयजाः।
श्वास	5	महोर्ध्वच्छिन्नतमकक्षुद्राः।
हिक्का	5	महती गम्भीरा व्यपेता क्षुद्राऽन्नजा च।
तृष्णा	5	वातपित्तामक्षयोपसर्गात्मिकाः।
छर्दि	5	द्विष्टार्थसंयोगजा वातपित्तकफसन्निपातोद्रेकोत्थाश्च।
भक्तस्या-नशनस्थान	5	वातपित्तकफसन्निपातद्वेषाः।
शिरोरोग	5	वातपित्तकफसन्निपातक्रिमिजाः।
हृद्रोग	5	इति शिरोरोगैर्व्याख्याताः।
पाण्डुरोग	5	वातपित्तकफसन्निपातमृद्भक्षणजाः।
उन्माद	5	वातपित्तकफसन्निपातागन्तुनिमित्ताः।
अपस्मार	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
अक्षिरोग	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
कर्णरोग	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
प्रतिश्याय	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
मुखरोग	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।

व्याधि नाम	भेद	भेदों के नाम (च.सू. 19.4)
ग्रहणीदोष	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
मद	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
मूर्च्छा	4	वातपित्तकफसन्निपातनिमित्ताः।
शोष	4	साहससन्धारणक्षयविषमाशनजाः।
क्लैब्य	4	बीजोपघाताद्ध्वजभंगाज्जरायाः शुक्रक्षयाच्च।
शोफ	3	वातपित्तश्लेष्मनिमित्ताः।
किलास	3	रक्तताम्रशुक्लानि।
रक्तपित्त	3	ऊर्ध्वभागमधोभागमुभयभागं च।
ज्वर	2	उष्णाभिप्रायः शीतसमुत्थश्च शीताभिप्रायश्चोष्ण-समुत्थः।
व्रण	2	निजश्चागन्तुजश्च।
आयाम	2	बाह्यश्चाभ्यन्तरश्च।
गृध्रसी	2	वाताद्वातकफाच्च।
कामला	2	कोष्ठाश्रया शाखाश्रया च।
आम	2	अलसको विसूचिका च।
वातरक्त	2	गम्भीरमुत्तानं च।
अर्श	2	शुष्काण्यर्द्राणि च।
ऊरुस्तम्भ	1	इत्यामत्रिदोषसमुत्थः।

व्याधि नाम	भेद	भेदों के नाम (च.सू. 19.4)
संन्यास	1	त्रिदोषात्मको मनःशरीराधिष्ठानः।
महागद	1	इति अतत्त्वाभिनिवेशः।
क्रिमि	20	यूका पिपीलिकाश्चेति द्विविधा बहिर्मलजाः, केशादा लोमादा लोमद्वीपाः सौरसा औदुम्बरा जन्तुमातरश्चेति षट् शोणितजाः, अन्त्रादा उदरावेष्टा हृदयादाश्चुरवो दर्भपुष्पाः सौगन्धिका महागुदाश्चेति सप्त कफजाः, ककेरुका मकेरुका लेलिहाः सशूलकाः सौसुरादाश्चेति पञ्च पुरीषजाः।
प्रमेह	20	इत्युदकमेहश्चेक्षुबालिकारसमेहश्च सान्द्रमेहश्च सान्द्रप्रसादमेहश्च शुक्लमेहश्च शुक्रमेहश्च शीतमेहश्च शनैर्मेहश्च सिकतामेहश्च लालामेहश्चेति दश श्लेष्मनिमित्ताः, क्षारमेहश्च कालमेहश्च नीलमेहश्च लोहितमेहश्च मञ्जिष्ठामेहश्च हरिद्रामेहश्चेति षट् पित्तनिमित्ताः, वसामेहश्च मज्जामेहश्च हस्तिमेहश्च मधुमेहश्चेति चत्वारो वातनिमित्ताः।
योनिव्यापद्	20	वातिकी पैत्तिकी श्लेष्मिकी सान्निपातिकी चेति चतस्रो दोषजाः, दोषदूष्यसंसर्गप्रकृतिनिर्देशैरवशिष्टाः षोडश निर्दिश्यन्ते, तद्यथा-रक्तयोनिश्चारजस्का चाचरणा चातिचरणा च प्राक्चरणा चोपप्लुता च

व्याधि नाम	भेद	भेदों के नाम (च.सू. 19.4)
		परिप्लुता चोदावर्तिनी च कर्णिनी च पुत्रघ्नी चान्तर्मुखी च सूचीमुखी च शुष्का च वामिनी च षण्ढयोनिश्च महायोनिश्चेति विंशतिर्योनिव्यापदो भवन्ति।

निज विकारों के मूलभूत कारण
(Root cause for nija diseases)

- **सर्व एव निजा विकारा नान्यत्र वातपित्तकफेभ्यो निर्वर्तन्ते।**

च.सू. 19.5

सभी निज विकार वात, पित्त एवं कफ के अतिरिक्त नहीं होते हैं।

• • •

20. महारोगाध्याय

कुल श्लोक संख्या-25

रोग (Roga - disease)

चतुर्विध भेद (Four types)

- चत्वारो रोगा भवन्ति-आगन्तुवातपित्तश्लेष्मनिमित्ताः।

च.सू. 20.3

चतुर्विध रोग			
आगन्तु	वात	पित्त	श्लेष्म

एकविध भेद (One type)

- तेषां चतुर्णामपि रोगाणां रोगत्वमेकविधं भवति, रुक्सामान्यात्।

च.सू. 20.3

द्विविध प्रकृति (Two prakrtis of diseases)

- द्विविधा पुनः प्रकृतिरेषाम्, आगन्तुनिजविभागात्। च.सू. 20.3

द्विविध प्रकृति	
आगन्तु	निज

द्विविध अधिष्ठान (Two abodes)

- द्विविधं चैषामधिष्ठानं, मनःशरीरविशेषात्। च.सू. 20.3

द्विविध रोग अधिष्ठान	
मन	शरीर

असंख्येय (Innumerability)

- विकाराः पुनरपरिसंख्येयाः, प्रकृत्यधिष्ठानलिंगायतनविकल्प-विशेषापरिसंख्येयत्वात्। च.सू. 20.3

व्याधियों के प्रेरक (Initiators of diseases)

- द्वयोस्तु खल्वागन्तुनिजयोः प्रेरणमसात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः, प्रज्ञापराधः, परिमाणश्चेति।। च.सू. 20.5

आगन्तुज एवं निज व्याधियों में भेद (Difference between agantuja & nija diseases)

- आगन्तुर्हि व्यथापूर्वं समुत्पन्नो जघन्यं वातपित्तश्लेष्मणां वैषम्यमापादयति; निजे तु वातपित्तश्लेष्माणः पूर्वं वैषम्यमापद्यन्ते जघन्यं व्यथामभिनिर्वर्तयन्ति।। च.सू. 20.7

दोषों के स्थान (Sites of doshas)

वात दोष के स्थान (Sites of vata dosha)

- बस्तिः पुरीषाधानं कटिः सक्थिनी पादावस्थीनि पक्वाशयश्च वातस्थानानि, तत्रापि पक्वाशयो विशेषेण वातस्थानम्। च.सू. 20.8

पित्त दोष के स्थान (Sites of pitta dosha)

- स्वेदो रसो लसीका रुधिरमामाशयश्च पित्तस्थानानि, तत्राप्यामाशयो विशेषेण पित्तस्थानम्। च.सू. 20.8

कफ दोष के स्थान (Sites of kapha dosha)

- उरः शिरो ग्रीवा पर्वाण्यामाशयो मेदश्च श्लेष्मस्थानानि, तत्राप्युरो विशेषेण श्लेष्मस्थानम्। च.सू. 20.8

दोष	सामान्य स्थान	विशिष्ट स्थान
वात दोष	-बस्ति (urinary bladder)-पुरीषाधान (rectum)-कटि (waist)-सक्थि (thighs)-पाद (legs)-अस्थि (bones)-पक्वाशय (colon)	पक्वाशय (colon)
पित्त दोष	-स्वेद (sweat)-रस (plasma) -लसीका (lymph)-रुधिर (blood) -आमाशय (stomach)	आमाशय (stomach)

दोष	सामान्य स्थान	विशिष्ट स्थान
कफ दोष	-उरः (chest)-शिर (head)-ग्रीवा (neck)-पर्व (joints)-आमाशय (stomach)-मेद (fat)	उरः (chest)

विकार (Vikara - disease)

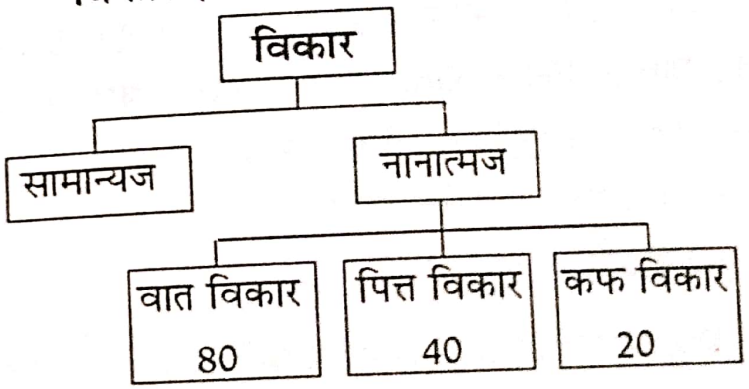

वात दोष (Vata dosha)

आत्मरूप (Inherent qualities)

- रौक्ष्यं शैत्यं लाघवं वैशद्यं गतिरमूर्तत्वमनवस्थितत्वं चेति वायोरात्मरूपाणि। च.सू. 20.12

रौक्ष्य (dryness)	शैत्य (coldness)	लाघव (lightness)	वैशद्य (clearness)
गति (move-ment)	अमूर्तत्व (shapeless-ness)	अनवस्थितत्व (unstability)	

विकृत कर्म (Abnormal functions)

- स्रंसभ्रंसव्यासंगभेदसादहर्षतर्षकम्पवर्तचालतोदव्यथा-चेष्टादीनि, तथा खरपरुषविशदसुषिरारुणवर्णकषायविरस मुखत्वशोषशूलसुप्तिसंकोचनस्तम्भनखञ्जतादीनि च वायोः कर्माणि।

च.सू. 20.12

– स्रंस – भ्रंस – व्यास – संग – भेद – साद – हर्ष – तर्ष – कम्प – वर्त – चाल – तोद – व्यथा – चेष्टा – खर – परुष – विशद – सुषिर – अरुण वर्ण – कषाय रस – विरस मुखत्व – शोष – शूल – सुप्ति – संकोचन – स्तम्भन – खञ्जता आदि।

सामान्य चिकित्सा (General treatment)

- तं मधुराम्ललवणस्निग्धोष्णैरुपक्रमैरुपक्रमेत, स्नेहस्वेदास्थापनानुवासननस्तःकर्मभोजनाभ्यंगोत्सादनपरिषेकादिभिर्वातहरैर्मात्रां कालं च प्रमाणीकृत्य; तत्रास्थापनानुवासनं तु खलु सर्वत्रोपक्रमेभ्यो वाते प्रधानतमं मन्यन्ते भिषजः।

च.सू. 20.13

– मधुर, अम्ल, लवण, स्निग्ध एवं उष्ण उपक्रम

– स्नेहन – स्वेदन – आस्थापन बस्ति – अनुवासन बस्ति – नस्यकर्म – वातघ्न भोजन – अभ्यंग – उत्सादन – परिषेक आदि प्रधानतम उपक्रम – आस्थापन बस्ति एवं अनुवासन बस्ति

पित्त दोष (Pitta dosha)

आत्मरूप (Inherent qualities)

- औष्ण्यं तैक्ष्ण्यं द्रवत्वमनतिस्नेहो वर्णश्च शुक्लारुणवर्जो गन्धश्च विस्रो रसौ च कटुकाम्लौ सरत्वं च पित्तस्यात्मरूपाणि।

च.सू. 20.15

औष्ण्य (heat)	तैक्ष्ण्य (sharp-ness)	द्रवत्व (fluidity)	न अतिस्नेह (slight unc-tuosness
शुक्ल एवं अरुण वर्ण के अतिरिक्त वर्ण (all colors excluding white and red	विस्र गन्ध (putrid smell	कटु रस (pungent taste)	अम्ल रस (sour taste)
सरत्व (free flowing)			

विकृत कर्म (Abnormal functions)

- दाहौष्ण्यपाकस्वेदक्लेदकोथकण्डूस्रावरागा यथास्वं च गन्धवर्णरसाभिनिर्वर्तनं पित्तस्य कर्माणि। च.सू. 20.15

– दाह – उष्णता – पाक – स्वेद – क्लेद – कोथ – कण्डु – स्राव – राग – अपने अनुरूप गन्ध, वर्ण, रस की उत्पत्ति करना।

सामान्य चिकित्सा (General treatment)

- तं मधुरतिक्तकषायशीतैरुपक्रमैरुपक्रमेत स्नेहविरेकप्रदेह-परिषेकाभ्यंगादिभिः पित्तहरैर्मात्रां कालं च प्रमाणीकृत्य; विरेचनं तु सर्वोपक्रमेभ्यः पित्ते प्रधानतमं मन्यन्ते भिषजः।

च.सू. 20.16

– मधुर, तिक्त, कषाय एवं शीत उपक्रम

– स्नेहन – विरेचन – प्रदेह – परिषेक – अभ्यंग आदि पित्तहर उपक्रम

– प्रधानतम उपक्रम – विरेचन

कफ दोष (Kapha dosha)

आत्मरूप (Inherent qualities)

- स्नेहशैत्यशौक्ल्यगौरवमाधुर्यस्थैर्यपैच्छिल्यमात्स्र्यानि श्लेष्मण आत्मरूपाणि। च.सू. 20.18

स्नेह (unctuous-ness	शैत्य (coldness)	शौक्ल्य (white-ness	गौरव (heavi-ness)
माधुर्य (sweet-ness	स्थैर्य (stability)	पैच्छिल्य (slimi-ness	मात्स्र्य (visco-

विकृत कर्म (Abnormal functions)

- श्वैत्यशैत्यकण्डूस्थैर्यगौरवस्नेहसुप्तिक्लेदोपदेहबन्धमाधुर्य-चिरकारित्वानि श्लेष्मणः कर्माणि। च.सू. 20.18

– श्वैत्य – शैत्य – कण्डू – स्थैर्य – गौरव – स्नेह – सुप्ति – क्लेद – उपदेह – बन्ध – माधुर्य – चिरकारिता।

सामान्य चिकित्सा (General treatment)

- तं कटुकतिक्तकषायतीक्ष्णोष्णरूक्षैरुपक्रमैरुपक्रमेत स्वेदवमन शिरोविरेचनव्यायामादिभिः श्लेष्महरैर्मात्रां कालं च प्रमाणी कृत्य; वमनं तु सर्वोपक्रमेभ्यः श्लेष्मणि प्रधानतमं मन्य भिषजः। च.सू. 20.

– कटु, तिक्त, कषाय, तीक्ष्ण, उष्ण एवं रूक्ष उपक्रम

– स्वेदन – वमन – शिरोविरेचन – व्यायाम आदि कफघ्न उपक्र

प्रधानतम उपक्रम – वमन

रोग परीक्षा का महत्त्व
(Importance of disease examination)

- रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम्।
  ततः कर्म भिषक् पश्चाज्ज्ञानपूर्वं समाचरेत्।। च.सू. 2

सर्वप्रथम रोग की परीक्षा करें। तत्पश्चात् औषध की परीक्षा तदनन्तर शास्त्र एवं व्यवहार ज्ञान के अनुसार भिषक् चिकित्सा कर्म

• • •

21. अष्टौनिन्दितीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-62

अष्टविध निन्दनीय पुरुष
(Eight blameworthy individuals)

- इह खलु शरीरमधिकृत्याष्टौ पुरुषा निन्दिता भवन्ति; तद्यथा- अतिदीर्घश्च, अतिह्रस्वश्च, अतिलोमा च, अलोमा च, अतिकृष्णश्च, अतिगौरश्च, अतिस्थूलश्च, अतिकृशश्चेति।।

च.सू. 21.3

- अतिदीर्घ	- अतिह्रस्व	- अतिलोमा	- अलोमा
- अतिकृष्ण	- अतिगौर	- अतिस्थूल	- अतिकृश

अतिस्थूल पुरुष के अष्ट दोष
(Eight doshas of obese person)

- अतिस्थूलस्य तावदायुषो ह्रासो जवोपरोधः कृच्छ्रव्यवायता दौर्बल्यं दौर्गन्ध्यं स्वेदाबाधः क्षुदतिमात्रं पिपासातियोगश्चेति भवन्त्यष्टौ दोषाः।

च.सू. 21.4

- आयु ह्रास	- जवोपरोध	- कृच्छ्रव्यवायता	- दौर्बल्य
- दौर्गन्ध्य	- स्वेदाबाध	- अतिमात्र में क्षुधा	- पिपासा का अतियोग

स्थौल्य की सम्प्राप्ति (Pathogenesis of obesity)

- मेदसाऽऽवृतमार्गत्वाद्वायुः कोष्ठे विशेषतः।
चरन् संधुक्षयत्यग्निमाहारं शोषयत्यपि।।
तस्मात् स शीघ्रं जरयत्याहारं चातिकांक्षति।
विकारांश्चाश्नुते घोरान् काश्चित्कालव्यतिक्रमात्।।
एतावुपद्रवकरौ विशेषादग्निमारुतौ।
एतौ हि दहतः स्थूलं वनदावो वनं यथा।।
मेदस्यतीव संवृद्धे सहसैवानिलादयः।
विकारान् दारुणान् कृत्वा नाशयन्त्याशु जीवितम्।।

च.सू. 21.5-8

मेद धातु द्वारा स्रोतों के मार्गों के अवरुद्ध हो जाने से वायु विशेषतः कोष्ठ प्रदेश में विचरण करता हुआ जठराग्नि को तीव्र कर देता है; आहार का भी शोषण कर देता है। वह भोजन को शीघ्र पाचता है अतएव आहार की आवश्यकता भी अधिक बढ़ जाती है। ऐसी अवस्था में भोजन न मिलने पर त्रिदोष जनित अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है। विशेष रूप से पाचकपित्त और वायु उपद्रवकारक सिद्ध होते हैं और ये ही स्थूल

व्यक्ति को उसी प्रकार जलाते हैं जिस प्रकार दावाग्नि वायु का सम्पर्क पाकर वन को जला डालती है। मेद धातु के अधिक वृद्ध हो जाने पर सहसा प्रकुपित हुए वातादि दोष भयंकर रोगों को उत्पन्न कर अतिस्थूल पुरुष के जीवन का नाश कर देते हैं।

अतिस्थूल की परिभाषा (Definition of ati-sthula-obese)

- **मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः।**
  अयथोपचयोत्साहो नरोऽतिस्थूल उच्यते।। च.सू. 21.9

मेद एवं मांस की अत्यधिक वृद्धि से व्यक्ति के स्फिक्, उदर एवं स्तन चलने पर हिलते रहते हैं तथा उसके शरीर के उपचय के अनुसार उत्साह नहीं होता है। ऐसे व्यक्ति को अतिस्थूल कहते हैं।

अतिकार्श्य के दोष

(Ill - effects of ati-karshya - excessive leanness)

- **व्यायाममतिसौहित्यं क्षुत्पिपासामयौषधम्।**
  कृशो न सहते तद्वदतिशीतोष्णमैथुनम्।।
  प्लीहा कासः क्षयः श्वासो गुल्मोऽर्शांस्युदराणि च।
  कृशं प्रायोऽभिधावन्ति रोगाश्च ग्रहणीगताः।। च.सू. 21.13-14

- व्यायाम, अतिसौहित्य, क्षुधा, पिपासा, रोग, औषध, अतिशैत्य, अति उष्णता और मैथुन के प्रति असह्यता
- निम्नलिखित रोग अधिक कष्ट देते हैं –

प्लीहा	कास	क्षय	श्वास
गुल्म	अर्श	उदर रोग	ग्रहणी

अतिकृश पुरुष के लक्षण

(Features of ati-krsha individual)

- **शुष्कस्फिगुदरग्रीवो धमनीजालसन्ततः।**
  त्वगस्थिशेषोऽतिकृशः स्थूलपर्वा नरो मतः।। च.सू. 21.15
  - शुष्क स्फिक्, उदर एवं ग्रीवा
  - धमनी जाल सन्तत
  - त्वचा एवं अस्थि शेष
  - स्थूल पर्व

कार्श्य की श्रेष्ठता (Superiority of karshya)

- **स्थौल्यकार्श्ये वरं कार्श्यं समोपकरणौ हि तौ।**
  यद्युभौ व्याधिरागच्छेत् स्थूलमेवातिपीडयेत्।। च.सू. 21.17

स्थौल्य < कार्श्य

स्वस्थ पुरुष के लक्षण (Features of swastha purusha)

- **सममांसप्रमाणस्तु समसंहननो नरः।**
  दृढेन्द्रियो विकाराणां न बलेनाभिभूयते।।
  क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः।
  समपक्ता समजरः सममांसचयो मतः।। च.सू. 21.18-19

- मांस का प्रमाण सम होना
- संहनन का सम होना
- इन्द्रियों का दृढ़ होना
- क्षुधा, पिपासा और आतप को सहने में सक्षम होना
- शीत, व्यायाम को सहने में सक्षम होना
- जठराग्नि का सम होना
- भुक्त आहार का सम्यक् रूप से पचना।

स्थौल्य एवं कार्श्य चिकित्सा सूत्र

(Treatment module for sthaulya & karshya)

- **गुरु चातर्पणं चेष्टं स्थूलानां कर्शनं प्रति।**
  कृशानां बृंहणार्थं च लघु संतर्पणं च यत्।। च.सू. 21.20

स्थौल्य चिकित्सा	गुरु अतर्पण
कार्श्य चिकित्सा	लघु संतर्पण

अतिस्थौल्य चिकित्सा (Treatment of ati-sthaulya)

- **वातघ्नान्यन्नपानानि श्लेष्ममेदोहराणि च।**
  रूक्षोष्णा बस्तयस्तीक्ष्णा रूक्षाण्युद्वर्तनानि च।।
  गुडूचीभद्रमुस्तानां प्रयोगस्त्रैफलस्तथा।
  तक्रारिष्टाप्रयोगश्च प्रयोगो माक्षिकस्य च।।

विडंगं नागरं क्षारः काललोहरजो मधु।
यवामलकचूर्णं च प्रयोगः श्रेष्ठ उच्यते।।
बिल्वादिपञ्चमूलस्य प्रयोगः क्षौद्रसंयुतः।
शिलाजतुप्रयोगश्च साग्निमन्थरसः परः।। च.सू. 21.21-24

- वातघ्न, कफघ्न और मेदोहर अन्नपान
- रूक्ष, उष्ण एवं तीक्ष्ण बस्ति
- रूक्ष उद्वर्तन
- गुडूची, भद्रमुस्ता और त्रिफला प्रयोग
- तक्रारिष्ट
- माक्षिक
- विडंग, शुण्ठी, क्षार एवं काललोज रज + मधु
- यव + आमलक चूर्ण
- बिल्वादि पञ्चमूल + मधु
- शिलाजत्तु + अग्निमन्थ रस।

अतिकार्श्य चिकित्सा (Treatment of ati-karshya)

- **स्वप्नो हर्षः सुखा शय्या मनसो निर्वृतिः शमः।**
  चिन्ताव्यवायव्यायामविरामः प्रियदर्शनम्।।
  नवान्नानि नवं मद्यं ग्राम्यानूपौदका रसाः।

संस्कृतानि च मांसानि दधि सर्पिः पयांसि च।।
इक्षवः शालयो माषा गोधूमा गुडवैकृतम्।
बस्तयः स्निग्धमधुरास्तैलाभ्यंगश्च सर्वदा।।
स्निग्धमुद्वर्तनं स्नानं गन्धमाल्यनिषेवणम्।
शुक्लं वासो यथाकालं दोषाणामवसेचनम्।।
रसायनानां वृष्याणां योगानामुपसेवनम्।
हत्वाऽतिकार्श्यमाधत्ते नृणामुपचयं परम्।। च.सू. 21.29-33

– स्वप्न – हर्ष – सुखद शय्या – मन की दुःख से निवृत्ति – चिन्ता, व्यवाय एवं व्यायाम से विराम – प्रिय दर्शन – नव अन्न एवं मद्य – ग्राम्य, आनूप और औदक मांसरस – संस्कृत मांस, दधि, सर्पि और सर्पि इक्षु आदि का सेवन – स्निग्ध एवं मधुर बस्ति प्रयोग – तैल – अभ्यंग - स्निग्ध उद्वर्तन – स्नानादि – रसायन प्रयोग – वृष्य प्रयोग

निद्रा (Nidra - sleep)

निद्रा का हेतु (Causes of sleep)

- **यदा तु मनसि क्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्विताः।**
  विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा स्वपिति मानवः।। च.सू. 21.35

जब मन क्लान्त हो जाता है और अपने कर्मों में प्रवृत्त सभी इन्द्रियां थककर अपने-अपने विषयों से निवृत्त हो जाती हैं, तब मनुष्य सो जाता है।

निद्रा से लाभ (Benefits of sleep)

- **निद्रायत्तं सुखं दुःखं पुष्टिः कार्श्यं बलाबलम्।**
  वृषता क्लीबता ज्ञानमज्ञानं जीवितं न च।। च.सू. 21.36

सुख एवं दुःख	पुष्टि एवं कार्श्य	बल एवं अबल	वृषता एवं क्लीबता
ज्ञान एवं अज्ञान	जीवन एवं मृत्यु		

दिवाशयन योग्य ऋतु (Season fit for day-sleeping)

- **ग्रीष्मे त्वादानरूक्षाणां वर्धमाने च मारुते।**
  रात्रीणां चातिसंक्षेपाद्दिवास्वप्नः प्रशस्यते।। च.सू. 21.43

जागरण एवं निद्रा का प्रभाव (Effects of jagarana & nidra)

- **रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा।**
  अरूक्षमनभिष्यन्दी त्वासीनप्रचलायितम्।। च.सू. 21.50

रात्रि जागरण	रूक्षता
दिवा स्वप्न	स्निग्धता
आसीन प्रचलायितम्	अरूक्ष एवं अनभिष्यन्दी

आहार एवं निद्रा का महत्त्व (Importance of ahara & nidra)

- **स्वप्नाहारसमुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः।।** च.सू. 21.51

स्थौल्य एवं कार्श्य ये दोनों आहार एवं निद्रा पर निर्भर हैं।

निद्रा के भेद (Types of sleep)

1. तमोभवा निद्रा
2. श्लेष्मसमुद्भवा निद्रा
3. मनः शरीरश्रमसम्भवा निद्रा
4. आगन्तुकी निद्रा
5. व्याध्यनुवर्तिनी निद्रा
6. रात्रिस्वभावप्रभवा निद्रा

• • •

22. लंघनबृंहणीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या–44

चिकित्सा के षड् भेद (Six types of chikitsa)

- लंघनं बृंहणं काले रूक्षणं स्नेहनं तथा।
  स्वेदनं स्तम्भनं चैव जानीते यः स वै भिषक्।। च.सू. 22.4

लंघन	बृंहण	रूक्षण
स्नेहन	स्वेदन	स्तम्भन

लंघन (Langhana)

परिभाषा (Definition)

- यत् किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लंघनं स्मृतम्।। च.सू. 22.9

  जो विषय (द्रव्य / कर्म) शरीर में लाघवता उत्पन्न करे वह लंघन है।

लंघनकारक द्रव्य
(Properties of drugs causing langhana)

- लघूष्णतीक्ष्णविशदं रूक्षं सूक्ष्मं खरं सरम्।।
  कठिनं चैव यद्द्रव्यं प्रायस्तल्लंघनं स्मृतम्। च.सू. 22.12–13

बृंहण (Brmhana)

परिभाषा (Definition)

- बृहत्त्वं यच्छरीरस्य जनयेत्तच्च बृंहणम्। च.सू. 22.10

जो विषय (द्रव्य / कर्म) शरीर में बृहत्व उत्पन्न करे वह बृंहण है।

बृंहणकारक द्रव्य
(Properties of drugs causing brmhana)

- गुरु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं स्थूलपिच्छिलम्।
  प्रायो मन्दं स्थिरं श्लक्ष्णं द्रव्यं बृंहणमुच्यते। च.सू. 22.13-14

रूक्षण (Rukshana)

परिभाषा (Definition)

- रौक्ष्यं खरत्वं वैशद्यं यत् कुर्यात्तद्धि रूक्षणम्।। च.सू. 22.10

जो विषय (द्रव्य / कर्म) शरीर में रूक्षता, खरत्व और विशदता उत्पन्न करे वह रूक्षण है।

रूक्षणकारक द्रव्य
(Properties of drugs causing rukshana)

- रूक्षं लघु खरं तीक्ष्णमुष्णं स्थिरमपिच्छिलम्।।
  प्रायशः कठिनं चैव यद्द्रव्यं तद्धि रूक्षणम्। च.सू. 22.14-15

स्नेहन (Snehana)

परिभाषा (Definition)

- स्नेहनं स्नेहविष्यन्दमार्दवक्लेदकारकम्। च.सू. 22.11

जो विषय (द्रव्य / कर्म) शरीर में स्नेह, विष्यन्दन, मृदुता एवं क्लेद को उत्पन्न करे वह स्नेहन है।

स्नेहनकारक द्रव्य (Properties of drugs causing snehana)

- द्रवं सूक्ष्मं सरं स्निग्धं पिच्छिलं गुरु शीतलम्।
  प्रायो मन्दं मृदु च यद्द्रव्यं तत्स्नेहनं मतम्।। च.सू. 22.15

स्वेदन (Swedana)

परिभाषा (Definition)

- स्तम्भगौरवशीतघ्नं स्वेदनं स्वेदकारकम्।। च.सू. 22.11

जो विषय (द्रव्य / कर्म) शरीर में स्तम्भ, गौरव और शीत को नष्ट कर स्वेद उत्पन्न करे वह स्वेदन है।

स्वेदनकारक द्रव्य
(Properties of drugs causing swedana)

- उष्णं तीक्ष्णं सरं स्निग्धं रूक्षं सूक्ष्मं द्रवं स्थिरम्।
  द्रव्यं गुरु च यत् प्रायस्तद्धि स्वेदनमुच्यते।। च.सू. 22.16

स्तम्भन (Stambhana)

परिभाषा (Definition)

- स्तम्भनं स्तम्भयति यद्गतिमन्तं चलं ध्रुवम्। च.सू. 22.12

जो विषय (द्रव्य / कर्म) गतिशील को अगतिशील करे अर्थात् स्तम्भित करे वह स्तम्भन है।

स्तम्भनकारक द्रव्य
(Properties of drugs causing stambhana)

- शीतं मन्दं मृदु श्लक्ष्णं रूक्षं सूक्ष्मं द्रवं स्थिरम्।
  यद्द्रव्यं लघु चोद्दिष्टं प्रायस्तत् स्तम्भनं स्मृतम्।। च.सू. 22.17

तालिका-षड्विध चिकित्सा के द्रव्यों के गुण

लंघन-कारक द्रव्य	बृंहण-कारक द्रव्य	रूक्षण-कारक द्रव्य	स्नेहन-कारक द्रव्य	स्वेदन-कारक द्रव्य	स्तम्भन-कारक द्रव्य
लघु	गुरु	लघु	गुरु	गुरु	लघु
उष्ण	शीत	उष्ण	शीत	उष्ण	शीत
तीक्ष्ण	मृदु	तीक्ष्ण	मृदु	तीक्ष्ण	मृदु
–	–	–	द्रव	द्रव	द्रव
विशद	पिच्छिल	विशद	पिच्छिल	–	–
–	बहल	–	–	–	–

लंघन-कारक द्रव्य	बृंहण-कारक द्रव्य	रूक्षण-कारक द्रव्य	स्नेहन-कारक द्रव्य	स्वेदन-कारक द्रव्य	स्तम्भन-कारक द्रव्य
रूक्ष	स्निग्ध	रूक्ष	स्निग्ध	रूक्ष,स्निग्ध	रूक्ष
–	मन्द	–	मन्द	–	मन्द
सूक्ष्म	स्थूल	–	सूक्ष्म	सूक्ष्म	सूक्ष्म
खर	श्लक्ष्ण	खर	–	–	श्लक्ष्ण
सर	स्थिर	स्थिर	सर	स्थिर, सर	स्थिर
कठिन	–	कठिन	–	–	–

लंघन के भेद (Classification of langhana)

- चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मारुतातपौ।
  पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लंघनम्।। च.सू. 22.18

लंघन के भेद				
वमन	विरेचन	नस्य	निरूहण	पिपासा
मारुत	आतप	पाचन	उपवास	व्यायाम

लंघन के सम्यक् योग लक्षण
(Features of appropriate langhana)

- वातमूत्रपुरीषाणां विसर्गे गात्रलाघवे।
  हृदयोद्गारकण्ठास्यशुद्धौ तन्द्राक्लमे गते।।

स्वेदे जाते रुचौ चैव क्षुत्पिपासासहोदये।
कृतं लंघनमादेश्यं निर्व्यथे चान्तरात्मनि।। च.सू. 22.34-35

– वातादि का सम्यक् विसर्ग – गात्र में लाघवता – हृदय, उद्गार, कण्ठ एवं मुख शुद्धि – तन्द्रा एवं क्लम का नाश – स्वेदप्रवृत्ति – रुचि – सम्यक् क्षुधा एवं पिपासा – अन्तरात्मा का निर्व्यथ होना

बृंहण के सम्यक् योग लक्षण
(Features of appropriate brmhana)

- **बलं पुष्ट्युपलम्भश्च कार्श्यदोषविवर्जनम्।**
  लक्षणं बृंहिते ।। च.सू. 22.38

  – बलवृद्धि – पुष्टि – कार्श्य दोष का नाश

स्तम्भन के सम्यक् योग लक्षण
(Features of appropriate stambhana)

- **स्तम्भितः स्याद्बले लब्धे यथोक्तैश्चामयैर्जितैः।।** च.सू. 22.39

  – रोग शमन – बल वृद्धि

• • •

23. सन्तर्पणीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या–40

सन्तर्पणजन्य व्याधि के कारण
(Causes for santarpana janya diseases)

- **संतर्पयति यः स्निग्धैर्मधुरैर्गुरुपिच्छिलैः।**
  नवान्नैर्नवमद्यैश्च मांसैश्चानूपवारिजैः।।
  गोरसैर्गौडिकैश्चान्नैः पैष्टिकैश्चातिमात्रशः।
  चेष्टाद्वेषी दिवास्वप्नशय्यासनसुखे रतः।।
  रोगास्तस्योपजायन्ते संतर्पणनिमित्तजाः। च.सू. 23.3-5

  - स्निग्ध, मधुर, गुरु एवं पिच्छिल आहार सेवन
  - नवान्न, नव मद्य, आनूप एवं वारिज मांस सेवन
  - गोरस, गौडिक, पैष्टिक अन्न का अतिमात्रा में सेवन
  - चेष्टाद्वेष, दिवास्वप्न, सुखपूर्वक शय्या एवं आसन

सन्तर्पणजन्य व्याधियां (Diseases caused by santarpana)

- प्रमेहपिडकाकोठकण्डूपाण्ड्वामयज्वराः।।
  कुष्ठान्यामप्रदोषाश्च मूत्रकृच्छ्रमरोचकः।
  तन्द्रा क्लैब्यमतिस्थौल्यमालस्य गुरुगात्रता।।
  इन्द्रियस्रोतसां लेपो बुद्धेर्मोहः प्रमीलकः।
  शोफाश्चैवंविधाश्चान्ये शीघ्रमप्रतिकुर्वतः।। च.सू. 23.5-7

प्रमेह	प्रमेह पिडका	कोठ	कण्डू	पाण्डुरोग
ज्वर	कुष्ठ	आमप्रदोष	मूत्रकृच्छ्र	अरोचक
तन्द्रा	क्लैब्य	अतिस्थौल्य	आलस्य	गुरु गात्रता
इन्द्रिय लेप	स्रोतस् लेप	बुद्धि मोह	प्रमीलक	शोफ

सन्तर्पणजन्य व्याधियों की चिकित्सा
(Treatment of diseases caused by santarpana)

- शस्तमुल्लेखनं तत्र विरेको रक्तमोक्षणम्।
  व्यायामश्चोपवासश्च धूमाश्च स्वेदनानि च।।
  सक्षौद्रश्चाभयाप्राशः प्रायो रूक्षान्नसेवनम्।
  चूर्णप्रदेहा ये चोक्ताः कण्डूकोठविनाशनाः।। च.सू. 23.8-9

– उल्लेखन (वमन) – विरेचन – रक्तमोक्षण – व्यायाम – उपवास – धूमपान – स्वेदन – अभयाप्राश + मधु – रूक्ष अन्नपान – चूर्ण-प्रदेह

व्योषादि सक्तु (Vyoshadi saktu)

घटक द्रव्य (Ingredients)

- व्योषं विडंगं शिग्रूणि त्रिफलां कटुरोहिणीम्।
  बृहत्यौ द्वे हरिद्रे द्वे पाठामतिविषां स्थिराम् ।।
  हिंगु केबुकमूलानि यवानीधान्यचित्रकान्।
  सौवर्चलमजाजीं च हपुषां चेति चूर्णयेत्।।
  चूर्णतैलघृतक्षौद्रभागाः स्युर्मानतः समाः।
  सक्तूनां षोडशगुणो भागः संतर्पणं पिबेत्।। च.सू. 23.19-21

व्योष	विडंग	शिग्रु	त्रिफला	कटुरोहिणी	बृहती द्वय
हरिद्रा द्वय	पाठा	अतिविषा	स्थिरा	हिंगु	केबुक मूल
यवानी	धान्यक	चित्रक	सौवर्चल	अजाजी	हपुषा
तैल	घृत	क्षौद्र	सक्तू- 16 भाग		

फलश्रुति (Benefits)

- प्रयोगादस्य शाम्यन्ति रोगाः संतर्पणोत्थिताः।
  प्रमेहा मूढवाताश्च कुष्ठान्यर्शांसि कामलाः।।
  प्लीहा पाण्ड्वामयः शोफो मूत्रकृच्छ्रमरोचकः।
  हृद्रोगो राजयक्ष्मा च कासः श्वासो गलग्रहः।।

क्रिमयो ग्रहणीदोषाः श्वैत्र्यं स्थौल्यमतीव च।
नराणां दीप्यते चाग्निः स्मृतिर्बुद्धिश्च वर्धते।। च.सू. 23.22-24

अपतर्पणजन्य व्याधियां (Diseases caused by apatarpana)

- देहाग्निबलवर्णौजःशुक्रमांसपरिक्षयः।
  ज्वरः कासानुबन्धश्च पार्श्वशूलमरोचकः।।
  श्रोत्रदौर्बल्यमुन्मादः प्रलापो हृदयव्यथा।
  विण्मूत्रसंग्रहः शूलं जंघोरुत्रिकसंश्रयम्।।
  पर्वास्थिसन्धिभेदश्च ये चान्ये वातजा गदाः।
  ऊर्ध्ववातादयः सर्वे जायन्ते तेऽपतर्पणात्।। च.सू. 23.27-29

– देह, अग्नि, बल, वर्ण, ओज, शुक्र एवं मांस का परिक्षय - कासानुबन्धि ज्वर – पार्श्वशूल – अरोचक – श्रोत्र दौर्बल्य – उन्माद - प्रलाप – हृदयव्यथा – विट् एवं मूत्र संग्रह – जंघा, उरु एवं त्रिक प्रदेश में शूल – पर्व, अस्थि एवं सन्धि भेद – वातज रोग – ऊर्ध्ववात आदि।

• • •

24. विधिशोणितीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-60

विशुद्ध रक्त का महत्त्व

(Importance of vishuddha rakta - pure blood)

- तद्विशुद्धं हि रुधिरं बलवर्णसुखायुषा।
  युनक्ति प्राणिनं प्राणः शोणितं ह्यनुवर्तते।। च.सू. 24.4
  - – बल – वर्ण – सुख – आयु से युक्त करता है।
  - प्राण शुद्ध रक्त का अनुसरण करता है।

रक्तदुष्टि का कारण (Causes for vitiation of rakta)

- प्रदुष्टबहुतीक्ष्णोष्णैर्मद्यैरन्यैश्च तद्विधैः।
  तथाऽतिलवणक्षारैरम्लैः कटुभिरेव च।।
  कुलत्थमाषनिष्पावतिलतैलनिषेवणैः।
  पिण्डालुमूलकादीनां हरितानां च सर्वशः।।

जलजानूपबैलानां प्रसहानां च सेवनात्।
दध्यम्लमस्तुसुक्तानां सुरासौवीरकस्य च।।
विरुद्धानामुपक्लिन्नपूतीनां भक्षणेन च।
भुक्त्वा दिवा प्रस्वपतां द्रवस्निग्धगुरूणि च।।
अत्यादानं तथा क्रोधं भजतां चातपानलौ।
छर्दिवेगप्रतीघातात् काले चानवसेचनात्।।
श्रमाभिघातसंतापैरजीर्णाध्यशनैस्तथा।
शरत्कालस्वभावाच्च शोणितं संप्रदुष्यति।। च.सू. 24.5-10

रक्तज रोगों की चिकित्सा (Treatment of raktaja diseases)

- कुर्याच्छोणितरोगेषु रक्तपित्तहरीं क्रियाम्।
  विरेकमुपवासं च स्रावणं शोणितस्य च।। च.सू. 24.18
  - रक्तपित्तहर चिकित्सा
  - विरेचन
  - उपवास
  - शोणित स्रावण

दोषों से दुष्ट रक्त के लक्षण
(Features of rakta vitiated by doshas)

वातदुष्ट रक्त	• अरुणाभं भवेद्वाताद्विशदं फेनिलं तनु। च.सू. 24.20

पित्तदुष्ट रक्त	• पित्तात् पीतासितं रक्तं स्त्यायत्यौष्ण्याच्चिरेण च।। च.सू. 24.20
कफदुष्ट रक्त	• ईषत्पाण्डु कफाद्दुष्टं पिच्छिलं तन्तुमद्घनम्। च.सू. 24.21

शुद्ध रक्त का स्वरूप (Features of shuddha rakta)

- तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्तकसन्निभम्।
  गुञ्जाफलसवर्णं च विशुद्धं विद्धि शोणितम्।। च.सू. 24.22
  - तपनीय के समान वर्ण
  - इन्द्रगोप के समान वर्ण
  - पद्म के समान वर्ण
  - आलक्तक के समान वर्ण
  - गुञ्जाफल के समान वर्ण

शुद्ध रक्त पुरुष के लक्षण
(Features of shuddha rakta purusha)

- प्रसन्नवर्णेन्द्रियमिन्द्रियार्थानिच्छन्तमव्याहतपक्तृवेगम्।
  सुखान्वितं तु(पु)ष्टिबलोपपन्नं विशुद्धरक्तं पुरुषं वदन्ति।।
  च.सू. 24.24

– प्रसन्न वर्ण – प्रसन्न इन्द्रिय – इन्द्रियां अर्थ ग्रहण की इच्छुक – सम्यक् पाचन शक्ति – सुखान्वित – तुष्टि, पुष्टि एवं बल से युक्त

मद-मूर्च्छा-संन्यास की सम्प्राप्ति

(Pathogenesis of mada - murccha - sannyasa)

- यदा तु रक्तवाहीनि रससंज्ञावहानि च।
  पृथक् पृथक् समस्ता वा स्रोतांसि कुपिता मलाः।।
  मलिनाहारशीलस्य रजोमोहावृतात्मनः।
  प्रतिहत्यावतिष्ठन्ते जायन्ते व्याधयस्तदा।।
  मदमूर्च्छायसंन्यासास्तेषां विद्याद्विचक्षणः।
  यथोत्तरं बलाधिक्यं हेतुलिंगोपशान्तिषु।। च.सू. 24.25-27

जब मलिन आहार करने वलो तथा रजोगुण एवं मोह से युक्त आत्मा वाले पुरुष के वातादि दोष स्वतन्त्र रूप से या द्वन्द्वज रूप से अथवा सान्निपातिक रूप से कुपित होकर रसवाही, रक्तवाही अथवा संज्ञावाही स्रोतों की गति को रोककर आ घेरते हैं तब मद, मूर्च्छा एवं संन्यास ये व्याधियां उत्पन्न होती हैं।

मद रोग के भेद (4)	वातज	पित्तज	कफज	सन्निपातज
मूर्च्छा रोग के भेद (4)	वातज	पित्तज	कफज	सन्निपातज

संन्यास रोग का वैशिष्ट्य (Importance of sannyasa)

- दोषेषु मदमूर्च्छायाः कृतवेगेषु देहिनाम्।
  स्वयमेवोपशाम्यन्ति संन्यासो नौषधैर्विना।। च.सू. 24.42

शरीरधारियों में मद तथा मूर्च्छा के दोषों के वेग जब पूर्ण हो जाते हैं तो उक्त रोगों के लक्षण स्वयं शान्त हो जाते हैं, किन्तु संन्यास रोग में सम्यक् औषधोपचार के बिना स्वास्थ्य लाभ नहीं होता है।

संन्यास रोग की सम्प्राप्ति (Pathogenesis of sannyasa)

- वाग्देहमनसां चेष्टामाक्षिप्यातिबला मलाः।
  संन्यस्यन्त्यबलं जन्तुं प्राणायतनसंश्रिताः।।
  स ना संन्याससंन्यस्तः काष्ठीभूतो मृतोपमः।
  प्राणैर्वियुज्यते शीघ्रं मुक्त्वा सद्यःफलाः क्रियाः।।
  च.सू. 24.43-44

प्राणायतनों में आश्रय लेकर स्थित अत्यन्त बलवान् दोष वाणी, देह और मनस् की सभी चेष्टाओं को नष्ट कर उस निर्बल पुरुष को संन्यास रोग से पीड़ित कर देते हैं। वह पुरुष संन्यास रोग के कारण संज्ञाहीन होकर शुष्क काष्ठ के समान मरा हुआ जैसा भूमि पर पड़ जाता है। यदि इसके लिए सद्यःफलाक्रिया न की जाये तो शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है।

संन्यास रोग चिकित्सा में सावधानी

(Caution while treating sannyasa)

- दुर्गेऽम्भसि यथा मज्जद्भाजनं त्वरया बुधः।
  गृह्णीयात्तलमप्राप्तं तथा संन्यासपीडितम्।। च.सू. 24.45

मद एवं मूर्च्छा में पञ्चकर्म चिकित्सा

(Panchakarma therapy in mada and murccha)

- **स्नेहस्वेदोपपन्नानां यथादोषं यथाबलम्।**
  पञ्च कर्माणि कुर्वीत मूर्च्छायेषु मदेषु च।। च.सू. 24.54
  - स्नेहन एवं स्वेदन
  - यथादोष एवं यथाबल पञ्चकर्म

• • •

25. यज्जःपुरुषीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या–51

पुरुषोत्पत्ति एवं उसके रोगोत्पत्ति सम्बन्धी सम्भाषा परिषद्

(Conference for purusha-utpatti and roga-utpatti)

कुल आचार्यों की उपस्थिति–10

आचार्य	प्रतिपादित सिद्धान्त
काशिपति वामक	प्रश्नकर्ता
मौद्गल्य पारीक्षि	आत्मवाद
शरलोमा	सत्त्ववाद
वार्योविद्	रसवाद
हिरण्याक्ष	षड्धातुवाद
कौशिक	मातृपितृवाद
भद्रकाप्य	कर्मवाद

आचार्य	प्रतिपादित सिद्धान्त
भरद्वाज	स्वभाववाद
कांकायन	प्रजापतिवाद
भिक्षु आत्रेय	कालवाद

आहार के भेद (Classification of ahara)

- आहारत्वमाहारस्यैकविधमर्थाभेदात्; स पुनर्द्वियोनिः, स्थावरजंगमात्मकत्वात्; द्विविधप्रभावः, हिताहितोदर्कविशेषात्; चतुर्विधोपयोगः, पानाशनभक्ष्यलेह्योपयोगात्; षडास्वादः, रसभेदतः षड्विधत्वात्; विंशतिगुणः, गुरुलघुशीतोष्णस्निग्ध रूक्षमन्दतीक्ष्णस्थिरसरमृदुकठिनविशदपिच्छिलश्लक्ष्णखरसूक्ष्म-स्थूलसान्द्रद्रवानुगमात्; अपरिसंख्येयविकल्पः, द्रव्यसंयोग-करणबाहुल्यात्।। च.सू. 25.36

1. एक प्रकार– सम्पूर्ण आहार आहारता की दृष्टि से एक प्रकार का होता है।
2. दो प्रकार– (अ) योनि (habitat) भेद से–
   1. स्थावर (plants) एवं 2. जांगम (animals)
   (ब) प्रभाव (effect) भेद से–
   1. हितकर (wholesome) एवं
   2. अहितकर (unwholesome)

3. चार प्रकार– उपयोग (usage) भेद से–
   1. पान (drink) 2. अशन (eatables)
   3. भक्ष्य (chewables) 4. लेह्य (lickables)
4. छः प्रकार– षड् रस (tastes) भेद से–
   1. मधुर (sweet) 2. अम्ल (sour)
   3. लवण (salty) 4. तिक्त (bitter)
   5. कटु (pungent) 6. कषाय (astringent)
5. बीस प्रकार– 20 गुणों के अनुसार–
   1. गुरु (heavy) 2. लघु (light)
   3. शीत (cold) 4. उष्ण (hot)
   5. स्निग्ध (unctuous) 6. रूक्ष (dry)
   7. मन्द (dull) 8. तीक्ष्ण (sharp)
   9. स्थिर (stable) 10. सर (mobile)
   11. मृदु (soft) 12. कठिन (hard)
   13. विशद (non-slimy) 14. पिच्छिल (slimy)
   15. श्लक्ष्ण (smooth) 16. खर (rough)
   17. सूक्ष्म (subtle) 18. स्थूल (gross)
   19. सान्द्र (solid) 20. द्रव (liquid)

10. अपरिसंख्येय प्रकार- संयोग (combination) और संस्कार (preparation) भेद से आहार असंख्य होते हैं।

प्रकृति से हिततम एवं अहिततम आहार द्रव्य (Best and worst food articles among various groups)

आहार द्रव्य	हिततम द्रव्य	अहिततम द्रव्य
शूकधान्य	लोहित शालि	यवक
शमीधान्य	मुद्ग	माष
जल	आन्तरीक्ष	वर्षा में नदी का जल
लवण	सैन्धव	औषर
पत्र शाक	जीवन्ती	सर्षप
मृग मांस	ऐणेय	गोमांस
पक्षी	लाव	काणकपोत
विलेशय	गोधा	मण्डूक
मत्स्य	रोहित	चिलचिम
घृत	गोघृत	मेषी घृत
दुग्ध	गोदुग्ध	मेषी दुग्ध
स्थावर स्नेह	तिल तैल	कुसुम्भ तैल
आनूप मृगवसा	वराह वसा	महिष वसा

आहार द्रव्य	हिततम द्रव्य	अहिततम द्रव्य
मत्स्य वसा	चुलुकी वसा	कुम्भीर वसा
जलचर पक्षि वसा	पाकहंस वसा	काकमद्गु वसा
विष्किर पक्षि वसा	कुक्कुट वसा	चटक वसा
शाखाद मेदस्	अज मेदस्	हस्ति मेदस्
कन्द	आर्द्रक	आलुक
फल	मृद्वीका	लकुच
इक्षुविकार	शर्करा	फाणित

अग्र्य द्रव्य (Agrya dravyas) - 152

(देखें तालिका अग्रिम पृ०)

पथ्य की परिभाषा (Definition of pathya)

- **पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम्।** च.सू. 25.45

जो आहारादि द्रव्य तथा शारीरिक चेष्टायें पथ में अनपेत कारक न हों और जो मन को प्रिय लगें उनका नाम 'पथ्य' है।

अपथ्य की परिभाषा (Definition of apathya)

- **यच्चाप्रियमपथ्यं च नियतं तन्न लक्षयेत्।।** च.सू. 25.45

जो पथ्य के विपरीत और मन के लिए अप्रिय हो वह 'अपथ्य' है।

अन्नं वृत्तिकराणां श्रेष्ठम्	उदकमाश्वासकराणाम्	सुरा श्रमहराणाम्	क्षीरं जीवनीयानाम्
मांसं बृंहणीयानाम्	रसस्तर्पणीयानाम्	लवणमन्नद्रव्य-रुचिकराणाम्	अम्लं हृद्यानाम्
कुक्कुटो बल्यानाम्	नक्ररेतो वृष्याणाम्	मधु श्लेष्मपित्त-प्रशमनानाम्	सर्पिर्वातपित्तप्रशमनानाम्
तैलं वातश्लेष्मप्रशम-नानाम्	वमनं श्लेष्महराणाम्	विरेचनं पित्त-हराणाम्	बस्तिर्वातहराणाम्
स्वेदो मार्दवकराणाम्	व्यायामः स्थैर्य-कराणाम्	क्षारः पुंस्त्वो-पघातिनाम्	तिन्दुकमनन्नद्रव्य-रुचिकराणाम्
आमं कपित्थमकण्ठ-चानाम्	आविकं सर्पिरहृद्यानाम्	अजाक्षीरं शोष-घ्नस्तन्यसात्म्य रक्तसांग्राहिकरक्त-पित्तप्रशमनानाम्	अविक्षीरं श्लेष्मपित्तजननानाम्
महिषीक्षीरं स्वप्नजननानाम्	मन्दकं दध्यभिष्यन्दकराणाम्	गवेधुकान्नं कर्शनीयानाम्	उद्दालकान्नं विरूक्षणीयानाम्
इक्षुर्मूत्रजननानाम्	यवाः पुरीषजननानाम्	जाम्बवं वात-जननानाम्	शष्कुल्यः श्लेष्मपित्तजननानाम्

कुलत्था अम्लपित्त-जननानाम्	माषाः श्लेष्मपित्त-जननानाम्	मदनफलं वमना स्थापनानुवासनो-पयोगिनाम्	त्रिवृत् सुखविरेचनानाम्
चतुरंगुलो मृदुविरेचनानाम्	स्नुक्पयस्तीक्ष्ण-विरेचननाम्	प्रत्यक्पुष्पा शिरोविरेचनानाम्	विडंगं क्रिमिघ्नानाम्
शिरीषो विषघ्नानाम्	खदिरः कुष्ठघ्नानाम्	रास्ना वात-हराणाम्	आमलकं वयःस्थापनानाम्
हरीतकी पथ्यानाम्	एरण्डमूलं वृष्य-वातहराणाम्	पिप्पलीमूलं दीपनीय पाचनी-यानाहप्रशमनानाम्	चित्रकमूलं दीपनीयपाचनीय-गुदशोथार्शःशूलहराणाम्
पुष्करमूलं हिक्काश्वास-कास पार्श्वशूलहराणाम्	मुस्तं सांग्राहिकदीप-नीयपाचनीयानाम्	उदीच्यं निर्वापण-दीपनीयपाचनी-यच्छर्द्यतीसार-हराणाम्	कट्वंगं सांग्राहिक-पाचनीय दीपनीयानाम्
अनन्ता सांग्राहिक रक्तपित्तप्रशमनानाम्	अमृता सांग्राहिकवात-हरदीपनीयश्लेष्म-शोणितविबन्धप्रशम-नानाम्	बिल्वं सांग्राहिक दीपनीयवातक-फप्रशमनानाम्	अतिविषा दीपनीय-पाचनीयसांग्राहिक-सर्वदोषहराणाम्

उत्पलकुमुदपद्म-किञ्जल्कः सांग्राहिकर-क्तपित्तप्रशमनानाम्	दुरालभा पित्तश्लेष्म-प्रशमनानाम्	गन्धप्रियंगु शोणितपित्ताति-योग प्रशमनानाम्	कुटजत्वक् श्लेष्म-पित्तरक्तसांग्राहिकोप-शोषणानाम्
काश्मर्यफलं रक्त-सांग्राहिकरक्तपित्त-प्रशमनानाम्	पृश्निपर्णी सांग्राहिक-वातहरदीपनीय-वृष्याणाम्	विदारिगन्धा वृष्य-सर्वदोषहराणाम्	बला सांग्राहिकबल्य-वातहराणाम्
गोक्षुरको मूत्र-कृच्छ्रानिलहराणाम्	हिंगुनिर्यासश्छेदनीय-दीपनीयानुलोमिक-वातकफप्रशमनानाम्	अम्लवेतसो भेदनीयदीपनी-यानुलोमिकवात-श्लेष्महराणाम्	यावशूकः स्रंसनीय-पाचनीयार्शोघ्नानाम्
तक्राभ्यासो ग्रहणी-दोषशोफार्शोघृतव्या-पत्प्रशमनानाम्	क्रव्यान्मांसरसाभ्यासो ग्रहणीदोष-शोषार्शोघ्नानाम्	क्षीरघृताभ्यासो रसायनानाम्	समघृतसक्तुप्राशाभ्यासो वृष्योदावर्तहराणाम्
तैलगण्डूषाभ्यासो दन्तबलरुचिकराणाम्	चन्दनं दुर्गन्धहरदाह-निर्वापणलेपनानाम्	रास्नागुरुणी शीता-पनयनप्रलेपनानाम्	लामज्जकोशीरं दाहत्व-ग्दोषस्वेदापनयन-प्रलेपनानाम्

कुष्ठं वातहराभ्यंगोप-नाहोपयोगिनाम्	मधुकं चक्षुष्यवृष्यकेश्य कण्ठ्यवर्ण्यविरजनीय-रोपणीयानाम्	वायुः प्राणसंज्ञा-प्रदानहेतूनाम्	अग्निरात्मस्तम्भ-शीतशूलोद्वेपनप्रशम-नानाम्
जलं स्तम्भनीयानाम्	मृद्भृष्टलोष्ट्रनिर्वापित-मुदकं तृष्णाच्छर्द्यतियोग-प्रशमनानाम्	अतिमात्रशनमाम-प्रदोषहेतूनाम्	यथाग्न्यभ्यवहारोऽग्नि-सन्धुक्षणानाम्
यथासात्म्यं चेष्टाभ्य-वहारौ सेव्यानाम्	कालभोजनमारोग्य-कराणाम्	तृप्तिराहारगुणानाम्	वेगसन्धारणम-नारोग्यकराणाम्
मद्यं सौमनस्यजन-नानाम्	मद्याक्षेपो धीधृतिस्मृति-हराणाम्	गुरुभोजनं दुर्विपाक-कराणाम्	एकाशनभोजनं सुखपरिणामकराणाम्
स्त्रीष्वतिप्रसंगः शोषकराणाम्	शुक्रवेगनिग्रहः षाण्ड्यकराणाम्	पराघातनमन्नाश्रद्धा-जननानाम्	अनशनमायुषो-ह्रासकराणाम्
प्रमिताशनं कर्शनीयानाम्	अजीर्णाध्यशनं ग्रहणीदूषणानाम्	विषमाशनमग्नि-वैषम्यकराणाम्	विरुद्धवीर्याशनं-निन्दितव्याधिकराणाम्
प्रशमः पथ्यानाम्	आयासः सर्वापथ्यानाम्	मिथ्यायोगो व्याधिकराणाम्	रजस्वलाभिगमन-मलक्ष्मीमुखानाम्
ब्रह्मचर्यमायुष्याणाम्	परदाराभिगमनम नायुष्याणाम्	संकल्पो वृष्याणाम्	दौर्मनस्यमवृष्याणाम्

अयथाबलमारम्भः प्राणोपरोधिनाम्	विषादो रोगवर्धनानाम्	स्नानं श्रमहराणाम्	हर्षः प्रीणनानाम्
शोकः शोषणानाम्	निवृत्तिः पुष्टिकराणाम्	पुष्टिः स्वप्नकराणाम्	अतिस्वप्नस्तन्द्रकराणाम्
सर्वरसाभ्यासो बलकराणाम्	एकरसाभ्यासो दौर्बल्यकराणाम्	गर्भशल्यमाहार्याणाम्	अजीर्णमुद्धार्याणाम्
बालो मृदुभेषजीयानाम्	वृद्धो याप्यानाम्	गर्भिणी तीक्ष्णौषधव्यायाम्यायामवर्जनीयानाम्	सौमनस्यं गर्भधारणानाम्
सन्निपातो दुश्चिकित्स्यानाम्	आमो विषमचिकित्स्यानाम्	ज्वरो रोगाणाम्	कुष्ठं दीर्घरोगाणाम्
राजयक्ष्मा रोगसमूहानाम्	प्रमेहोऽनुषंगिणाम्	जलौकसोऽनुशस्त्राणाम्	बस्तिस्तन्त्राणाम्
हिमवानौषधिभूमीनाम्	सोम ओषधीनाम्	मरुभूमिरारोग्यदेशानाम्	अनूपोऽहितदेशानाम्
निर्देशकारित्वमातुरगुणानाम्	भिषक् चिकित्सांगानाम्	नास्तिको वर्ज्यानाम्	लौल्यं क्लेशकराणाम्

अनिर्देशकारित्वमरिष्टानाम्	अनिर्वेदो वातलक्षणानाम्	वैद्यसमूहो निःसंशयकराणाम्	योगो वैद्यगुणानाम्
विज्ञानमौषधीनाम्	शास्त्रसहितस्तर्कः साधनानाम्	संप्रतिपत्तिः कालज्ञानप्रयोजनानाम्	अव्यवसायः कालातिपत्तिहेतूनाम्
दृष्टकर्मता निःसंशयकराणाम्	असमर्थता भयकराणाम्	तद्विद्यसंभाषा बुद्धिवर्धनानाम्	आचार्यः शास्त्राधिगमहेतूनाम्
आयुर्वेदोऽमृतानाम्	सद्वचनमनुष्ठेयानाम्	असद्ग्रहणं सर्वाहितानाम्	सर्वसन्न्यासः सुखानाम्

आसव (Asava)

आसव योनि (Source of asavas) – 84

- धान्यफलमूलसारपुष्पकाण्डपत्रत्वचो भवन्त्यासवयोनयोऽग्निवेश! संग्रहेणाष्टौ शर्करानवमीकाः। च.सू. 25.49

धान्यासव	6	फलासव	26	मूलासव	11
सारासव	20	पुष्पासव	10	काण्डासव	4
पत्रासव	2	त्वगासव	4	शर्करासव	1

आसव की व्याख्या (Definition of asavas)

- एषामासवनामासुतत्वादासवसंज्ञा। च.सू. 25.49

इनमें आसुत अर्थात् सन्धान क्रिया होने के कारण इनकी संज्ञा 'आसव' है।

आसवों के गुण (Qualities of asavas)

- मनःशरीराग्निबलप्रदानामस्वप्नशोकारुचिनाशनानाम्।
  संहर्षणानां प्रवरासवानामशीतिरुक्ता चतुरुत्तरैषा।। च.सू. 25.50
  - मन, शरीर एवं अग्नि बलप्रद
  - अस्वप्न, शोक एवं अरुचि नाशक
  - संहर्ष उत्पन्न करनेवाला

• • •

26. आत्रेयभद्रकाप्यीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या–113

आहार एवं रस सम्बन्धि सम्भाषा परिषद्
(Conference for deciding the number of rasas)

कुल आचार्यों की संख्या–10

आचार्य	रस सन्बन्धि मत
भद्रकाप्य	1
शाकुन्तेय	2
मौद्गल्य पूर्णाक्ष	3
कौशिक हिरण्याक्ष	4
कुमारशिरा भरद्वाज	5
वार्योविद्	6
निमि	7

आचार्य	रस सन्बन्धि मत
बडिश धामार्गव	8
कांकायन	असंख्य
पुनर्वसु आत्रेय	6

द्रव्य की पाञ्चभौतिकता
(Panchabhautika composition of dravya)

- सर्वं द्रव्यं पाञ्चभौतिकमस्मिन्नर्थे। च.सू. 26.10

पार्थिव द्रव्य (Parthiva dravya)

- तत्र द्रव्याणि गुरुखरकठिनमन्दस्थिरविशदसान्द्रस्थूलगन्ध गुण-बहुलानि पार्थिवानि, तान्युपचयसंघातगौरवस्थैर्यकराणि। च.सू. 26.11

आप्य द्रव्य (Apya dravya)

- द्रवस्निग्धशीतमन्दमृदुपिच्छिलरसगुणबहुलान्याप्यानि, तान्यु-पक्लेदस्नेहबन्धविष्यन्दमार्दवप्रह्लादकराणि। च.सू. 26.11

आग्नेय द्रव्य (Agneya dravya)

- उष्णतीक्ष्णसूक्ष्मलघुरूक्षविशदरूपगुणबहुलान्याग्नेयानि, तानि दाहपाकप्रभाप्रकाशवर्णकराणि। च.सू. 26.11

वायव्य द्रव्य (Vayavya dravya)

- लघुशीतरूक्षखरविशदसूक्ष्मस्पर्शगुणबहुलानि वायव्यानि, तानि रौक्ष्यग्लानिविचारवैशद्यलाघवकराणि। च.सू. 26.11

नाभस द्रव्य (Nabhasa dravya)

- मृदुलघुसूक्ष्मश्लक्ष्णशब्दगुणबहुलान्यकाशात्मकानि, तानि मार्दवसौषिर्यलाघवकराणि। च.सू. 26.11

पाञ्चभौतिक द्रव्य	इन्द्रियार्थ	गुण	कर्म
पार्थिव	गन्ध	-गुरु-खर-कठिन-मन्द-स्थिर-विशद-सान्द्र- स्थूल	- उपचय-संघात -गौरव-स्थैर्य
आप्य	रस	- द्रव-स्निग्ध-शीत -मन्द-मृदु-पिच्छिल	- क्लेदन-स्नेहन -बन्धन-विष्यन्दन -मार्दव-प्रह्लादन
तैजस	रूप	- उष्ण-तीक्ष्ण-सूक्ष्म -लघु-रूक्ष-विशद	- दहन-पचन -प्रभा-वर्ण-प्रकाशन
वायव्य	स्पर्श	- लघु-शीत-रूक्ष -खर-विशद-सूक्ष्म	- रुक्षण-ग्लानि -विचार-वैशद्य -लाघव
आकाशीय	शब्द	- मृदु-लघु-श्लक्ष्ण -सूक्ष्म	- मार्दव-सौषिर्य -लाघव

द्रव्यों का औषधत्व (Medicinal use of dravyas)

- अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतं जगति किंचिद्द्रव्यमुपलभ्यते तां तां युक्तिमर्थं च तं तमभिप्रेत्य।। च.सू. 26.12

कर्म की व्याख्या (Definition of karma)

- यत् कुर्वन्ति, तत् कर्म। च.सू. 26.13

अर्थ के अनुसार जो कार्य करते हैं, उसे कर्म कहते हैं।

वीर्य की व्याख्या (Definition of virya)

- येन कुर्वन्ति, तद्वीर्यम्। च.सू. 26.13

जिससे कार्य करते हैं वह वीर्य है।

अधिकरण की व्याख्या (Definition of adhikarana - location)

- यत्र कुर्वन्ति, तदधिकरणम्। च.सू. 26.13

द्रव्य जहां अपना प्रभाव दिखलाते हैं वह अधिकरण है।

काल की व्याख्या (Definition of kala)

- यदा कुर्वन्ति, स कालः। च.सू. 26.13

जब कार्य करते हैं वह काल है।

उपाय की व्याख्या (Definition of upaya - mode of action)

- यथा कुर्वन्ति, स उपायः। च.सू. 26.13

जिस प्रकार द्रव्य कार्य करते हैं वह उपाय है।

फल की व्याख्या (Definition of phala - achievement)

- यत् साधयन्ति, तत् फलम्। च.सू. 26.13

जिस कार्य को सिद्ध करते हैं वह फल है।

द्रव्य के विकल्प (Vikalpa of dravyas) – 63

- भेदश्चौषां त्रिषष्टिविधविकल्पो द्रव्यदेशकालप्रभावाद्भवति।। च.सू. 26.14

रस एवं अनुरस (Rasa & anurasa)

- व्यक्तः शुष्कस्य चादौ च रसो द्रव्यस्य लक्ष्यते।
  विपर्ययेणानुरसो रसो नास्ति हि सप्तमः।। च.सू. 26.28

शुष्क द्रव्य का जो रस सर्वप्रथम व्यक्त होता है वह रस है। विपरीत रूप से अर्थात् अन्त में जिस रस का अनुभव होता है वह अनुरस है।

परादि गुण (Para etc. gunas)

- परापरत्वे युक्तिश्च संख्या संयोग एव च।
  विभागश्च पृथक्त्वं च परिमाणमथापि च।।
  संस्कारोऽभ्यास इत्येते गुणा ज्ञेयाः परादयः।
  सिद्ध्युपायाश्चिकित्साया लक्षणैस्तान् प्रचक्ष्महे।।

च.सू. 26.29–30

संख्या: 10

1. परत्व 2. अपरत्व 3. युक्ति 4. संख्या 5. संयोग
6. विभाग 7. पृथक्त्व 8.परिणाम 9. संस्कार 10. अभ्यास

परत्व एवं अपरत्व (Paratva & aparatva)

- **देशकालवयोमानपाकवीर्यरसादिषु।**
  परापरत्वे ।। च.सू. 26.31

परत्व प्रधान को कहते हैं। एक ही प्रकार के अनेक द्रव्यों में जो श्रेष्ठतम है वह पर कहलाता है।

अपर का अर्थ अप्रधान है। एक समान जाति के द्रव्यों में जो निकृष्टतम द्रव्य होता है, वह अपर कहलाता है।

युक्ति (Yukti)

- **युक्तिश्च योजना या तु युज्यते।।** च.सू. 26.31

योजना को युक्ति कहते हैं।

संख्या एवं संयोग (Samkhya & sanyoga)

- **संख्या स्याद्गणितं, योगः सह संयोग उच्यते।**
  द्रव्याणां द्वन्द्वसर्वैककर्मजोऽनित्य एव च।। च.सू. 26.32

एक, दो, तीन आदि करके जो गणना की जाती है, वह संख्या है। दो या अधिक द्रव्यों का योग अर्थात् साथ में मिलना संयोग कहा जाता है।

विभाग एवं पृथक्त्व (Vibhaga & prthaktva)

- **विभागस्तु विभक्तिः स्याद्वियोगो भागशो ग्रहः।**
  पृथक्त्वं स्यादसंयोगो वैलक्षण्यमनेकता।। च.सू. 26.33

द्रव्यों के विभाजन अथवा संयोग के नाश के कारण को विभाग कहते हैं।

एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से अलग करनेवाले गुण को पृथक्त्व कहते हैं।

परिणाम, संस्कार एवं अभ्यास
(Parinama, samskara & abhyasa)

- **परिमाणं पुनर्मानं, संस्कारः करणं मतम्।**
  भावाभ्यसनमभ्यासः शीलनं सततक्रिया।। च.सू. 26.34

किसी वस्तु को माप कर या तौल कर जो उसका मान लिया जाता है, वह परिमाण है। जिसके कारण द्रव्य के स्वाभाविक गुण में परिवर्तन लाया जाये, वह 'संस्कार' है।

किसी द्रव्य विशेष का निरन्तर सेवन 'अभ्यास' है।

षड्रसों का पाञ्चभौतिकत्व
(Panchabhautika composition of six rasas)

- **तेषां षण्णां रसानां सोमगुणातिरेकान्मधुरो रसः, पृथिव्यग्निभूयिष्ठत्वादम्लः, सलिलाग्निभूयिष्ठत्वाल्लवणः, वाय्वग्नि-**

भूयिष्ठत्वात् कटुकः, वाय्वाकाशातिरिक्तत्वात्तिक्तः, पवन-पृथिवीव्यतिरेकात् कषाय इति। च.सू. 26.40

रस	पाञ्चभौतिक संगठन
मधुर	जल + पृथिवी
अम्ल	पृथिवी + अग्नि
लवण	जल + अग्नि
कटु	वायु + अग्नि
तिक्त	वायु + आकाश
कषाय	वायु + पृथिवी

षड् रसों के गुण एवं कर्म

(Qualities and actions of six rasas)

मधुर रस (Madhura rasa)

- तत्र, मधुरो रसः शरीरसात्म्याद्रसरुधिरमांसमेदोस्थिमज्जौजः शुक्राभिवर्धन आयुष्यः षडिन्द्रियप्रसादनो बलवर्णकरः पित्त-विषमारुतघ्नस्तृष्णादाहप्रशमनस्त्वच्यः केश्यः कण्ठ्यो बल्यः प्रीणनो जीवनस्तर्पणो बृंहणः स्थैर्यकरः क्षीणक्षतसन्धानकरो घ्राणमुखकण्ठौष्ठजिह्वाप्रह्लादनो दाहमूर्च्छाप्रशमनः षट्पदपि-पीलिकानामिष्टतमः स्निग्धः शीतो गुरुश्च। च.सू. 26.43(1)

अम्ल रस (Amla rasa)

- अम्लो रसो भक्तं रोचयति, अग्निं दीपयति, देहं बृंहयति ऊर्जयति, मनो बोधयति, इन्द्रियाणि दृढीकरोति, बलं वर्धयति, वातमनुलोमयति, हृदयं तर्पयति, आस्यमास्रावयति, भुक्तमप-कर्षयति, क्लेदयति जरयति, प्रीणयति, लघुरुष्णः स्निग्धश्च। च.सू. 26.43(2)

लवण रस (Lavana rasa)

- लवणो रसः पाचनः क्लेदनो दीपनश्च्यावनश्छेदनो भेदन-स्तीक्ष्णः सरो विकास्यधःस्रंस्यवकाशकरो वातहरः स्तम्भ-बन्धसंघातविधमनः सर्वरसप्रत्यनीकभूतः, आस्यमास्रावयति, कफं विष्यन्दयति, मार्गान् विशोधयति, सर्वशरीरावयवान् मृदूकरोति, रोचयत्याहारम्, आहारयोगी, नात्यर्थं गुरुः स्निग्ध उष्णश्च। च.सू. 26.43(3)

कटु रस (Katu rasa)

- कटुको रसो वक्त्रं शोधयति, अग्निं दीपयति, भुक्तं शोषयति घ्राणमास्रावयति, चक्षुर्विरेचयति, स्फुटीकरोतीन्द्रियाणि अलसकश्वयथूपचयोदर्दाभिष्यन्दस्नेहस्वेदक्लेदमलानुपहन्ति रोचयत्यशनं, कण्डूर्विनाशयति, व्रणानवसादयति, क्रिमी हिनस्ति, मांसं विलिखति, शोणितसंघातं भिनत्ति

बन्धांश्छिनत्ति, मार्गान् विवृणोति, श्लेष्माणं शमयति, लघुरुष्णो रूक्षश्च। च.सू. 26.43(4)

तिक्त रस (Tikta rasa)

- तिक्तो रसः स्वयमरोचिष्णुरप्यरोचकघ्नो विषघ्नः क्रिमिघ्नो मूर्च्छादाहकण्डूकुष्ठतृष्णाप्रशमनस्त्वङ्मांसयोः स्थिरीकरणो ज्वरघ्नो दीपनः पाचनः स्तन्यशोधनो लेखनः क्लेदमेदोवसामज्जलसीकापूयस्वेदमूत्रपुरीषपित्तश्लेष्मोपशोषणो रूक्षः शीतो लघुश्च। च.सू. 26.43(5)

कषाय रस (Kashaya rasa)

- कषायो रसः संशमनः संग्राही सन्धानकरः पीडनो रोपणः शोषणः स्तम्भनः श्लेष्मरक्तपित्तप्रशमनः शरीरक्लेदस्योपयोक्ता रूक्षः शीतोऽलघुश्च। च.सू. 26.43(6)

रसों की तुलनात्मक गुणवत्ता
(Comparative qualities of rasas)

रस	शीतता एवं औष्ण्य	गुरुता एवं लघुता	रूक्षता एवं स्निग्धता
मधुर	शीततम	गुरुतम	स्निग्धतम
अम्ल	उष्णतर	लघु	स्निग्धतर
लवण	उष्णतम	गुरु	स्निग्ध

रस	शीतता एवं औष्ण्य	गुरुता एवं लघुता	रूक्षता एवं स्निग्धता
कटु	उष्ण	लघुतर	रूक्षतर
तिक्त	शीत	लघुतम	रूक्ष
कषाय	शीततर	गुरुतर	रूक्षतम

रसों का अधोवात-मूत्रादि मलों पर प्रभाव
(Action of rasas on flatus etc.)

मधुर-अम्ल-लवण	वात-मूत्र-पुरीष निकालने में सुखदायक
कटु-तिक्त-कषाय	वात-मूत्र-पुरीष निकालने में दुःखदायक

विपाक (Vipaka)

मधुर विपाक (Madhura vipaka)

- मधुरः सृष्टविण्मूत्रो विपाकः कफशुक्रलः।। च.सू. 26.61

अम्ल विपाक (Amla vipaka)

- पित्तकृत् सृष्टविण्मूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः। च.सू. 26.62

कटु विपाक (Katu vipaka)

- शुक्रहा बद्धविण्मूत्रो विपाको वातलः कटुः। च.सू. 26.61

विपाक	शुक्र पर प्रभाव	मल पर परिणाम	दोष पर परिणाम	स्वभाव
मधुर विपाक	शुक्रल	सृष्ट विट् मूत्र	कफवर्धक	गुरु
अम्ल विपाक	शुक्रनाश	सृष्ट विट् मूत्र	पित्तकृत्	लघु
कटु विपाक	शुक्रनाश	बद्ध विट् मूत्र	वातल	लघु

विपाकों की गौरवता एवं लाघवता
(Heaviness & lightness of vipakas)

- **तेषां गुरुः स्यान्मधुरः कटुकाम्लावतोऽन्यथा।।** च.सू. 26.62

विपाक	स्वभाव
मधुर विपाक	गुरु
अम्ल विपाक	लघु
कटु विपाक	लघु

वीर्य का लक्षण (Features of virya)

- **वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया।**
  नावीर्यं कुरुते किंचित् सर्वा वीर्यकृता क्रिया।। च.सू. 26.65

जिससे जो क्रिया की जाती है, उसे उसका वीर्य कहते हैं। क्योंकि बिना वीर्य के किसी कार्य का सम्पादन नहीं किया जा सकता, अतः जितनी क्रियायें हैं, वे सब वीर्य से ही की जाती हैं।

रस-विपाक-वीर्य का ज्ञान
(Knowledge of rasa, vipaka & virya)

- **रसो निपाते द्रव्याणां, विपाकः कर्मनिष्ठया।**
  वीर्यं यावदधीवासान्निपाताच्चोपलभ्यते।। च.सू. 26.66

रस का ज्ञान जिह्वा के स्पर्श होता है। विपाक का ज्ञान कर्मनिष्ठा अर्थात् कर्म की समाप्ति से होता है। जिह्वा पर द्रव्यों के सामूहिक निपात से लेकर जब तक द्रव्य शरीर में रहते हैं, उससे वीर्य का ज्ञान होता है।

प्रभाव (Prabhava)

लक्षण (Features)

- **रसवीर्यविपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते।**
  विशेषः कर्मणां चैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः।। च.सू. 26.67

दो या दो से अधिक द्रव्यों के रसादि में अनुरूपता अर्थात् समानता रहते हुए भी जहां कर्मों की विशेषता देखी जाती है– वह कर्म प्रभावजन्य होता है।

उदाहरण (Examples)

- **कटुकः कटुकः पाके वीर्योष्णश्चित्रको मतः।**
  तद्वद्दन्ती प्रभावात्तु विरेचयति मानवम्।।
  विषं विषघ्नमुक्तं यत् प्रभावस्तत्र कारणम्।
  ऊर्ध्वानुलोमिकं यच्च तत् प्रभावप्रभावितम्।।

मणीनां धारणीयानां कर्म ग्रद्विविधात्मकम्।
तत् प्रभावकृतं तेषां प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते।। च.सू. 26.68-70

षड्रसों की परिभाषा (Definitions of six rasas)

मधुर रस (Madhura rasa)

- स्नेहनप्रीणनाह्लादमार्दवैरुपलभ्यते।
  मुखस्थो मधुरश्चास्यं वाप्नुवॅल्लिम्पतीव च।। च.सू. 26.74

स्नेहन, प्रीणन, आह्लादन, मार्दव गुणों से मुख में स्थित मधुर रस मुख के चारों ओर फैलता हुआ मुख को लिप्त कर देता है, वह मधुर रस है।

अम्ल रस (Amla rasa)

- दन्तहर्षान्मुखास्रावात् स्वेदनान्मुखबोधनात्।
  विदाहाच्चास्यकण्ठस्य प्राश्यैवाम्लं रसं वदेत्।। च.सू. 26.75

दन्तहर्ष से, मुख स्राव से, स्वेद उत्पन्न करने से, मुख बोधन की शक्ति को उत्पन्न करने से, मुख एवं कण्ठ में विदाह करने से तथा प्राशन से इसे अम्ल रस कहते हैं।

लवण रस (Lavana rasa)

- प्रलीयन् क्लेदविष्यन्दमार्दवं कुरुते मुखे।
  यः शीघ्रं लवणो ज्ञेयः स विदाहान्मुखस्य च।। च.सू. 26.76

जो मुख में रखा हुआ शीघ्र ही प्रलीन कर देता है, क्लेदन, विष्यन्दन

और मृदुता करता है और मुख में विदाह उत्पन्न करता है- वह लवण रस है।

कटु रस (Katu rasa)

- संवेजयेद्यो रसानां निपाते तुदतीव च।
  विदहन्मुखनासाक्षि संस्रावी स कटुः स्मृतः।। च.सू. 26.77

जो जिह्वा पर रखने मात्र से घबराहट उत्पन्न करे, जिह्वा पर चुभने सी पीड़ा करे, दाहकारक हो, मुख, नासिक और नेत्र से स्राव उत्पन्न करे वह कटु रस है।

तिक्त रस (Tikta rasa)

- प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च।
  स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः।। च.सू. 26.78

जो जिह्वा को कष्ट दे, अन्य रस का ज्ञान न होने दे, मुख विशदता को दूर कर प्रह्लादकारक हो- वह तिक्त रस है।

कषाय रस (Kashaya rasa)

- वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः।
  बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि।। च.सू. 26.79

जो जिह्वा की विशदता को दूर करे परन्तु जाड्यता भी उत्पन्न करे, कण्ठ बॅधन करे और जो विकासी गुण का ह्रासक हो- वह कषाय रस है।

उष्ण मधु की मारकता (Fatal nature of warm honey)

- मधु चोष्णमुष्णार्तस्य च मधु मरणाय। च.सू. 26.84

विरुद्ध आहारजन्य रोग

(Diseases caused by consumption of viruddha ahara)

- षाण्ढ्यान्ध्यवीसर्पदकोदराणां विस्फोटकोन्मादभगन्दराणाम्।
  मूर्च्छामदाध्मानगलग्रहाणां पाण्ड्वामयस्यामविषस्य चैव।।
  किलासकुष्ठग्रहणीगदानां शोथाम्लपित्तज्वरपीनसानाम्।
  सन्तानदोषस्य तथैव मृत्योर्विरुद्धमन्नं प्रवदन्ति हेतुम्।।

च.सू. 26.102-103

षाण्ढ्य	आन्ध्य	विसर्प	दकोदर	विस्फोट
उन्माद	भगन्दर	मूर्च्छा	मद	आध्मान
गलग्रह	पाण्डुरोग	आमविष	किलास	कुष्ठ
ग्रहणीगद	शोथ	अम्लपित्त	ज्वर	पीनस
सन्तानदोष	मृत्यु			

• • •

27. अन्नपानविध्यध्याय

कुल श्लोक संख्या-352

अध्याय का उद्देश्य (Purpose of the chapter)

- तस्माद्धिताहितावबोधनार्थमन्नपानविधिमखिलेनोपदेक्ष्यामो-ऽग्निवेश! च.सू. 27.4

हितकर एवं अहितकर अन्नपान के अवबोधनार्थ इस अध्याय का वर्णन किया गया है।

स्वाभावानुसार द्रव्यों के गुण

(Qualities of dravyas - as per their nature)

उदकं क्लेदयति	लवणं विष्यन्दयति	क्षारः पाचयति
मधु संदधाति	सर्पिः स्नेहयति	क्षीरं जीवयति
मांसं बृंहयति	रसः प्रीणयति	सुरा जर्जरीकरोति
शीधुरवधमति	द्राक्षासवो दीपयति	फाणितमाचिनोति
दधि शोफं जनयति	पिण्याकशाकं ग्लपयति	प्रभूतान्तर्मलो माषसूपः
दृष्टिशुक्रघ्नः क्षारः		

- प्रायः अम्ल द्रव्य पित्तकारक होते हैं। इस नियम के लिए दाडिम एवं आमलकी अपवाद हैं।
- प्रायः मधुर द्रव्य कफकारक होते हैं। इस नियम के लिए पुराण शालि, पुराण षष्टिक, पुराण यव और पुराण गोधूम अपवाद हैं।
- प्रायः तिक्त द्रव्य वातकारक एवं अवृष्य होते हैं। इस नियम के लिए वेत्राग्र, अमृता एवं पटोल पत्र अपवाद हैं।
- प्रायः कटु द्रव्य वातकारक एवं अवृष्य होते हैं। इस नियम के लिए पिप्पली और शुण्ठी अपवाद हैं।

आहार वर्ग (Group of ahara) -12

1. शूकधान्य	2. शमीधान्य	3. मांसवर्ग
4. शाकवर्ग	5. फलवर्ग	6. हरितवर्ग
7. मद्यवर्ग	8. जलवर्ग	9. दुग्धवर्ग
10. इक्षुवर्ग	11. कृतान्नवर्ग	12. आहारोपयोगी वर्ग

षष्टिक के गुण (Qualities of shashtika)

- **शीतः स्निग्धोऽगुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरात्मकः।**
  षष्टिकः प्रवरो गौरः कृष्णगौरस्ततोऽनु च।। च.सू. 27.13

  - शीत - स्निग्ध - लघु - मधुर - त्रिदोषघ्न - स्थिर

यव के गुण (Qualities of yava - barley)

- **रूक्षः शीतोऽगुरुः स्वादुर्बहुवातशकृद्यवः।**
  स्थैर्यकृत् सकषायश्च बल्यः श्लेष्मविकारनुत्।। च.सू. 27.19

  - रूक्ष - शीत - लघु - मधुर - बहुवात एवं बहु पुरीषकर - स्थैर्यकर - कषाय - बल्य - कफविकारनाशक

गोधूम के गुण (Qualities of godhuma - wheat)

- **सन्धानकृद्वातहरो गोधूमः स्वादुशीतलः।**
  जीवनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः।। च.सू. 27.21

  - सन्धानकर - वातहर - मधुर - शीतल - जीवनीय - बृंहणीय - वृष्य - स्निग्ध - स्थैर्यकर - गुरु

मुद्ग के गुण (Qualities of mudga - green gram)

- **कषायमधुरो रूक्षः शीतः पाके कटुर्लघुः।**
  विशदः श्लेष्मपित्तघ्नो मुद्गः सूप्योत्तमो मतः।। च.सू. 27.23

  - कषाय - मधुर - रूक्ष - शीत - कटु विपाक - लघु - विशद - कफपित्तघ्न - सूप के लिए उत्तम

माष के गुण (Qualities of masha - black gram)

- **वृष्यः परं वातहरः स्निग्धोष्णो मधुरो गुरुः।**
  बल्यो बहुमलः पुंस्त्वं माषः शीघ्रं ददाति च।। च.सू. 27.24

- वृष्य - परम वातहर - स्निग्ध - उष्ण - मधुर - गुरु - बल्य - बहु मलकर - पुंस्त्वकर

कुलत्थ के गुण (Qualities of kulattha - horse gram)

- **उष्णाः कषायाः पाकेऽम्लाः कफशुक्रानिलापहाः।**
  कुलत्था ग्राहिणः कासहिक्काश्वासार्शसां हिताः।। च.सू. 27.26

  - उष्ण - कषाय - अम्ल विपाक - कफ, शुक्र एवं वातहर - ग्राही - कास - हिक्का - श्वास - अर्श में हितकर

तिल के गुण (Qualities of tila - sesame)

- **स्निग्धोष्णो मधुरस्तिक्तः कषायः कटुकस्तिलः।**
  त्वच्यः केश्यश्च बल्यश्च वातघ्नः कफपित्तकृत्।। च.सू. 27.30

  - स्निग्ध - उष्ण - मधुर - तिक्त - कषाय - कटु - त्वच्य - केश्य - बल्य - वातघ्न - कफपित्तकर

मांस की योनि (Sources of meat) - 8

1. प्रसह	2. भूमिशय	3. आनूप	4. जलज
5. जलचर	6. जांगल	7. विष्किर	8. प्रतुद

प्रसहादि प्राणियों की व्याख्या
(Definitions of various meat sources)

- **प्रसह्य भक्षयन्तीति प्रसहास्तेन संज्ञिताः।।**

भूशया बिलवासित्वादानूपानूपसंश्रयात्।
जले निवासाज्जलजा जलेचर्याज्जलेचराः।।
स्थलजा जांगलाः प्रोक्ता मृगा जांगलचारिणः।
विकीर्य विष्किराश्चेति प्रतुद्य प्रतुदाः स्मृताः।। च.सू. 27.53-55

- प्रसहः दूसरे से छीनकर खानेवाले
- भूशयः बिल में रहनेवाले
- आनूपः जल प्रधान देश में रहनेवाले
- जलचरः जल में निवास करनेवाले
- जांगलः भूमि पर रहनेवाले और यहां घूमनेवाले मृगों का जलचारी कहते हैं।
- विष्किरः बिखेर कर खाने वाले
- प्रतुदः चोंच या पंजा मारकर खाने वाले

अजा मांस के गुण (Qualities of meat of aja - goat)

- **नातिशीतगुरुस्निग्धं मांसमाजमदोषलम्।।**
  शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दि बृंहणम्। च.सू. 27.61-62

  - नातिशीत - नातिगुरु - स्निग्ध - अदोषल - शरीरधातुसामान्याद् - अनभिष्यन्दि-बृंहण

कुक्कुट मांस के गुण
(Qualities of meat of kukkuta - cock)

- स्निग्धाश्चोष्णाश्च वृष्याश्च बृंहणाः स्वरबोधनाः।।
  बल्याः परं वातहराः स्वेदनाश्चरणायुधाः। च.सू. 27.66-67

– स्निग्ध – उष्ण – वृष्य – बृंहण – स्वरबोधन – बल्य – परम वातहर – स्वेदन

गोमांस के गुण (Qualities of meat of go - cow)

- गव्यं केवलवातेषु पीनसे विषमज्वरे।।
  शुष्ककासश्रमात्यग्निमांसक्षयहितं च तत्। च.सू. 27.79-80

– केवल वातरोग – पीनस – विषमज्वर – शुष्क कास – श्रम - अत्यग्नि – मांसक्षय में हितकर

मत्स्य मांस के गुण (Qualities of meat of matsya - fish)

- गुरूष्णा मधुरा बल्या बृंहणाः पवनापहाः।।
  मत्स्याः स्निग्धाश्च वृष्याश्च बहुदोषाः प्रकीर्तिताः।
  च.सू. 27.81-82

– गुरु – उष्ण – मधुर – बल्य – बृंहणीय – वातघ्न – स्निग्ध - वृष्य – बहुदोष – कर

मांस का महत्त्व (Importance of meat)

- शरीरबृंहणे नान्यत् खाद्यं मांसाद्विशिष्यते।। च.सू. 27.87

मांस से बढ़कर शरीर का बृंहण करने के लिए दूसरा कोई द्रव्य समर्थ नहीं है।

सर्षप शाक के गुण (Qualities of sarshapa shaka)

- त्रिदोषं बद्धविण्मूत्रं सार्षपं शाकमुच्यते।। च.सू. 27.122

– त्रिदोषकर – विट् एवं मूत्र को बांधने वाला

मृद्वीका के गुण (Qualities of mrdvika - grapes)

- तृष्णादाहज्वरश्वासरक्तपित्तक्षतक्षयान्।
  वातपित्तमुदावर्तं स्वरभेदं मदात्ययम्।।
  तिक्तास्यतामास्यशोषं कासं चाशु व्यपोहति।
  मृद्वीका बृंहणी वृष्या मधुरा स्निग्धशीतला।। च.सू. 27.125-126

– तृष्णा – दाह – ज्वर – श्वास – रक्तपित्त – क्षत – क्षय – वातपित्त उदावर्त – स्वरभेद – मदात्यय – तिक्तास्यता – मुखशोष – कास शामक – बृंहणीय - वृष्य – मधुर – स्निग्ध – शीतल

कपित्थ के गुण (Qualities of kapittha - wood apple)

- कपित्थमामं कण्ठघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम्।।
  मधुराम्लकषायत्वात् सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम्।
  परिपक्वं च दोषघ्नं विषघ्नं ग्राहि गुर्वपि।। च.सू. 27.136-13

आम कपित्थः – कण्ठघ्न – विषघ्न – ग्राही – वातल

पक्व कपित्थः – मधुर – अम्ल – कषाय – सुगन्धि – रुचिकर – दोषघ्न – विषघ्न – ग्राही – गुरु

बिल्व के गुण (Qualities of bilwa - Aegle marmelos)

- बिल्वं तु दुर्जरं पक्वं दोषलं पूतिमारुतम्।
  स्निग्धोष्णतीक्ष्णं तद्बालं दीपनं कफवातजित्।। च.सू. 27.138

पक्व बिल्वः – दुर्जर – दोषल – पूति मारुतकर

बाल बिल्वः – स्निग्ध – उष्ण – तीक्ष्ण – दीपन – कफवातघ्न

बिभीतक के गुण (Qualities of bibhitaka - Terminalia bellerica)

- रसासृङ्मांसमेदोजान्दोषान् हन्ति बिभीतकम्।।
  स्वरभेदकफोत्क्लेदपित्तरोगविनाशनम्। च.सू. 27.148-149

– रस, रक्त, मांस एवं मेदो दोषनाशक – स्वरभेद – कफ – उत्क्लेद – पित्तरोग नाशक

दाडिम के गुण (Qualities of dadima - pomegranate)

- अम्लं कषायमधुरं वातघ्नं ग्राहि दीपनम्।।
  स्निग्धोष्णं दाडिमं हृद्यं कफपित्ताविरोधि च। च.सू. 27.149-150

– अम्ल – कषाय – मधुर – वातघ्न – ग्राही – दीपन – स्निग्ध – उष्ण – हृद्य – कफपित्त अविरोधि

आर्द्रक के गुण (Qualities of ardraka - ginger)

- रोचनं दीपनं वृष्यमार्द्रकं विश्वभेषजम्।
  वातश्लेष्मविबन्धेषु रसस्तस्योपदिश्यते।। च.सू. 27.166

– रोचन – दीपन – वृष्य – वातकफघ्न – विबन्धहर

मूलक के गुण (Qualities of mulaka - radish)

- बालं दोषहरं, वृद्धं त्रिदोषं, मारुतापहम्।
  स्निग्धसिद्धं, विशुष्कं तु मूलकं कफवातजित्।। च.सू. 27.168

बाल मूलकः –दोषहर

वृद्ध मूलकः –त्रिदोषकर

स्निग्ध सिद्ध मूलकः –वातघ्न

विशुष्क मूलकः –कफवातघ्न

पलाण्डु के गुण (Qualities of palandu - onion)

- श्लेष्मलो मारुतघ्नश्च पलाण्डुर्न च पित्तनुत्।
  आहारयोगी बल्यश्च गुरुर्वृष्योऽथ रोचनः।। च.सू. 27.175

– कफकारक – वातघ्न – न पित्तकर – आहारयोगी – बल्य – गुरु – वृष्य – रोचन

लशुन के गुण (Qualities of lashuna - garlic)

- क्रिमिकुष्ठकिलासघ्नो वातघ्नो गुल्मनाशनः।
  स्निग्धश्चोष्णश्च वृष्यश्च लशुनः कटुको गुरुः।। च.सू. 27.176

– क्रिमिघ्न – कुष्ठघ्न – किलासघ्न – वातघ्न – गुल्मनाशक – स्निग्ध – उष्ण – वृष्य – कटु – गुरु

सुरा के गुण (Qualities of sura - alcohol)

- **कृशानां सक्तमूत्राणां ग्रहण्यर्शोविकारिणाम्।**
  सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेषु च।। च.सू. 27.179

– कृश – मूत्रावरोध – ग्रहणी – अर्शोविकार में प्रशस्त – वातघ्न – स्तन्य – रक्तक्षयहर

अरिष्ट के गुण (Qualities of arishta)

- **शोषार्शोग्रहणीदोषपाण्डुरोगारुचिज्वरान्।**
  हन्त्यरिष्टः कफकृतान् रोगान्रोचनदीपनः।। च.सू. 27.182

– शोष – अर्शोरोग – ग्रहणीदोष – पाण्डुरोग – अरुचि – ज्वर – कफ – रोगघ्न – रोचन – दीपन

अम्ल काञ्जिक के गुण (Qualities of amla kanjika)

- **दाहज्वरापहं स्पर्शात् पानाद्वातकफापहम्।**
  विबन्धघ्नमवस्रंसि दीपनं चाम्लकाञ्जिकम्।। च.सू. 27.192

– दाहहर – ज्वरहर – वातकफघ्न – विबन्धघ्न – अवस्रंसी – दीपन

यथाविधि सेवित मद्य के गुण (Qualities of madya - consumed judiciously)

- **हर्षणं प्रीणनं मद्यं भयशोकश्रमापहम्।**

प्रागल्भ्यवीर्यप्रतिभातुष्टिपुष्टिबलप्रदम्।।
सात्त्विकैर्विधिवद्युक्त्या पीतं स्यादमृतं यथा। च.सू. 27.194–195

– हर्षण – प्रीणन – भयहर – शोकहर – श्रमहर – प्रगल्भता – प्रतिभा – तुष्टि – पुष्टि – बलप्रद – सात्त्विक विधि से पीने पर अमृत तुल्य

दिव्य उदक के गुण (Qualities of divya udaka)

- **शीतं शुचि शिवं मृष्टं विमलं लघु षड्गुणम्।**
  प्रकृत्या दिव्यमुदकम्।। च.सू. 27.198

– शीत – शुचि – शिव – मृष्ट – विमल – लघु

उत्तम जल के गुण (Qualities of best paniya-water)

- **ईषत्कषायमधुरं सुसूक्ष्मं विशदं लघु।**
  अरूक्षमनभिष्यन्दि सर्वं पानीयमुत्तमम्।। च.सू. 27.202

– ईषत् कषाय – मधुर – सूक्ष्म – विशद – लघु – अरूक्ष – अनभिष्यन्दि

गोदुग्ध के गुण (Qualities of cow milk)

- **स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलम्।**
  गुरु मन्दं प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः।।
  तदेवंगुणमेवौजः सामान्यादभिवर्धयेत्।
  प्रवरं जीवनीयानां क्षीरमुक्तं रसायनम्।। च.सू. 27.217–218

– मधुर – शीत – मृदु – स्निग्ध – बहल – श्लक्ष्ण – पिच्छिल – गुरु – मन्द – प्रसन्न – ओज गुण वर्द्धक – प्रवर जीवनीय – उत्तम रसायन

स्त्री दुग्ध के गुण (Qualities of human milk)

- जीवनं बृंहणं सात्म्यं स्नेहनं मानुषं पयः।
  नावनं रक्तपित्ते च तर्पणं चाक्षिशूलिनाम्।। च.सू. 27.224

– जीवनीय – बृंहणीय – सात्म्य – स्नेहन – रक्तपित्त में नस्य रूप में हितकर – अक्षिशूल में तर्पण रूप में हितकर

दधि के गुण (Qualities of dadhi - curd)

- रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम्।
  पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं मंगल्यं बृंहणं दधि।।
  पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे।
  अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च कार्श्ये च दधि शस्यते।।

च.सू. 27.225-226

– रोचन – दीपन – वृष्य – स्नेहन – बल्य – अम्ल विपाक – उष्ण – वातघ्न – मंगल्य – बृंहणीय – पीनस – अतिसार – शीतज्वर – विषमज्वर – अरुचि – मूत्रकृच्छ्र – कार्श्य में हितकर

तक्र के गुण (Qualities of takra - butter milk)

- शोफार्शोग्रहणीदोषमूत्रग्रहोदरारुचौ।
  स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद्गरेषु च।। च.सू. 27.229

– शोफ – अर्शोरोग – ग्रहणीदोष – मूत्रग्रह – उदररोग – अरुचि – स्नेहव्यापद् – पाण्डुरोग – गरविष में हितकर

घृत के गुण (Qualities of ghrta-clarified butter)

- स्मृतिबुद्ध्यग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्धनम्।
  वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीज्वरापहम्।।
  सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः।
  सहस्रवीर्यं विधिभिर्घृतं कर्मसहस्रकृत्।। च.सू. 27.231-232

– स्मृति – बुद्धि – अग्नि – शुक्र – ओज – कफ – मेद वर्द्धक – वातपित्तघ्न – विष – उन्माद – शोष – अलक्ष्मी – ज्वरहर – सर्व स्नेहों में उत्तम – शीत – मधुर रसात्मक – मधुर विपाकी – सहस्र वीर्य युक्त आदि।

इक्षुरस के गुण (Qualities of sugarcane juice)

- वृष्यः शीतः सरः स्निग्धो बृंहणो मधुरो रसः।
  श्लेष्मलो भक्षितस्येक्षोर्यान्त्रिकस्तु विदह्यते।। च.सू. 27.237

– वृष्य – शीत – सर – स्निग्ध – बृंहण – मधुर रसात्मक – श्लेष्मल – यान्त्रिक इक्षु रसः विदाहकारक

मधु (Madhu - honey)

मधु के भेद (Types of madhu) - 4

जाति	श्रेष्ठता	वर्ण
माक्षिक	श्रेष्ठ	तैलवर्ण
भ्रामर	गुरु पाकी	श्वेतवर्ण
क्षौद्र		कपिलवर्ण
पौत्तिक		घृतवर्ण

मधु के गुण (Qualities of madhu)

- वातलं गुरु शीतं च रक्तपित्तकफापहम्।
  सन्धातृ च्छेदनं रूक्षं कषायं मधुरं मधु।। च.सू. 27.245

– वातल – गुरु – शीत – रक्तपित्तघ्न – कफघ्न – सन्धानकर - छेदन – रूक्ष – कषाय – मधुर

पेया के गुण (Qualities of peya - thin gruel)

- क्षुत्तृष्णाग्लानिदौर्बल्यकुक्षिरोगज्वरापहा।
  स्वेदाग्निजननी पेया वातवर्चोनुलोमनी।। च.सू. 27.250

– क्षुधा – तृष्णा – ग्लानि – दौर्बल्य – कुक्षिरोग – ज्वरघ्न - स्वेदजनन – वात अनुलोमक – पुरीष अनुलोमक

विलेपी के गुण (Qualities of vilepi - thick gruel)

- तर्पणी ग्राहिणी लघ्वी हृद्या चापि विलेपिका। च.सू. 27.251

– तर्पण – ग्राही – लघु – हृद्य

मण्ड के गुण (Qualities of manda - rice water)

- मण्डस्तु दीपयत्यग्निं वातं चाप्यनुलोमयेत्।।
  मृदूकरोति स्रोतांसि स्वेदं संजनयत्यपि।
  लंघितानां विरिक्तानां जीर्णे स्नेहे च तृष्यताम्।।
  दीपनत्वाल्लघुत्वाच्च मण्डः स्यात् प्राणधारणः।

च.सू. 27.251-253

– दीपन – वातानुलोमक – स्रोतस् मृदुकर – स्वेदजनक – लंघन, विरेचन, स्नेह जीर्ण की तृष्णा के लिए प्राणधारक आदि।

लाजमण्ड के गुण (Qualities of laja manda)

- तृष्णातीसारशमनो धातुसाम्यकरः शिवः।
  लाजमण्डोऽग्निजननो दाहमूर्च्छानिवारणः।।
  मन्दाग्निविषमाग्नीनां बालस्थविरयोषिताम्।
  देयश्च सुकुमाराणां लाजमण्डः सुसंस्कृतः।।

च.सू. 27.254-255

– तृष्णाहर – अतिसारघ्न – धातुसाम्यकर – शिव – अग्निजनक – दाहहर – मूर्च्छाहर – मन्दाग्नि, विषमाग्नि, बाल, वृद्ध, स्त्री एवं सुकुमारों के लिए हितकर

ओदन के गुण (Qualities of odana - cooked rice)

- सुधौतः प्रस्रुतः स्विन्नः संतप्तश्चौदनो लघुः।। च.सू. 27.257

– लघु

यूष के भेद (Types of Types of yusha) -6

1. अकृत यूष	2. कृत यूष	3. तनु मांसरस
4. सांस्कारिक मांसरस	5. अम्ल सूप	6. अनम्ल सूप

सक्तु के गुण (Qualities of saktu)

- सक्तवो वातला रूक्षा बहुवर्चोनुलोमिनः।

तर्पयन्ति नरं सद्यः पीताः सद्योबलाश्च ते।।
मधुरा लघवः शीताः सक्तवः शालिसंभवाः।
ग्राहिणो रक्तपित्तघ्नास्तृष्णाच्छर्दिज्वरापहाः।।

च.सू. 27.263-264

- वातल - रूक्ष - बहु पुरीषकर - अनुलोमक - तर्पण-सद्य बलदायक- मधुर - लघु - शीत - ग्राही - रक्तपित्तघ्न - तृष्णाहर - छर्दिघ्न - ज्वरहर

वेशवार के गुण (Qualities of veshavara)

- वेशवारो गुरुः स्निग्धो बलोपचयवर्धनः। च.सू. 27.269

- गुरु - स्निग्ध - बल एवं उपचय वर्द्धक

रसाला के गुण (Qualities of rasala)

- रसाला बृंहणी वृष्या स्निग्धा बल्या रुचिप्रदा।
  स्नेहनं तर्पणं हृद्यं वातघ्नं सगुडं दधि।। च.सू. 27.278

- बृंहण - वृष्य - स्निग्ध - बल्य - रुचिकर - स्नेहन - तर्पण - हृद्य - वातघ्न

तैल के सामान्य गुण (General qualities of taila)

- कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च।
  पित्तलं बद्धविण्मूत्रं न च श्लेष्माभिवर्धनम्।।
  वातघ्नेषूत्तमं बल्यं त्वच्यं मेधाग्निवर्धनम्।
  तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं मतम्।।

तैलप्रयोगादजरा निर्विकारा जितश्रमाः।
आसन्नतिबलाः संख्ये दैत्याधिपतयः पुरा।। च.सू. 27.286-288

- कषाय अनुरस - मधुर - सूक्ष्म - उष्ण - व्यवायि - पित्तल - पुरीष एवं मूत्र बद्धताकारक - न श्लेष्मल - उत्तम वातघ्न - बल्य - त्वच्य - मेधा एवं अग्नि वर्द्धक - संयोग संस्कार से सर्वरोगहर आदि।

एरण्ड तैल के गुण
(Qualities of eranda taila - castor oil)

- ऐरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम्।
  वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम्।। च.सू. 27.289

- मधुर - गुरु - श्लेष्मवर्द्धक - वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग, जीर्णज्वर नाशक

शुण्ठी के गुण (Qualities of shunthi)

- सस्नेहं दीपनं वृष्यमुष्णं वातकफापहम्।
  विपाके मधुरं हृद्यं रोचनं विश्वभेषजम्।। च.सू. 27.296

- सस्नेह - दीपन - वृष्य - उष्ण - वातकफघ्न - मधुर विपाकी - हृद्य - रोचन

पिप्पली के गुण (Qualities of pippali)

- श्लेष्मला मधुरा चार्द्रा गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली।
  सा शुष्का कफवातघ्नी कटूष्णा वृष्यसंमता।। च.सू. 27.297

आर्द्र पिप्पली: -श्लेष्मल-मधुर-गुरु-स्निग्ध

शुष्क पिप्पली: -कफवातघ्न-कटु-उष्ण-वृष्य

मरिच के गुण (Qualities of maricha)

- नात्यर्थमुष्णं मरिचमवृष्यं लघु रोचनम्।
  छेदित्वाच्छोषणत्वाच्च दीपनं कफवातजित्।। च.सू. 27.298

– नाति उष्ण – अवृष्य – लघु – रोचन – छेदि – शोषण – दीपन- कफवातघ्न

हिंगु के गुण (Qualities of hingu - asafetida)

- वातश्लेष्मविबन्धघ्नं कटूष्णं दीपनं लघु।
  हिंगु शूलप्रशमनं विद्यात् पाचनरोचनम्।। च.सू. 27.299

– वातकफघ्न – विबन्धहर – कटु – उष्ण – दीपन – लघु - शूल प्रशमन – पाचन-रोचन

सैन्धव के गुण (Qualities of saindhava)

- रोचनं दीपनं वृष्यं चक्षुष्यमविदाहि च।
  त्रिदोषघ्नं समधुरं सैन्धवं लवणोत्तमम्।। च.सू. 27.300

– रोचन – दीपन – वृष्य – चक्षुष्य – अविदाही – त्रिदोषघ्न - मधुर – उत्तमलवण

यवक्षार के गुण (Qualities of yava-kshara)

- हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहानाहगलग्रहान्।
  कासं कफजमर्शांसि यावशूको व्यपोहति।। च.सू. 27.305

– हृद्रोग – पाण्डुरोग – ग्रहणी रोग – प्लीहा – आनाह – गलग्रह – कास – कफज अर्श नाशक

मांसरस के गुण (Qualities of mamsa rasa - meat soup)

- प्रीणनः सर्वभूतानां हृद्यो मांसरसः परम्।।
  शुष्यतां व्याधिमुक्तानां कृशानां क्षीणरेतसाम्।
  बलवर्णार्थिनां चैव रसं विद्याद्यथामृतम्।।
  सर्वरोगप्रशमनं यथास्वं विहितं रसम्।
  विद्यात् स्वर्यं बलकरं वयोबुद्धीन्द्रियायुषाम्।।
  व्यायामनित्याः स्त्रीनित्या मद्यनित्याश्च ये नराः।
  नित्यं मांसरसाहारा नातुराः स्युर्न दुर्बलाः।। च.सू. 27.312-315

– प्रीणन – परम् हृद्य – शुष्क, व्याधिमुक्त, कृश, क्षीण रेतस्, बल एवं वर्ण के इच्छुक के लिए अमृत तुल्य – सर्वरोगप्रशमन – स्वर्य – वय, बुद्धि, इन्द्रिय और आयु के लिए बलकर – व्यायाम नित्या, स्त्री नित्या, मद्य नित्या के लिए नित्य सेवनीय आदि।

अनुपान (Anupana - after drink)

परिभाषा (Definition)

- यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते।
  अन्नानुपानं धातूनां दृष्टं यन्न विरोधि च।। च.सू. 27.31

जो पेय पदार्थ आहार गुणों से विपरीत गुणों वाला होता है परन्तु धातुओं के विपरीत न हो - वह उस-उस अन्न द्रव्य का उचित अनुपान होता है।

उत्तम अनुपान (Best anupana)

वातज विकार	स्निग्ध एवं उष्ण अनुपान	पित्तज विकार	मधुर एवं शीतल अनुपान
कफज विकार	रूक्ष एवं उष्ण अनुपान	क्षय	मांसरस का अनुपान
उपवास-अध्व-भाष्य-स्त्री-मारुत-आतप-कर्म से क्लान्त	क्षीर का अनुपान	कृश पुरुष	सुरा का अनुपान
स्थूल को कृश करने के लिए	मधुदक का अनुपान	मन्दाग्नि-अनिद्रा-तन्द्रा-शोक-भय-क्लम-मद्य-मांसोचित के लिए	मद्य का अनुपान

अनुपान से लाभ (Benefits of anupana)

- **अनुपानं तर्पयति, प्रीणयति, ऊर्जयति, बृंहयति, पर्याप्तिमभिनिर्वर्तयति, भुक्तमवसादयति, अन्नसंघातं भिनत्ति, मार्दवमापादयति, क्लेदयति, जरयति, सुखपरिणामिताशुव्यवायितां चाहारस्योपजनयतीति।।** च.सू. 27.325

- तर्पण - प्रीणन - ऊर्जा - बृंहण - पर्याप्ति - भुक्त भोजन को आमाशय की ओर ले जाना - अन्नसंघात का भेदन, मृदुकरण, क्लेदन एवं जरण - भोजन का सम्यक् पाचन, शीर्घ व्यवायिता और उपजयन।

अवयवानुसार मांस के गुण

(Qualities of meat as per the body parts)

- **शरीरावयवाः सक्थिशिरःस्कन्धादयस्तथा।**
  सक्थिमांसाद्गुरुः स्कन्धस्ततः क्रोडस्ततः शिरः।।
  वृषणौ चर्म मेढ्रं च श्रोणी वृक्कौ यकृद्गुदम्।
  मांसाद्गुरुतरं विद्याद्यथास्वं मध्यमस्थि च।। च.सू. 27.334-335

मांस	गुरुता	मांस	गुरुता
सक्थि	+	वृषण	+
स्कन्ध	++	चर्म	++
क्रोड (उरः उदर)	+++	मेढ्र	+++
शिर	++++	श्रोणि	++++
		वृक्क	+++++

मांस	गुरुता	मांस	गुरुता
		यकृत्	++++++
		गुद	+++++++
		मध्य देह	++++++++
		अस्थि	+++++++++

हितभोजी की आयु मर्यादा

(Life span of wholesome eater)

- षड्त्रिंशतं सहस्राणि रात्रीणां हितभोजनः।
  जीवत्यनातुरो जन्तुर्जितात्मा संमतः सताम्।। च.सू. 27.348
  - 36000 रात्रि अर्थात् 100 वर्ष

• • •

28. विविधाशितपीतीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-48

धातुओं का आहार (Diet of dhatus - bodily tissues)

- धातवो हि धात्वाहाराः प्रकृतिमनुवर्तन्ते।। च.सू. 28.3
  धातुएँ धातुओं का आहार हैं।

धातु प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of dhatus)

रस प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of rasa dhatu)

- अश्रद्धा चारुचिश्चास्यवैरस्यमरसज्ञता।
  हृल्लासो गौरवं तन्द्रा सांगमर्दो ज्वरस्तमः।।
  पाण्डुत्वं स्रोतसां रोधः क्लैब्यं सादः कृशांगता।
  नाशोऽग्नेरयथाकालं वलयः पलितानि च।।
  रसप्रदोषजा रोगा । च.सू. 28.9-11

रक्त प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of rakta dhatu)

- वक्ष्यन्ते रक्तदोषजाः।
  कुष्ठवीसर्पपिडका रक्तपित्तमसृग्दरः।।
  गुदमेढ्रास्यपाकश्च प्लीहा गुल्मोऽथ विद्रधिः।
  नीलिका कामला व्यंगः पिप्लवस्तिलकालकाः।।
  दद्रुश्चर्मदलं श्वित्रं पाम्ना कोठास्रमण्डलम्।
  रक्तप्रदोषाज्जायन्ते । च.सू. 28.11-13

मांस प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of mamsa dhatu)

- श्रृणु मांसप्रदोषजान्।।
  अधिमांसार्बुदं कीलं गलशालूकशुण्डिके।
  पूतिमांसालजीगण्डगण्डमालोपजिह्विकाः।।
  विद्यान्मांसाश्रयान् । च.सू. 28.13-15

मेद प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of meda dhatu)

- मेदः संश्रयांस्तु प्रचक्ष्महे।
  निन्दितानि प्रमेहाणां पूर्वरूपाणि यानि च।। च.सू. 28.15

अस्थि प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of asthi dhatu)

- अध्यस्थिदन्तौ दन्तास्थिभेदशूलं विवर्णता।
  केशलोमनखश्मश्रुदोषाश्चास्थिप्रदोषजाः।। च.सू. 28.16

मज्जा प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of majja dhatu)

- रुक् पर्वणां भ्रमो मूर्च्छा दर्शनं तमसस्तथा।
  अरुषां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम्।।
  मज्जप्रदोषात् । च.सू. 28.17-18

शुक्र प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of shukra dhatu)

- शुक्रस्य दोषात् क्लैब्यमहर्षणम्।
  रोगि वा क्लीबमल्पायुर्विरूपं वा प्रजायते।।
  न चास्य जायते गर्भः पतति प्रस्रवत्यपि।
  शुक्रं हि दुष्टं सापत्यं सदारं बाधते नरम्।। च.सू. 28.18-19

इन्द्रिय प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of indriyas)

- इन्द्रियाणि समाश्रित्य प्रकुप्यन्ति यदा मलाः।
  उपघातोपतापाभ्यां योजयन्तीन्द्रियाणि ते।। च.सू. 28.20

स्नाय्वादि प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of snayu etc.)

- स्नायौ सिराकण्डराभ्यो दुष्टाः क्लिश्नन्ति मानवम्।
  स्तम्भसंकोचखल्लीभिर्ग्रन्थिस्फुरणसुप्तिभिः।। च.सू. 28.21

मल प्रदोषज विकार

(Diseases caused by vitiation of malas)

- मलानाश्रित्य कुपिता भेदशोषप्रदूषणम्।
  दोषा मलानां कुर्वन्ति संगोत्सर्गावतीव च।। च.सू. 28.22

धातु प्रदोषज विकारों की चिकित्सा

(Treatment of dhatu pradoshaja vikaras)

रस प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of rasa pradoshaja vikaras)

- रसजानां विकाराणां सर्वं लंघनमौषधम्। च.सू. 28.25

रक्त प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of rakta pradoshaja vikaras)

- विधिशोणितिकेऽध्याये रक्तजानां भिषग्जितम्।। च.सू. 28.25

मांस प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of mamsa pradoshaja vikaras)

- मांसजानां तु संशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्म च। च.सू. 28.26

मेद प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of meda pradoshaja vikaras)

- अष्टौनिन्दितिकेऽध्याये मेदोजानां चिकित्सितम्।। च.सू. 28.26

अस्थि प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of asthi pradoshaja vikaras)

- अस्थ्याश्रयाणां व्याधीनां पञ्चकर्माणि भेषजम्।
  बस्तयः क्षीरसर्पींषि तिक्तकोपहितानि च।। च.सू. 28.27

मज्जा एवं शुक्र प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of majja & shukra pradoshaja vikaras)

- मज्जशुक्रसमुत्थानामौषधं स्वादुतिक्तकम्।
  अन्नं व्यवायव्यायामौ शुद्धिः काले च मात्रया।। च.सू. 28.28

इन्द्रिय प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of indriya pradoshaja vikaras)

- शान्तिरिन्द्रियजानां तु त्रिमर्मीये प्रवक्ष्यते।

स्नाय्वादि प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of snayu etc. pradoshaja vikaras)

- स्नाय्वादिजानां प्रशमो वक्ष्यते वातरोगिके।। च.सू. 28.29

मल प्रदोषज विकार चिकित्सा

(Treatment of mala pradoshaja vikaras)

- नवेगान्धारणेऽध्याये चिकित्सासंग्रहः कृतः।
  मलजानां विकाराणां सिद्धिश्चोक्ता क्वचित्क्वचित्।।

च.सू. 28.30

(देखे अग्रिम पृ० तालिका)

दोषों का कोष्ठ से शाखादि गमन का हेतु

(Causes for movement of doshas from koshtha to shakha etc.)

- व्यायामादूष्मणस्तैक्ष्ण्याद्धितस्यानवचारणात्।
  कोष्ठाच्छाखा मला यान्ति द्रुतत्वान्मारुतस्य च।। च.सू. 28.31

  - व्यायाम से
  - उष्मा की तीक्ष्णता से
  - अहित आचरण से
  - वायु की द्रुत गति से

दोषों का शाखादि से कोष्ठ गमन का हेतु

(Causes for movement of doshas from shaka etc. to koshtha)

- वृद्ध्या विष्यन्दनात् पाकात् स्रोतोमुखविशोधनात्।
  शाखा मुक्त्वा मलाः कोष्ठं यान्ति वायोश्च निग्रहणात्।।

च.सू. 28.33

धात्वादि	प्रदोषज विकार	चिकित्सा
रस धातु	-अश्रद्धा-अरुचि-आस्यवैरस्य-अरसज्ञता -हृल्लास-गौरव-तन्द्रा-अंगमर्द-ज्वर -तम-पाण्डुत्व-स्रोतोरोध-क्लैब्य-साद -कृशांगता-अग्निनाश-अयथाकाल वली -पालित्य	लंघन
रक्त धातु	-कुष्ठ-विसर्प-पिडका-रक्तपित्त-असृग्दर -गुदपाक-मेढ्रपाक-मुखपाक-प्लीहा-गुल्म -विद्रधि-नीलिका-कामला-व्यंग-पिप्लु - तिलकालक-दद्रु- चर्मदल-श्वित्र-पामा -कोठ-रकमण्डल	विधिशोणितीयाध्याय में वर्णित चिकित्सा विधि
मांस धातु	-अधिमांस-अर्बुद-मांसकील-गलशालूक -गलशुण्डी- पूतिमांस-अलजी-गलगण्ड -गण्डमाला-उपजिह्विका	- संशोधन-शस्त्रकर्म -क्षारकर्म-अग्निकर्म
मेद धातु	-अष्टौ निन्दितीय में वर्णित अष्ट रोग-प्रमेह के पूर्वरूप	-अष्टौ निन्दितीय अध्याय में वर्णित चिकित्सा

धात्वादि	प्रदोषज विकार	चिकित्सा
अस्थि धातु	-अध्यस्थि-अधिदन्त-दन्तभेद-अस्थिभेद -दन्तशूल-अस्थिशूल-वैवर्ण्य- केश-लोम -नख-श्मश्रु के दोष	- पञ्चकर्म चिकित्सा-बस्ति -तिक्त द्रव्य सिद्ध क्षीर -तिक्त द्रव्य सिद्ध सर्पि
मज्जा धातु	- पर्व में पीड़ा-भ्रम-मूर्च्छा-तमः दर्शन- पर्वों में स्थूल मूल वाली अरूंष	-मधुर एवं तिक्त रसात्मक अन्न-व्यवाय-व्यायाम- उचित काल में मात्रानुसार संशोधन
शुक्र धातु	-क्लैब्य-अहर्षण-क्लीब-अल्पायु एवं विरूप सन्तानोत्पत्ति-गर्भपात-गर्भस्राव	- मधुर एवं तिक्त रसात्मक अन्न-व्यवाय-व्यायाम- उचित काल में मात्रानुसार संशोधन
इन्द्रिय	- इन्द्रिय उपघात-इन्द्रिय उपताप	-त्रिमर्मीय अध्याय में वर्णित चिकित्सा
स्नायु आदि	-स्तम्भ-संकोच-खल्ली-ग्रन्थि-स्फुरण-सुप्ति	वातरोग चिकित्सा
मल	-भेद-शोष-प्रदूषण-संग-उत्सर्ग	-नवेगान्धारणीय अध्याय में वर्णित चिकित्सा

- विष्यन्दन से - पाक से
- वृद्धि से
- वायु निग्रहण से
- स्रोतोमुख विशोधन से

परीक्षक के गुण (Qualities of a parikshaka)

- श्रुतं बुद्धिः स्मृतिर्दाक्ष्यं धृतिर्हितनिषेवणम्।
वाग्विशुद्धिः शमो धैर्यमाश्रयन्ति परीक्षकम्।। च.सू. 28.37

श्रुति	बुद्धि	स्मृति	दक्षता	धृति
हित निषेवण	वाक् विशुद्धि	शम	धैर्य	

• • •

29. दशप्राणायतनीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-14

दश प्राणायतन (Ten pranayatanas)

- दशैवायतानान्याहुः प्राणा येषु प्रतिष्ठिताः।
  शंखौ मर्मत्रयं कण्ठो रक्तं शुक्रौजसी गुदम्।। च.सू. 29.3

- शंख द्वय	- मर्म त्रय (-हृदय-बस्ति-शिर)	- कण्ठ
- रक्त	- शुक्र	- ओज
- गुद		

प्राणाभिसर वैद्य (Pranabhirasa Vaidya)

- तानीन्द्रियाणि विज्ञानं चेतनाहेतुमामयान्।
  जानीते यः स वै विद्वान् प्राणाभिसर उच्यते।। च.सू. 29.4

जो प्राणायतनों, इन्द्रियों, विज्ञान, चेतना के हेतु आत्मा और रोगों को जानता है- वह विद्वान् 'प्राणाभिसर वैद्य' है।

भिषक् के द्विविध भेद

(Two types of bhishak - physicians)

- द्विविधास्तु खलु भिषजो भवन्त्यग्निवेश! प्राणानामेकेऽभिसरा हन्तारो रोगाणां, रोगाणामेकेऽभिसरा हन्तारः प्राणानामिति।। च.सू. 29.5

1. प्राणाभिसर वैद्य
2. रोगाभिसर वैद्य

रोगाभिसर वैद्य (Rogabhisara vaidya)

- अतो विपरीता रोगाणामभिसरा हन्तारः प्राणानां, भिषक्छद्म-प्रतिच्छन्नाः कण्टकभूता लोकस्य प्रतिरूपकसधर्माणो राज्ञां प्रमादाच्चरन्ति राष्ट्राणि।। च.सू. 29.8

प्राणाभिसर चिकित्सक के गुणों के विपरीत रोगों को बढ़ाने में सहायक, रोगियों के प्राणों के विनाशक वैद्य के वेश में छिपे हुए समाज के लिए कण्टक सदृश चुभने वाले समाज में कपटवेशधारी बनकर राजाओं के प्रमाद से राष्ट्र में विचरण करते हैं।

• • •

30. अर्थेदशमहामूलीयाध्याय

कुल श्लोक संख्या-90

हृदय (Hrdaya - heart)

- **अर्थे दश महामूलाः समासक्ता महाफलाः।**
  महच्चार्थश्च हृदयं पर्यायैरुच्यते बुधैः।। च.सू. 30.3

  हृदय में महामूल और महाफल वाली दस धमनीयां लगी रहती हैं।

हृदय के पर्याय (Synonyms of hrdaya)

- महत्
- अर्थ

हृदयाश्रित भाव (Factors related to hrdaya)

- षडंग अंग
- विज्ञान
- इन्द्रिय

- इन्द्रियार्थ
- सगुण आत्मा
- चेतस्
- चिन्त्यम्

हृदय का महत्त्व (Importance of hrdaya)

- **गोपानसीनामागारकर्णिकेवार्थचिन्तकैः।।** च.सू. 30.5

  हृदय यह गोपानसियों (rafters) के लिए आगारकर्णिका (beam) के समान है।

हृदय पर उपघात (mild injury) का परिणाम

- मूर्च्छा (fainting)

हृदय भेद (serious injury) का परिणाम

- मरण (death)

हृदय में आश्रित भाव (Factors residing in the hrdaya)

- **तत् परस्यौजसः स्थानं तत्र चैतन्यसंग्रहः।**
  हृदयं महदर्थश्च तस्मादुक्तं चिकित्सकैः।। च.सू. 30.7

- पर ओज
- चैतन्य का संग्रह

ओज का महत्त्व (Importance of ojas)

- येनौजसा वर्तयन्ति प्रीणिताः सर्वदेहिनः।
  यदृते सर्वभूतानां जीवितं नावतिष्ठते।।
  यत् सारमादौ गर्भस्य यत्तद्गर्भरसाद्रसः।
  संवर्तमानं हृदयं समाविशति यत् पुरा।।
  यस्य नाशात्तु नाशोऽस्ति धारि यद्धृदयाश्रितम्।
  यच्छरीररसस्नेहः प्राणा यत्र प्रतिष्ठिताः।।
  तत्फला बहुधा वा ताः फलन्तीव(ति) महाफलाः।

च.सू. 30.9-12

- तृप्त कर प्राणियों को जीवित रखता है
- इसके नाश से जीवन का नाश हो जाता है
- गर्भ के आरम्भ से सार रूप में विद्यमान रहता है
- हृदय के निर्माणकाल से उसमें स्थित रहता है
- शरीरस्थ रस का स्नेह है
- इसमें प्राण प्रतिष्ठित हैं
- इसके स्रोतस् को 'महाफला' कहते हैं।

धमनी, स्रोतस् एवं सिरा की निरुक्ति
(Etymology of dhamani, srotas and sira)

- ध्मानाद्धमन्यः स्रवणात् स्रोतांसि सरणात्सिराः।। च.सू. 30.12

- धमन क्रिया करने वाला – धमनी
- स्रवण क्रिया करने वाला – स्रोतस्
- सरण क्रिया करने वाला – सिरा

हृदय रक्षा के उपाय
(Measures for protecting the hrdaya)

- मन को दुःख देनेवाले विषयों से परिहार
- हृदय, ओज और ओजोवह स्रोतो प्रसादन आहार
- प्रशम
- ज्ञान

षड् मानस अग्र्य (Six manasa agryas)

- प्राणवर्धन में उत्कृष्ट – अहिंसा (non-violence)
- बलवर्धन में उत्कृष्ट – वीर्य (semen with sperm
- बृंहणवर्धन में उत्कृष्ट – विद्या (knowledge)
- नन्दनवर्धन में उत्कृष्ट – इन्द्रिय जय (control over faculties)
- हर्षणवर्धन में उत्कृष्ट – तत्त्वावबोध (understa truth)
- अयन (मार्ग) में उत्कृष्ट – ब्रह्मचर्य (celibacy)

आयुर्वेदविद् के लक्षण (Features of ayurveda vid)

- **तत्रायुर्वेदविदस्तन्त्रस्थानाध्यायप्रश्नानां पृथक्त्वेन वाक्यशो वाक्यार्थशोऽर्थावयवश्च प्रवक्तारो मन्तव्याः।।** च.सू. 30.16

जो अलग-अलग वाक्यों, वाक्यों के अर्थों और अर्थों के अवयवों द्वारा तन्त्र, स्थान, अध्याय एवं उनसे सम्बन्धित प्रश्नों का समाधान के साथ प्रवचन करनेवालों को 'आयुर्वेदविद्' मानना चाहिए।

वाक्यशः (Vakyashah)

- **तन्त्रमार्षं कार्त्स्न्येन यथाम्नायमुच्यमानं वाक्यशो भवत्युक्तम्।।** च.सू. 30.17

आर्षतन्त्र जिस प्रकार आम्नात है उसका उसी प्रकार पूर्णरूप से अध्ययन करना 'वाक्यशः' है।

वाक्यार्थशः (Vakyarthashah)

- **बुद्ध्या सम्यगनुप्रविश्यार्थतत्त्वं वाग्भिर्व्याससमासप्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनय निगमनयुक्ताभिस्त्रिविधशिष्यबुद्धिगम्याभिरुच्यमानं वाक्यार्थशो भवत्युक्तम्।।** च.सू. 30.18

बुद्धि द्वारा अर्थ के तत्त्व को भलीभाँति जानकर कहीं व्यास, कहीं समास से, प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन इनसे युक्त शिष्यों के बुद्धिगम्य वाक्यों द्वारा कहा जाना 'वाक्यार्थशः' है।

अर्थावयवशः (Arthavayavashah)

- **तन्त्रनियतानामर्थदुर्गाणां पुनर्विभावनैरुक्तमर्थावयवशो भवत्युक्तम्।।** च.सू. 30.19

तन्त्र में कहे गये कठिन शब्दों के अर्थों को पुनः कहना अर्थावयव है।

आयु के लक्षण (Features of ayu)

- **तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिर्जीवितमनुबन्धो धारि चेत्येकोऽर्थः।।** च.सू. 30.22

चेतनानुवृत्ति, जीवित, अनुबन्ध और धारि इन शब्दों से आयु का ज्ञान होता है।

आयुर्वेद के लक्षण (Features of ayurveda)

- **स्वलक्षणतः सुखासुखतो हिताहिततः प्रमाणाप्रमाणतश्च; यतश्चायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेदः। तत्रायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि केवलेनोपदेक्ष्यन्ते तन्त्रेण।।** च.सू. 30.23

चतुर्विध आयु के लक्षण (Features of four types of ayu)

आयु के भेद			
सुखायु	दुःखायु	हितायु	अहितायु

मृत्यु शब्द के पर्याय (Synonyms of mrtyu)

- तत्र स्वभावः प्रवृत्तेरुपरमो मरणमनित्यता निरोध इत्येकोऽर्थः।।

च.सू. 30.25

आयुर्वेद शास्त्र का प्रयोजन (Purpose of Ayurveda tantra)

- प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणमातुरस्य विकारप्रशमनं च।।

च.सू. 30.26

  - स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना
  - रूग्ण व्यक्ति के रोग का निवारण

आयुर्वेद का महत्त्व (Importance of Ayurveda)

- सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते, अनादित्वात्, स्वभाव-संसिद्धलक्षणत्वात्, भावस्वभावनित्यत्वाच्च।। च.सू. 30.27

आयुर्वेद अनादि होने से, अपने लक्षण से स्वभावतः सिद्ध होने से, भाव के स्वभाव के नित्य होने के कारण शाश्वत है। इन तीन तथ्यों के आधार पर आयुर्वेद का शाश्वतत्व सिद्ध होता है।

अष्टांग आयुर्वेद (Eight branches of Ayurveda)

- तस्यायुर्वेदस्यांगान्यष्टौ; तद्यथा-कायचिकित्सा, शालाक्यं, शल्यापहर्तृकं, विषगरवैरोधिकप्रशमनं, भूतविद्या, कौमारभृत्यकं, रसायनं, वाजीकरणमिति।। च.सू. 30.28

- कायचिकित्सा (Medicine)
- कौमारभृत्यक् (Pediatrics including obstetrics and gynaecology)
- भूतविद्या (Demonology)
- शालाक्यम् (Medicine and surgery pertaining to supraclavicular diseases)
- शल्यापहर्तृकम् (Surgery)
- विषगरवैरोधिकप्रशमन (Toxicology)
- रसायन (Science dealing with promotion of health and life)
- वाजीकरण (Science dealing with aphrodisiacs)

आयुर्वेद अध्ययन के योग्य (Individuals fit for studying Ayurveda)

- स चाध्येतव्यो ब्राह्मणराजन्यवैश्यैः। तत्रानुग्रहार्थं प्राणिनां ब्राह्मणैः, आरक्षार्थं राजन्यैः, वृत्त्यर्थं वैश्यैः, सामान्यतो वा धर्मार्थकामपरिग्रहार्थं सर्वैः।। च.सू. 30.29
  - आयुर्वेद का अध्ययन ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को करना चाहिये।

    i. प्राणियों के प्रति कृपा करने के लिये ब्राह्मणों को,

ii. क्षत्रियों को आत्मरक्षा तथा सभी प्राणियों की रक्षा के लिये,
iii. वैश्यों को आजीविका के लिये

- सामान्य दृष्टि से धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति के लिये सबका आयुर्वेद का अध्ययन करना चाहिये।

अष्टविध प्रश्न (Eight questions)

– तन्त्र	– तन्त्रार्थ	– स्थान	– स्थानार्थ
– अध्याय	– अध्यायार्थ	– प्रश्न	– प्रश्नार्थ

आयुर्वेद के पर्याय (Synonyms of Ayurveda)

- **तत्रायुर्वेदः शाखा विद्या सूत्रं ज्ञानं शास्त्रं लक्षणं तन्त्रमित्यनर्थान्तरम्।।** च.सू. 30.31

चरक संहिता के आठ स्थान
(Eight sections of Charaka Samhita)

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
1	सूत्रस्थान	30	1952 सूत्र
2	निदानस्थान	8	247 सूत्र
3	विमानस्थान	8	354 सूत्र
4	शारीरस्थान	8	382 सूत्र
5	इन्द्रियस्थान	12	378 सूत्र

क्र.	स्थान	अध्याय	सूत्र संख्या
6	चिकित्सास्थान	30	4904 सूत्र
7	कल्पस्थान	12	378 सूत्र
8	सिद्धिस्थान	12	700 सूत्र
	8 स्थान	120 अध्याय	9295 सूत्र

सूत्रस्थान की निरुक्ति (Etymology of Sutrasthana)

- **चतुष्काणां महार्थानां स्थानेऽस्मिन् संग्रहः कृतः।**
  श्लोकार्थः संग्रहार्थश्च श्लोकस्थानमतः स्मृतम्।। च.सू. 30.46

महत्त्वपूर्ण विषयों वाले उपर्युक्त सात चतुष्कों का इस स्थान में संग्रह किया गया है। श्लोकार्थ और संग्रहार्थ ये दोनों समानार्थक हैं। इस कारण इसका नाम 'श्लोकस्थान' है।

तन्त्र एवं स्थान की निरुक्ति
(Etymology of tantra and sthana)

- **निरुक्तं तन्त्रणात्तन्त्रं, स्थानमर्थप्रतिष्ठया।।** च.सू. 30.70

तन्त्रण के कारण को ही 'तन्त्र' कहते हैं। उपयुक्त अर्थ की प्रतिष्ठा (स्थापना) को 'स्थान' कहते हैं।

सूत्रस्थान का महत्त्व (Importance of Sutrasthana)

- **यथा सुमनसां सूत्रं संग्रहार्थं विधीयते।**
  संग्रहार्थं तथाऽर्थानामृषिणा संग्रहः कृतः।। च.सू. 30.89

जिस प्रकार पुष्पों के संग्रह के लिए सूत्र का उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार विभिन्न अर्थों के संग्रह के लिए महर्षि आत्रेय ने इस सूत्रस्थान की रचना की है। अतः आयुर्वेदविदों को चाहिये कि माला के समान इस सूत्रस्थान को कण्ठस्थ एवम् हृदयस्थ करें।

• • •